विक्रम संवत् 2079/80 ▪ फाल्गुन/चैत्र मास(01) ▪ 01 मार्च 2023 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

संकल्प से सिद्धि

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

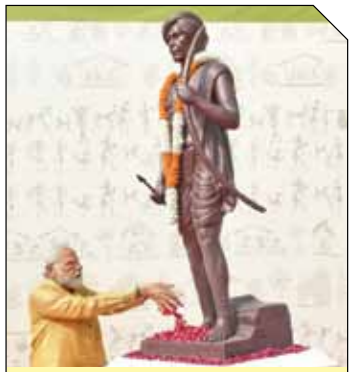

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में साल भर चलने वाले समारोह का उद्घाटन किया।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने ''मोदी शेपिंग ए ग्लोबल ऑर्डर इन फ्लक्स'' पुस्तक का विमोचन किया।

▶ गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने मैहर में मां शारदा शक्तिपीठ मंदिर में पूजा अर्चना की।

▶ गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी और पूज्य गुरुजी को पुष्पांजलि अर्पित की।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने श्रृंगेरी शारदा मठ में पूजा अर्चना की।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने बेलूर चेन्नाकेशव मंदिर में पूजा अर्चना की।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने ''भाजपा को जानो'' अभियान के तहत छात्रों से बातचीत की।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ **संजय गोविन्द खोचे** 04

■ विकास का बजट

कवर स्टोरी : ▶ 05

■ संकल्प से सिद्धि : अब भारत एक आशा है, एक भरोसा है...

05

12

20

■ **संकल्प से सिद्धि :** 12
वित्त मंत्री निर्मला जी और उनकी टीम को इस ऐतिहासिक बजट...
बजट में सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत का संकल्प - विष्णुदत्त शर्मा
बजट में कृषि और सहकारिता को महत्व
मजबूत आधारशिला रखने वाला बजट-अमित शाह

■ **विकास यात्रा:** 16
विकास यात्रा आमजन की जिन्दगी बदलने का अभियान - मुख्यमंत्री
विकास यात्रा, विजय यात्रा के रूप में आगे बढ़ेगी - विष्णुदत्त शर्मा

■ **जिन्दगी बदलने का अभियान :** 19
महाकुंभ कोल समाज की जिदंगी बदलने का अभियान: शिवराज सिंह चौहान

■ **संकल्प से सिद्धि :** 20
सर्वस्पर्शी, सर्वव्यापी, सर्व समावेशी व विकास को समर्पित बजट-शिवराज...
रीचिंग द लास्ट माइल
बजट सभी के विकास की रूपरेखा - जगत प्रकाश नड्डा

■ **संकल्पित प्रयास :** 24
गरीब का जीवन सुखी बनाने हेतु भाजपा की सरकार: अमित शाह

■ **लाड़ली लक्ष्मी योजना :** 25
बदलाव लाई है लाड़ली लक्ष्मी योजना मुख्यमंत्री श्री शिवराज जी

■ **संकल्प से सिद्धि :** 26
बजट में युवाओं को अहमियत...

■ **विश्व रिकार्ड :** 27
विश्व रिकार्ड- जनभागीदारी का अनुपम उदाहरण : शिवराज सिंह चौहान

■ **संकल्प से सिद्धि :** 28
भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का शिलान्यास

■ **मन की बात :** 30
स्वच्छ भारत अभियान ने हमारे देश में जन भागीदारी के मायने ही बदल दिए

■ **पर्व विशेष :** 35
समरसता का संदेश देता होली पर्व

■ **जयंती :** 36
ऊँच-नीच, जात-पात के आधार पर सोचना पाप: डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार

■ **बलिदान दिवस :** 37
जब दंगाई मुस्लिमों के हमले में शहीद हुए विद्यार्थी

■ **शहादत दिवस :** 38
भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव का बलिदान

■ **पुण्यतिथि :** 40
भारत रत्न नानाजी देशमुख

■ **विचार-प्रवाह :** 41
आत्मिक सुख की आवश्यकता

■ मुख्य व्रत-त्यौहार

3. आमलकी, रंगभरी ग्यारस 4. गोविन्द द्वादशी, प्रदोष व्रत 7. स्नानदान व्रत पूर्णिमा, होलिका दहन 8. होली उत्सव, बसंतोत्सव 9. भाई दोज, चित्रगुप्त पूजा 10. गणेश चतुर्थी व्रत 12. रंगपंचमी 13. एकनाथ छठ 14. भानु सप्तमी 15. शीतलाष्टमी, बसोरा 18. पापमोचनी एकादशी व्रत 19. प्रदोष व्रत, वारूणी पर्व 20. शिव चतुर्दशी व्रत 21. स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 22. गुड़ी पड़वा, नवरात्रारम्भ 23. चेटीचंड, सिंधारा दोज, चन्द्रदर्शन 24. गणगौर तीज, सौभाग्य सुंदरी व्रत 25. विनायकी चतुर्थी व्रत 29. दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत 30. श्रीराम नवमी व्रत

■ मुख्य जयंती-दिवस

3. योगेश्वर दयाल जयंती 7. चैतन्य महाप्रभु जयंती 10. सावित्री बाई फुले पुण्यतिथि 15. विश्व उपभोक्ता संरक्षण दिवस 22. राष्ट्रीय शक संवत् 1945 प्रारम्भ, विक्रम संवत् 2080 प्रारम्भ, विश्व जल एवं ज्योतिष दिवस, डॉ. हेडगेवार ज. 23. भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू श. दि. 25. गणेश शंकर विद्यार्थी बलि. दिवस 26. गुरू हरगोविंद पुण्यतिथि 30. संत सुंदरदास ज.

वर्ष-55, अंक : 01, भोपाल, मार्च 2023

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

समृद्धि का आधार धर्म है। इस संबंध में हम पाते हैं कि हमारा आधार धर्म, अभावात्मक नहीं है। हमारे यहां अभाव का नहीं संयम का विचार किया गया है। सादा जीवन का विचार किया गया है, धन पैदा किया तो उसका उपयोग धर्मानुसार करना चाहिए।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

विकास का बजट

यह बजट अंतिम पंक्ति पर खड़े अंतिम व्यक्ति को प्राथमिकता देता हुआ दिखाई दे रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रस्तुत यह बजट समाज के हर वर्ग के सपनों को पूरा करने का माध्यम बनेगा। यह बजट भारत की प्राचीन शैली के उत्थान का निश्चय ही बड़ा कारक बनेगा।

इस बार का केन्द्रिय बजट अपने आप में कई सारी उपलब्धियों की सौगात देता हुआ नजर आ रहा है। यह बजट तेजी से बढ़ते हुए भारत के विशाल और दृढ़ निश्चय से भरे हुए विकास और संस्कारों के संकल्प को पूरा करने के लिए मजबूत आधार प्रदान करेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की वित्त मंत्री जी ने जो बजट पेश किया है वह पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के अंत्योदय के विचार को पूरी तरह से सार्थक करने के प्रयासों की एक और अभिनव कड़ी है।

यह बजट अंतिम पंक्ति पर खड़े अंतिम व्यक्ति को प्राथमिकता देता हुआ दिखाई दे रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रस्तुत यह बजट समाज के हर वर्ग के सपनों को पूरा करने का माध्यम बनेगा। यह बजट भारत की प्राचीन शैली के उत्थान का निश्चय ही बड़ा कारक बनेगा। इसी को ध्यान में रखते हुए करोड़ों विश्वकर्माओं की मेहनत और सृजन के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में यह बजट आजादी के बाद जहां तक मुझे याद आता है, पहली बार अनेकों उत्साहित और प्रोत्साहित करने वाली योजनाऐं लेकर आया है। बजट में इन लोगों को कौशल और अन्य कई तरीके की सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का यह विजन निश्चय ही आने वाले वर्षों में आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम होने वाला है। तात्कालिक रूप से ही विश्वकर्मा कौशल सम्मान करोड़ों-करोड़ लोगों के जीवन में बहुत बड़ा रोजगार का अवसर प्रदान करेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रस्तुत यह केन्द्रिय बजट ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में सहकारिता को विकास का आधार बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी लिए इस बजट में नई प्राथमिक सहकारिता बनाने की महत्वाकांक्षी योजना की घोषणा भी हुई है। जिससे खेती के साथ-साथ दूध और मछली उत्पादन के क्षेत्रों का भी तेजी के साथ विस्तार होगा। जिसका किसानों और मछली पालकों को निश्चय ही फायदा होगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में यह बजट भारत की वैश्विक शक्ति को और ज्यादा बढ़ाने की दिशा में एक और सशक्त कदम साबित होने जा रहा है। इस बजट में डिजिटल एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर की एक बहुत बड़ी योजना है, जो निश्चय ही भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए मील का पत्थर साबित होगी। भारत सदियों से मोटे अनाज का प्रयोग करता आ रहा है। स्वास्थ्य के लिए यह मोटा अनाज बहुत ही गुणकारी होता है। किसानों की आय को बढ़ाने के लिए और स्वास्थ्य में जागरूकता को लाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने पूरे विश्व में मोटे अनाजों को लेकर गंभीर जनजागरूकता के प्रयास किये हैं। इन्ही प्रयासों के परिणाम स्वरूप आज पूरा विश्व इंटरनेशनल मिलेट ईयर मना रहा है। इसी कारण भारत के किसानों की आय पहले से और ज्यादा बढ़ रही है और आगे भी बढ़ेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में इन अनाजों को श्री अन्न के रूप में एक नई पहचान दी गई है। इस केन्द्रिय बजट में भारत की नारी शक्ति के जीवन को सुगम बनाने के लिए भी अनेक कदम उठाये हैं। उज्जवला योजना, जल जीवन मिशन, आवास योजना, स्वच्छ भारत योजना इस तरीके के अनेक कार्यों को और ज्यादा तेजी के साथ बढ़ाये जाने की योजना है। भारत की मातृशक्ति के लिए दी गई विशेष बचत योजना निश्चय ही बहुत सराहनीय है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रस्तुत केन्द्रिय बजट में पर्यावरण की शुद्धता के संबंध में भी विशेष ख्याल रखा गया है। बजट में टेक्नोलॉजी और नई अर्थव्यवस्था पर बहुत ज्यादा ध्यान दिया गया है। 2014 से अगर तुलना करें तो इस बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश पर वृद्धि की दर लगभग 400 प्रतिशत से कहीं ज्यादा है। जो अपने आप में एक रिकार्ड है। इसके फलस्वरूप इंफ्रास्ट्रक्चर पर लगभग दस लाख करोड़ से ज्यादा का निवेश होगा, स्वभाविक है इससे भारत के विकास को तेज गति और नई ऊर्जा मिलेगी, रोजगार के कई अवसर पैदा होंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रस्तुत इस बजट में व्यापार करने की सुगमता को और ज्यादा सुगम किया गया है। यह बजट भारत की तरक्की को एक नया आयाम देगा। अगर संपूर्णता की दृष्टि से देखें तो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रस्तुत यह बजट देश को तेज गति से आगे बढ़ाने वाला, भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती देने वाला बजट कहा जायेगा।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में म.प्र. सरकार ने कई विकास के कार्य किये हैं। इसी को लेकर पूरे प्रदेश में विकास यात्रा का आयोजन किया गया है। जबसे म.प्र. में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है तब से विकास के कार्यों का प्रभाव प्रदेश में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भाजपा सरकार के पहले म.प्र. में मात्र साढ़े सात लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होती थी, गौरव का विषय है कि अब यह बढ़ कर 45 लाख हैक्टेयर हो गया है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में म.प्र. सरकार का यह प्रयास है कि इस सिंचाई क्षमता को 65 लाख हैक्टेयर तक बढ़ा दिया जाए। इससे निश्चित ही प्रदेश के हर खेत में पानी मिलेगा और हर खेत में फसल का उत्पादन बढ़ जाएगा। जिससे किसानों के आय में वृद्धि होगी। म.प्र. में जल जीवन मिशन में अब तक लगभग 54 लाख घरों में नलों के कनेक्शन दिये जा चुके हैं। यह कार्य लगातार तेज गति से चल रहा है। इसी तरह के विकास के, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सदभाव, गरीब कल्याण, बच्चों की पढ़ाई और रोजगार व स्वरोजगार के अवसर के क्षेत्र में म.प्र. की सरकार और संगठन लगातार काम कर रहे हैं। निश्चय ही इसका परिणाम आने वाले समय में अत्यंत उत्साह जनक होगा। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

संकल्प से सिद्धि

अब भारत एक आशा है, एक भरोसा है

पूरी दुनिया भारत की तरफ बड़ी आशा भरी नजरों से देख रही है...

सबसे पहले मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद करता हूं और ये मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे पहले भी कई बार राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद करने का अवसर मिला है। लेकिन इस बार मैं धन्यवाद के साथ-साथ राष्ट्रपति महोदया जी का अभिनंदन भी करना चाहता हूं। अपनी विजनरी भाषण में राष्ट्रपति जी ने हम सबका और करोड़ो देशवासियों का मार्गदर्शन किया है। गणतंत्र के मुखिया रूप में उनकी उपस्थिति ऐतिहासिक भी है और देश की कोटि-कोटि बहन-बेटियों के लिए बहुत बड़ा प्रेरणा का अवसर भी है।

आदरणीय राष्ट्रपति महोदया ने आदिवासी समाज का गौरव तो बढ़ाया ही है लेकिन आज आजादी के इतने सालों के बाद आदिवासी समाज में जो गौरव की अनुभूति हो रही है, उनका जो आत्मविश्वास बढ़ा है और इसके लिए ये सदन भी और देश भी उनका आभारी होगा। राष्ट्रपति जी के भाषण में 'संकल्प से सिद्धि तक' यात्रा का बहुत बढ़िया तरीके से एक खाका खींचा गया एक प्रकार से देश को निराशा में डूबे हुए कुछ लोग इस देश की प्रगति को स्वीकार ही नहीं कर पा रहे हैं। उन्हें भारत के लोगों की उपलब्धियां नहीं दिखती है। अरे 140 करोड़ देशवासियों के पुरुषार्थों पर आस्था का परिणाम है, जिसके कारण आज दुनिया में डंका बजना शुरू हुआ है। उन्हें भारत के लोगों के पुरुषार्थ परिश्रम से प्राप्त उपलब्धियां उनको नजर नहीं आ रही है।

अकाउंट भी दिया गया, इंस्पिरेशन भी दिया गया है। सभी माननीय सदस्यों ने इस चर्चा में हिस्सा लिया, हर किसी ने अपने-अपने आंकड़े दिए, अपने-अपने तर्क दिए और अपनी रुचि, प्रवृत्ति के अनुसार सबने अपनी बातें रखी और जब इन बातों को गौर से सुनते हैं, उसे समझने का जब प्रयास करते हैं तो ये भी ध्यान में आता है कि किसकी कितनी क्षमता है, किसकी कितनी योग्यता है, किसकी कितनी समझ है और किसका क्या इरादा है। ये सारी बातें प्रकट होती ही हैं। और देश भली-भांति तरीके से उसका मूल्यांकन भी करता है। लेकिन मैं देख रहा था कुछ लोगों के भाषण के बाद पूरा Ecosystem, समर्थक उछल रहा था और कुछ लोग तो खुश होकर के कह रहे थे, ये हुई न बात। शायद नींद भी अच्छी आई होगी, शायद आज उठ भी नहीं पाए होंगे। और ऐसे लोगों के लिए कहा गया है, बहुत अच्छे ढंग से कहा गया है-

ये कह-कहकर हम दिल को
बहला रहे हैं,
ये कह-कहकर के हम दिल को

बहला रहे हैं, वो अब चल चुके हैं, वो अब चल चुके हैं, वो अब आ रहे हैं।

जब राष्ट्रपति जी का भाषण हो रहा था, कुछ लोग कन्नी भी काट गए और एक बड़े नेता महामहिम राष्ट्रपति जी का अपमान भी कर चुके हैं। जनजातीय समुदाय के प्रति नफरत भी दिखाई दी है और हमारे जनजातीय समाज के प्रति उनकी सोच क्या है। लेकिन जब इस प्रकार की बातें टीवी के सामने कही गई तो भीतर पड़ा हुआ जो नफरत का भाव था जो सच वो बाहर आकर ही रहा गया। ये खुशी है, ठीक है बाद में चिट्ठी लिखकर के बचने की कोशिश तो की गई है।

जब राष्ट्रपति जी के भाषण पर चर्चा मैं सुन रहा था, तो मुझे लगा कि बहुत सी बातों को मौन रहकर भी स्वीकार किया गया है। यानी एक प्रकार से सबके भाषण में सुनता था, तब लगा कि राष्ट्रपति जी के भाषण के प्रति किसी को एतराज नहीं है, किसी ने उसकी आलोचना नहीं की। भाषण की हर बात, अब देखिए क्या कहा है राष्ट्रपति जी ने मैं उन्हीं के शब्द को क्वोट करता हूं। राष्ट्रपति जी ने अपने भाषण में कहा था, **जो भारत कभी अपनी अधिकांश समस्याओं के समाधान के लिए दूसरों पर निर्भर था, वही आज दुनिया की समस्याओं के समाधान का माध्यम बन रहा है।** राष्ट्रपति जी ने यह भी कहा था, **जिन मूल सुविधाओं के लिए देश की एक बड़ी आबादी ने दशकों तक इंतजार किया, वे इन वर्षों में उसे मिली है। बड़े-बड़े घोटालों, सरकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार की जिन समस्याओं से देश मुक्ति चाहता था, वह मुक्ति अब देश को मिल रही है। पॉलिसी-पैरालिसिस की चर्चा से बाहर आकर आज देश और देश की पहचान, तेज विकास और दूरगामी दृष्टि से लिए गए फैसलों के लिए हो रही है।** ये पैराग्राफ जो मैं पढ़ रहा हूं वो राष्ट्रपति जी भाषण के पैराग्राफ को मैं क्वोट कर रहा हूं। और मुझे आशंका था कि ऐसी-ऐसी बातों पर यहां जरूर एतराज करने वाले तो कुछ लोग निकलेंगे, वो विरोध करेंगे कि ऐसा कैसे बोल सकते हैं राष्ट्रपति जी। लेकिन मुझे खुशी है किसी ने विरोध नहीं किया सबने स्वीकार किया, सबने स्वीकार किया। **मैं 140 करोड़ देशवासियों का आभारी हूं कि सबके प्रयास के परिणाम आज इन सारी बातों को पूरे सदन में स्वीकृति मिली है। इससे बड़ा गौरव का विषय क्या होगा।**

आज दुनिया की हर विश्वसनीय संस्था, सारे एक्सपर्ट्स जो वैश्विक प्रभावों को बहुत गहराई से अध्ययन करते हैं। जो भविष्य का अच्छे से अनुमान भी लगा सकते हैं। उन सबको आज भारत के प्रति बहुत आशा है, विश्वास है और बहुत एक मात्रा में उमंग भी है।

और आखिर ये सब क्यों? ऐसे ही तो नहीं है। आज पूरी दुनिया भारत की तरफ इस प्रकार से बड़ी आशा की नजरों से क्यों देख रही है। इसके पीछे कारण है। इसका उत्तर छिपा है भारत में आई स्थिरता में, भारत की वैश्विक साख में, भारत के बढ़ते सामर्थ्य में और भारत में बन रही नई संभावनाओं में है।

ये नहीं भूलना चाहिए कि आज राष्ट्र के रूप में गौरवपूर्ण अवसर हमारे सामने खड़े हैं, गौरव के क्षण हम जी रहे हैं। राष्ट्रपति जी के पूरे भाषण में जो बातें हैं वो 140 करोड़ देशवासियों के सेलिब्रेशन का अवसर है, देश ने सेलिब्रेट किया है।

100 साल में आई हुई ये भयंकर बीमारी, महामारी दूसरी तरफ युद्ध की स्थिति, बंटा हुआ विश्व इस स्थिति में भी, इस संकट के माहौल में भी देश को जिस प्रकार से संभाला गया है, देश जिस प्रकार से संभला है इससे पूरा देश आत्मविश्वास से भर रहा है, गौरव से भर रहा है।

चुनौतियों के बिना जीवन नहीं होता है, चुनौतियां तो आती हैं। लेकिन चुनौतियों से ज्यादा सामर्थ्यवान है 140 करोड़ देशवासियों का जज्बा। 140 करोड़ देशवासियों का सामर्थ्य चुनौतियों से भी ज्यादा मजबूत है, बड़ा है और सामर्थ्य से भरा हुआ है। इतनी बड़ी भयंकर महामारी, बंटा हुआ विश्व युद्ध के कारण हो रहे विनाश, अनेकों देशों में अस्थिरता का माहौल है। कई देशों में भीषण महंगाई है, बेरोजगारी, खाने-पीने का संकट और हमारे अड़ोस-पड़ोस में भी जिस प्रकार से हालत बनी हुई है, ऐसी स्थिति में कौन हिन्दुस्तानी इस बात पर गर्व नहीं करेगा कि ऐसे समय में भी **देश दुनिया की 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बना है।** पूरे विश्व में भारत को लेकर के पॉजिटिविटी है, एक आशा है, भरोसा है। और ये भी खुशी की बात है कि आज भारत को विश्व के समृद्ध देश ऐसे जी-20 समूह की अध्यक्षता का अवसर भी मिला है।

ये देश के लिए गर्व की बात है। 140 करोड़ देशवासियों के लिए गौरव की बात है। लेकिन मुझे लगता है, पहले मुझे नहीं लगता था, लेकिन अभी लग रहा है शायद इससे भी कुछ लोगों को दुख हो रहा है। 140 करोड़ देशवासियों में किसी को दुख नहीं हो सकता है। वो आत्मनिरीक्षण करें वो कौन लोग हैं जिसको इसका भी दुःख हो रहा है।

आज दुनिया की हर विश्वसनीय संस्था, सारे एक्सपर्ट्स जो वैश्विक प्रभावों को बहुत गहराई से अध्ययन करते हैं। जो भविष्य का अच्छे से अनुमान भी लगा सकते हैं। उन सबको आज भारत के प्रति बहुत आशा है, विश्वास है और बहुत एक मात्रा में उमंग भी है। और आखिर ये सब क्यों? ऐसे ही तो नहीं है। आज पूरी दुनिया भारत की तरफ इस प्रकार से बड़ी आशा की नजरों से क्यों देख रही है। इसके पीछे कारण है। इसका उत्तर छिपा है भारत में आई स्थिरता में, भारत की वैश्विक साख में, भारत के बढ़ते सामर्थ्य में और भारत में बन रही नई संभावनाओं में है।

हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में जो बातें हो रही हैं। उसी को मैं अगर शब्दबद्ध करूं और कुछ बातें उदाहरण से समझाने की कोशिश करुं। अब आप देखिए भारत में एक दो तीन दशक अस्थिरता के रहे हैं। आज स्थिरता है, political stability है, Stable Government भी है और Decisive Government है, और उसका भरोसा स्वाभाविक होता है। **एक निर्णायक सरकार, एक पूर्ण बहुमत से चलने वाली सरकार वो राष्ट्र हित में फैसले लेने का सामर्थ्य रखती है। और ये वो सरकार है Reform out of compulsion नहीं Reform out of conviction हो रही है। और हम इस मार्ग पर हटने वाले नहीं है चलते रहेंगे। देश को समय की मांग के अनुसार जो चाहिए वो देते रहेंगे।**

एक और उदाहरण की तरफ मैं जाना चाहूंगा। इस कोरोना काल में मेड इन इंडिया वैक्सीन तैयार हुई। भारत ने दुनिया का सबसे

बड़ा वैक्सीनेशन अभियान चलाया और इतना ही नहीं अपने करोड़ों नागरिकों को मुफ्त वैक्सीन के टीके लगाए। इतना ही नहीं 150 से ज्यादा देशों को इस संकट के समय हमने जहां जरूरत थी, वहां दवाई पहुंचाई, जहां जरूरत थी, वहां वैक्सीन पहुंचाई। और आज विश्व के कई देश हैं, जो भारत के विषय में इस बात पर बड़े गौरव से विश्व के मंच पर धन्यवाद करते हैं, भारत का गौरव गान करते हैं। उसी प्रकार से तीसरे एक पहलू की तरफ ध्यान दें। इसी संकट काल में आज भारत का digital infrastructure जिस तेजी से digital infrastructure ने अपनी ताकत दिखाई है। एक आधुनिकता की तरफ बदलाव किया है। पूरा विश्व इसका अध्ययन कर रहा है। मैं पिछले दिनों जी-20 समिट में बाली में था। Digital India की चारों तरफ वाहवाही हो रही थी। और बहुत curiosity थी कि देश कैसे कर रहा है? कोरोना काल में दुनिया के बड़े-बड़े देश, समृद्ध देश अपने नागरिकों को आर्थिक मदद पहुंचाना चाहते थे। नोटें छापते थे, बांटते थे, लेकिन बांट नहीं पाते थे। ये देश है जो एक फ्रिक्शन ऑफ सेकंड में लाखों करोड़ों रुपये देशवासियों के खाते में जमा करवा देता है। हजारों करोड़ रुपये ट्रांसफर हो जाते हैं। एक समय था, छोटी-छोटी टेक्नोलॉजी के लिए देश तरसता था। **आज देश में बहुत बड़ा फर्क महसूस हो रहा है।** टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में देश बड़ी ताकत के साथ आगे बढ़ रहा है। CoWin दुनिया के लोग अपने वैक्सीनेशन का सर्टिफिकेट भी दे नहीं पाते थे जी। आज वैक्सीन का हमारे मोबाइल फोन पर हमारा सर्टिफिकेट दूसरी सेकंड पर अवेलेबल है। ये ताकत हमनें दिखाई है।

भारत में नई संभावनाएं हैं। दुनिया को सशक्त value और supply chain उसमें आज पूरी दुनिया ने इस कोरोना कालखंड ने supply chain के मुद्दे पर दुनिया को हिला कर रख दिया है। आज भारत उस कमी को पूरा करने की ताकत के साथ आगे बढ़ रहा है। कईयों को ये बात समझने में बहुत देर लग जाएगी। भारत आज इसी दिशा में एक manufacturing hub के रूप में उभर रहा है और दुनिया भारत की इस समृद्धि में अपनी समृद्धि देख रही है।

निराशा में डूबे हुए कुछ लोग इस देश की प्रगति को स्वीकार ही नहीं कर पा रहे हैं। उन्हें भारत के लोगों की उपलब्धियां नहीं दिखती है। अरे 140 करोड़ देशवासियों के पुरुषार्थों पर आस्था का परिणाम है, जिसके कारण आज दुनिया में डंका बजना शुरू हुआ है। उन्हें भारत के लोगों के पुरुषार्थ परिश्रम से प्राप्त उपलब्धियां उनको नजर नहीं आ रही है।

पिछले 9 वर्ष में भारत में 90 हजार स्टार्टअप्स और आज स्टार्टअप्स की दुनिया में हम दुनिया में तीसरे नंबर पर पहुंच चुके हैं। एक बहुत बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम आज देश के Tier2, Tier 3 cities में भी पहुंच चुका है। हिन्दुस्तान के हर कोने में पहुंचा है। भारत के युवा सामर्थ्य की पहचान बनता जा रहा है।

इतने कम समय में और कोरोना के विकट कालखंड में 108 यूनिकॉर्न बने हैं। और एक यूनिकॉर्न का मतलब होता है, उसकी वैल्यू 6-7 हजार करोड़ से ज्यादा होती है। ये इस देश के नौजवानों ने करके दिखाया है।

आज भारत दुनिया में mobile manufacturing में दुनिया में दूसरे बड़ा देश बन गया है। घरेलू विमान यात्री domestic Air Traffic पर हैं। आज विश्व में हम तीसरे नंबर पर पहुंच चुके हैं। Energy Consumption को प्रगति का एक मानदंड माना जाता है। आज भारत Energy consumption में दुनिया में consumer के रूप में तीसरे नंबर पर हम पहुंच चुके हैं। Renewable Energy की capacity में हम दुनिया में चौथे नंबर पर पहुंच चुके हैं। स्पोर्ट्स कभी हमारी कोई पूछ नहीं होती थी, कोई पूछता नहीं था। आज स्पोर्ट्स की दुनिया में हर स्तर पर भारत के खिलाड़ी अपना रुतबा दिखा रहे हैं। अपना सामर्थ्य दिखा रहे हैं।

Education समेत हर क्षेत्र में आज भारत आगे बढ़ रहा है। पहली बार गर्व होगा, पहली बार higher education में enrolment वालों की संख्या चार करोड़ से ज्यादा हो गई है। इतना ही नहीं, बेटियों की भी भागीदारी बराबर होती जा रही है। देश में इंजीनियरिंग हो, मेडिकल कॉलेज हो, professional colleges हों उसकी संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। स्पोर्ट्स के अंदर भारत का परचम ओलंपिक हो, कॉमनवेल्थ हो, हर जगह पर हमारे बेटे, हमारी बेटियों ने शानदार प्रदर्शन किया है।

किसी भी भारतीय को ऐसी अनेक बातें मैं गिना सकता हूँ। राष्ट्रपति जी ने अपने भाषण में कई बातें कही हैं। देश में हर स्तर पर, हर क्षेत्र में, हर सोच में, आशा ही आशा नजर आ रही है। एक विश्वास से भरा हुआ देश है। सपने और संकल्प लेकर के चलने वाला देश है। लेकिन यहाँ कुछ लोग ऐसे निराशा में डूबे हैं, काका हाथरसी ने एक बड़ी मजेदार बात कही थी। काका हाथरसी ने कहा था-**आगा-पीछा देखकर क्यों होते गमगीन, जैसी जिसकी भावना वैसा दीखे सीन।**

आखिर ये निराशा भी ऐसी नहीं आई है, इसके पीछे एक कारण है। एक तो जनता का हुकुम, बार-बार हुकुम, लेकिन साथ-साथ इस निराशा के पीछे जो अंतर्मन में पड़ी हुई चीज है, जो चैन से सोने नहीं देती है, वो क्या है, पिछले 10 साल में, 2014 के पहले 2004 से 2014, भारत की अर्थव्यवस्था खस्ताहाल हो गई। निराशा नहीं होगी तो क्या होगा? 10 साल में महंगाई डबल डिजिट रही, और इसलिए कुछ अगर अच्छा होता है तो निराशा और उभर करके आती है और जिन्होंने बेरोजगारी दूर करने के वादे किए थे।

एक बार जंगल में दो नौजवान शिकार करने के लिए गए और वो गाड़ी में अपनी बंदूक-वंदूक नीचे उतार करके थोड़ा टहलने लगे। उन्होंने सोचा कि थोड़ा अभी आगे चलना है तो थोड़ा हाथ-पैर ठीक कर लें। लेकिन गए थे तो बाघ का शिकार करने के लिए और उन्होंने देखा कि आगे जाएंगे तो बाघ मिलेगा। लेकिन हुआ ये कि वहीं पर बाघ दिखाई दिया, अभी नीचे उतरे थे। अपनी गाड़ी में बंदूक-वंदूक वहीं पड़ी थी। बाघ दिखा, अब करें क्या? तो उन्होंने licence दिखाया कि मेरे पास बंदूक का licence है। इन्होंने भी बेरोजगारी दूर करने के नाम पर कानून दिखाया कि कानून बना दिया है जी। अरे देखो, कानून बना दिया है। यही इनके तरीके हैं, पल्ला झाड़ दिया। 2004 से 2014, आजादी के इतिहास में सबसे घोटालों का दशक रहा, सबसे घोटालों का। वही 10 साल, UPA के वो 10 साल, कश्मीर से कन्याकुमारी, भारत के हर कोने में आतंकवादी हमलों का सिलसिला चलता रहा, 10 साल। हर नागरिक असुरक्षित था, चारों तरफ यही सूचना रहती थी कि कोई अंजानी चीज को हाथ मत लगाना। अंजानी चीज से दूर रहना, वहीं खबरें रहती थी। 10 साल में जम्मू-कश्मीर से लेकर नॉर्थ ईस्ट तक हिंसा ही हिंसा देश उनका शिकार हो गया था। उन 10 साल में, भारत की आवाज ग्लोबल प्लैटफॉर्म पर इतनी कमजोर थी कि दुनिया सुनने तक तैयार नहीं थी।

इनकी निराशा का कारण ये भी है आज जब देश की क्षमता का परिचय हो रहा है, 140 करोड़ देशवासियों का सामर्थ्य खिल रहा है, खुलकर के सामने आ रहा है। लेकिन देश का सामर्थ्य तो पहले भी था। लेकिन 2004

से लेकर के 2014 तक इन्होंने वो अवसर गंवा दिया। और UPA की पहचान बन गई हर मौके को मुसीबत में पलट दिया। जब technology information का युग बड़ी तेजी से बढ़ रहा था, उछल रहा था, उसी समय ये 2जी में फंसे रहे, मौका मुसीबत में। सिविल न्यूक्लियर डील हुआ, जब सिविल न्यूक्लियर डील की चर्चा थी, तब ये कैश फॉर वोट में फंसे रहे। ये खेल चले।

2010 में, कॉमनवेल्थ गेम्स हुए, भारत को दुनिया के सामने, भारत के युवा सामर्थ्य को प्रस्तुत करना एक बहुत बड़ा अवसर था। लेकिन फिर मौका मुसीबत में और CWG घोटाले में पूरा देश दुनिया में बदनाम हो गया।

ऊर्जा का किसी भी देश के विकास में अपना एक महात्म्य होता है। और जब दुनिया में भारत की ऊर्जा शक्ति के उभार की दिशा में चर्चा की जरूरत थी, इस सदी के दूसरे दशक में हिन्दुस्तान की चर्चा ब्लैकआउट के नाते हुई। पूरे विश्व में ब्लैकआउट के वो दिन चर्चा के केंद्र में आ गए। कोयला घोटाला चर्चा में आ गया।

देश पर इतने आतंकी हमले हुए। 2008 के हमलों को कोई भूल नहीं सकता है। लेकिन आतंकवाद पर सीना तानकर आंख में आंख मिलाकर के हमले करने का सामर्थ्य नहीं था, उसकी चुनौती को चुनौती देने की ताकत नहीं थी और उसके कारण आतंकवादियों के हौसले बुलंद होते गए, और पूरे देश में दस साल तक खून बहता रहा, मेरे देश के निर्दोष लोगों का, वो दिन रहे थे।

जब एलओसी, एलएसी भारत के सामर्थ्य की ताकत का अवसर रहता था, उस समय डिफेंस डील को ले करके हेलिकॉप्टर घोटाले, और सत्ता को कंट्रोल करने वाले लोगों के नाम उसमें चिह्नित हो गए।

जब देश के लिए जरूरत थी और निराशा के मूल में ये चीजें पड़ी हुई हैं, सब उभर करके आ रहा है।

इस बात को हिंदुस्तान हर पल याद रखेगा कि 2014 के पहले का जो दशक था, The Lost Decade के रूप में जाना जाएगा और इस बात को इंकार नहीं कर सकते कि 2030 का जो दशक है, ये India's Decade है पूरे विश्व के लिए।

लोकतंत्र में आलोचना का बहुत महत्व मैं मानता हूं। और मैं हमेशा मानता हूं कि भारत जो कि Mother of democracy है, सदियों से हमारे यहां लोकतंत्र हमारी रगों में पनपा हुआ है। और इसलिए मैं हमेशा मानता हूं कि आलोचना एक प्रकार से लोकतंत्र की मजबूती के लिए, लोकतंत्र के संवर्धन के लिए, लोकतंत्र के स्पिरिट के लिए, आलोचना एक शुद्धि यग्न है। उस रूप में हम आलोचना को देखने वाले हैं। लेकिन दुर्भाग्य से बहुत दिनों से मैं इंतजार कर रहा हूं कोई तो मेहनत करके आएगा, कोई तो एनालिसिस करे तो कोई आलोचना करेगा ताकि देश को कुछ लाभ हो। लेकिन 9 साल आलोचना ने आरोपों में गंवा दिए इन्होंने। सिवाय आरोप, गाली-गलौच, कुछ भी बोल दो, इसके सिवाय कुछ नहीं किया। गलत आरोप और हाल ये चुनाव हार जाओ-ईवीएम खराब, दे दो गाली, चुनाव हार जाओ-चुनाव आयोग को गाली दे दो, क्या तरीका है। अगर कोर्ट में फैसला पक्ष में नहीं आया तो सुप्रीम कोर्ट को गाली दे दो, उसकी आलोचना कर दो।

मुझे विश्वास है भविष्य में कांग्रेस की बर्बादी पर सिर्फ Harvard नहीं, बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में अध्ययन होना ही होना है और डूबाने वाले लोगों पर भी होने वाला है।

इस प्रकार के लोगों के लिए दुष्यंत कुमार ने बहुत बढ़िया बात कही है और दुष्यंत कुमार ने जो कहा है बहुत फिट बैठता है उन्होंने कहा है:- 'तुम्हारे पाँव के नीचे, कोई जमीन नहीं, कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं'।

अगर भ्रष्टाचार की जांच हो रही है तो जांच एजेंसियों को गाली दो। अगर सेना पराक्रम करे, सेना अपना शौर्य दिखाए और वो narrative देश के जन-जन के अंदर एक नया विश्वास पैदा करें तो सेना की आलोचना करो, सेना को गाली दो, सेना पर आरोप करो।

कभी आर्थिक, देश की प्रगति की खबरें आएं, आर्थिक प्रगति की चर्चा हो, विश्व के सारे संस्थान भारत का आर्थिक गौरवगान करें तो यहां से निकलो, आरबीआई को गाली दो, भारत के आर्थिक संस्थानों को गाली दो।

पिछले नौ साल हमने देखा है कुछ लोगों की bankruptcy को देखा है। एक constructive criticism की जगह compulsive critics ने ले ली है और compulsive critics इसी में डूबे हुए हैं, खोए हुए हैं।

सदन में भ्रष्टाचार की जांच करने वाली एजेंसियों के बारे में बहुत कुछ कहा गया और मैंने देखा कि बहुत सारे विपक्ष के लोग इस विषय में सुर में सुर मिला रहे थे। मिले मेरा-तेरा सुर।

मुझे लगता था देश की जनता देश के चुनाव के नतीजें ऐसे लोगों को जरूर एक मंच पर लाएंगे। लेकिन वो तो हुआ नहीं, लेकिन इन लोगों को ईडी का धन्यवाद करना चाहिए कि ईडी के कारण ये लोग एक मंच पर आए हैं। ईडी ने इन लोगों को एक मंच पर ला दिया है और इसलिए जो काम देश के मतदाता नहीं कर पाए।

मैं कई बार सुन रहा हूँ, यहां कुछ लोगों को Harvard Study का बड़ा क्रेज है। कोरोना काल में ऐसा ही कहा गया था और कांग्रेस ने कहा था कि भारत की बर्बादी पर Harvard में Case Study होगी, ऐसा कहा था और कल फिर सदन में Harvard University में Study की बात कल फिर हुई, लेकिन बीते वर्षों में Harvard में एक बहुत बढ़िया Study हुई है, बहुत important study हुई है। और वो स्टडी है, उसका टॉपिक क्या था मैं जरूर सदन को बताना चाहूंगा और ये स्टडी हो चुकी है। स्टडी है The Rise and Decline of India's Congress Party, ये स्टडी हो चुका है और मुझे विश्वास है।

मुझे विश्वास है भविष्य में कांग्रेस की बर्बादी पर सिर्फ Harvard नहीं, बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में अध्ययन होना ही होना है और डूबाने वाले लोगों पर भी होने वाला है।

इस प्रकार के लोगों के लिए दुष्यंत कुमार ने बहुत बढ़िया बात कही है और दुष्यंत कुमार ने जो कहा है बहुत फिट बैठता है उन्होंने कहा है:-

'तुम्हारे पाँव के नीचे, कोई जमीन नहीं,
कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं'।

ये लोग बिना सिर-पैर की बात करने के आदी होने के कारण उनको ये भी याद नहीं रहता है वो खुद का कितना contradiction करते हैं। कभी एक बात-कभी दूसरी बात, कभी एक तरफ, कभी दूसरी तरफ हो सकता है वो आत्मचिंतन करके खुद के अंदर जो

विरोधाभास है उसको भी तो ठीक करेंगे। अब 2014 से ये लगातार कोस रहे हैं हर मौके पर कोस रहे हैं भारत कमजोर हो रहा है, भारत की कोई सुनने को तैयार नहीं है, भारत का दुनिया में कोई वजूद ही नहीं रहा न जाने क्या- क्या कहा और अब क्या कह रहे हैं। अब कह रहे हैं कि भारत इतना मजबूत हो गया है कि दूसरे देशों को धमकाकर फैसले करवा रहा है। अरे पहले यह तो तय करो भई कि भारत कमजोर हुआ है कि मजबूत हुआ है।

कोई भी जीवंत संगठन होता है, अगर जीवंत व्यवस्था होती है जो जमीन से जुड़ी हुई व्यवस्था होती है वे जनता-जनार्दन में क्या चलता है लोगों के अंदर उसका चिंतन करता है, उससे कुछ सीखने की कोशिश करता है और अपनी राह भी समय रहते हुए बदलता रहता है। लेकिन जो अहंकार में डूबे होते है, जो बस सब कुछ हम ही को ज्ञान है सब कुछ हमारा ही सही है ऐसी जो सोच में जीते हैं, उनको लगता है कि मोदी को गाली देकर ही हमारा रास्ता निकलेगा। मोदी पर झूठे अनाप-शनाप कीचड़ निकालकर ही रास्ता निकलेगा। अब 22 साल बीत गए वो गलतफहमी पालकर के बैठे हुए है।

मोदी पे भरोसा अखबार की सुर्खियों से पैदा नहीं हुआ है। मोदी पे ये भरोसा टीवी पर चमकते चेहरों से नहीं हुआ है। जीवन खपा दिया है पल-पल खपा दिए है। देश के लोगों के लिए खपा दिए हैं, देश के उज्जवल भविष्य के लिए खपा दिए है।

जो देशवासियों का मोदी पर भरोसा है, ये इनकी समझ के दायरे से बाहर है और समझ के दायरे से भी काफी ऊपर है। क्या ये झूठे आरोप लगाने वालों पर मुफ्त राशन प्राप्त करने वाले मेरे देश के 80 करोड़ देशवासी क्या कभी उन पर भरोसा करेंगे क्या।

वन नेशन वन राशन कार्ड देशभर में कहीं पर भी गरीब से गरीब को भी अब राशन मिल जाता है। वो आपकी झूठी बातों पर, आपके गलत गलीच आरोपों पर कैसे भरोसा करेगा।

जिस किसान के खाते में साल में 3 बार पीएम किसान सम्मान निधि के 11 करोड़ किसानों के खाते में पैसे जमा होते हैं, वो आपकी गालियां, आपके झूठे आरोपों पर विश्वास कैसे करेगा।

जो कल फुटपाथ पर जिंदगी जीने के लिए मजबूर थे, जो झुग्गी-झोपड़ी में जिंदगी बसर करते थे, ऐसे 3 करोड़ से ज्यादा लोगों को पक्के घर मिले हैं उनको तुम्हारी ये गालियां, ये तुम्हारी झूठी बातें क्यों वो भरोसा करेगा अध्यक्ष जी।

9 करोड़ लोगों को मुफ्त गैस के कनेक्शन मिला है वो आपके झूठ को कैसे स्वीकार करेगा। 11 करोड़ बहनों को इज्जत घर मिला है, शौचालय मिला है वो आपके झूठ को कैसे स्वीकार करेगा।

आजादी के 75 साल बीत गए 8 करोड़ परिवारों को आज नल से जल मिला है, वो माताएं तुम्हारे झूठ को कैसे स्वीकार करेगी, तुम्हारी गलतियों को, गालियों को कैसे स्वीकार करेगी। आयुष्मान भारत योजना से 2 करोड़ परिवारों को मदद पहुंची है जिंदगी बच गई है उनकी मुसीबत के समय मोदी काम आया है, तुम्हारी गालियों को वो कैसे स्वीकार करेगा, कैसे स्वीकार करेगा।

आपकी गालियां, आपके आरोपों को इन कोटि-कोटि भारतीयों से होकर के गुजरना पड़ेगा, जिनको दशकों तक मुसीबतों में जिंदगी जीने के लिए तुमने मजबूर किया था।

कुछ लोग अपने लिए, अपने परिवार के लिए बहुत कुछ तबाह करने पर लगे हुए हैं। अपने लिए, अपने परिवार के लिए जी रहे हैं मोदी तो 140 करोड़ देशवासियों के परिवार का सदस्य है।

140 करोड़ देशवासियों के आशीर्वाद ये मेरा सबसे बड़ा सुरक्षा कवच है। और गालियों के शस्त्र से, झूठ के शस्त्र-अस्त्रों से इस सुरक्षा कवच को तुम कभी भेद नहीं सकते हो। वो विश्वास का सुरक्षा कवच है और इन शस्त्रों से तुम कभी भेद नहीं सकते हो।

हमारी सरकार कुछ बातों के लिए प्रतिबद्ध है। समाज के वंचित वर्ग को वरीयता उस संकल्प को लेकर के हम जी रहे हैं, उस संकल्प को लेकर के चल रहे हैं। दशकों तक दलित, पिछड़े, आदिवासी जिस हालत में उनको छोड़ दिया गया था। वो सुधार नहीं आया जो संविधान निर्माताओं ने सोचा था। जो संविधान निर्माताओं ने निर्दिष्ट किया था। 2014 के बाद गरीब कल्याण योजनाओं का सर्वाधिक लाभ मेरे इन्ही परिवारों को मिला है। दलित, पिछड़ों, आदिवासी की बस्तियों में पहली बार बिजली पहुंची है। मीलों तक पानी के लिए जाना पड़ता था। पहली बार नल से जल पहुंच रहा है। इन परिवारों में पहुंच रहा है। अनेक परिवार, कोटि-कोटि परिवार पहली बार पक्के घर में आज जा पाए हैं। वहां रह पाए हैं।

जो बस्तियां आपने छोड़ दी थी। आपके लिए चुनाव के समय ही जिसकी याद आती थी। आज सड़क हो, बिजली हो, पानी हो, इतना ही नहीं 4जी कनेक्टिविटी भी वहां पहुंच रही है।

पूरा देश गौरव कर रहा है। आज एक आदिवासी राष्ट्रपति के रूप में जब देखते हैं। पूरा देश गौरवगान कर रहा है। आज देश में आधी जाति समूह के नर-नारी जिन्होंने मातृभूमि के लिए जीवन तर्पण कर दिए। आजादी के जंग का नेतृत्व किया उनका पुण्य स्मरण आज हो रहा है और हमारे आदिवासियों का गौरव दिवस मनाया जा रहा है। और हमें गर्व है कि ऐसी महान हमारी आदिवासी परंपरा के प्रतिनिधि के रूप में एक महिला देश का नेतृत्व कर रही है, राष्ट्रपति के रूप में काम कर रही है। हमने उनका हक दिया है।

हम पहली बार देख रहे हैं। एक बात ये भी सही है। हम सबका समान अनुभव है सिर्फ मेरी ही है ऐसा नहीं है आपका भी है। हम सब जानते हैं कि जब मां सशक्त होती है, तो पूरा परिवार सशक्त होता है। परिवार सशक्त होता है तो समाज सशक्त होता है और तभी जाकर के देश सशक्त होता है। और मुझे संतोष है कि माताएं, बहनों, बेटियों की सबसे ज्यादा सेवा करने का सौभाग्य हमारी सरकार को मिला है। हर छोटी मुसीबत को दूर करने का प्रामाणिक पूर्वक प्रयास किया है। बड़ी संवेदनशीलता के साथ उस पर हमने ध्यान केंद्रित किया है।

कभी-कभी मजाक उड़ाया जा रहा है। ऐसा कैसा प्रधानमंत्री है। लाल किले पर से टॉयलेट की बात करता है। बड़ा मजाक उड़ाया गया। ये टॉयलेट, ये इज्जत घर, ये मेरी इन माताओं-बहनों की क्षमता, उनकी सुविधा, उनका सुरक्षा का सम्मान करने वाली बात है। इतना ही नहीं जब मैं सेनेटरी पैड की बात करता हूं तो लोगों को लगता है अरे प्रधानमंत्री ऐसे विषयों में क्यों जाते हैं।

सेनेटरी पैड के अभाव में गरीब बहन-बेटियां क्या अपमान सहती थीं, बीमारियों का शिकार हो जाती थीं। माताओं-बहनों को धुएं में दिन के कई घंटे बिताने पड़ते थे। उनका जीवन धुएं में फंसा रहता था, उससे मुक्ति दिलाने का काम उन गरीब माताओं-बहनों के लिए यह सौभाग्य हमें मिला है। जिंदगी खप जाती थी। आधा समय पानी के लिए, आधा समय केरोसिन की लाइन के अंदर खपे रहते थे। आज उससे माताओं-बहनों को मुक्ति दिलाने का संतोष हमें मिला है।

जो पहले चलता था, अगर वैसा ही हम चलने देते शायद कोई हमें सवाल भी नहीं पूछता

कि मोदी जी ये क्यों नहीं किया, वो क्यों नहीं किया क्योंकि देश को आपने ऐसी स्थिति में ला दिया था कि इससे बाहर निकल ही नहीं सकता था। वैसी निराशा में देश को झोंक कर रखा हुआ था। हमने **उज्ज्वला योजना से धुएं से मुक्ति दिलाई, जल-जीवन से पानी दिया, बहनों के सशक्तिकरण के लिए काम किया। 9 करोड़ बहनों को सेल्फ हेल्प ग्रुप स्वयं सहायता समूह से जोड़ना। माइनिंग से लेकर के डिफेंस तक आज माताओं-बहनों को, बेटियों के लिए अवसर खोल दिए हैं।** ये अवसर खोलने का काम हमारी सरकार ने किया है।

इस बात को हम याद करें, वोट बैंक की राजनीति ने देश के सामर्थ्य को कभी-कभी बहुत बड़ा गहरा धक्का पहुंचाया है। और उसी का परिणाम है कि देश में जो होना चाहिए, जो समय पर होना चाहिए था उसमें काफी देर हो गई। आप देखिए मध्यम वर्ग, लंबे समय तक मध्यम वर्ग को पूरी तरह नकार दिया गया। उसकी तरफ देखा तक नहीं गया। एक प्रकार से वो मान के चला कि हमारा कोई नहीं, अपने ही बलबूते पर जो हो सकता है करते चलो। वो अपनी पूरी शक्ति बेचारा खपा देता था। लेकिन हमारी सरकार, एनडीए सरकार ने मध्यम वर्ग की ईमानदारी को पहचाना है। उन्हें सुरक्षा प्रदान की है और आज हमारा परिश्रमी मध्यम वर्ग देश को नई ऊंचाई पर ले जा रहा है। सरकार की विभिन्न योजनाओं से मध्यम वर्ग को कितना लाभ हुआ है मैं उदाहरण देता हूं 2014 से पहले जीबी डेटा क्योंकि आज युग बदल चुका है। ऑनलाइन दुनिया चल रही है। हरेक के हाथ में मोबाइल पड़ा हुआ है। कुछ लोगों के जेब फटे हुए हो तो भी मोबाइल तो होता ही है।

2014 के पहले जीबी डेटा की कीमत 250 रुपया थी। आज सिर्फ 10 रुपया है। Average हमारे देश में एक नागरिक Average 20 जीबी का उपयोग करता है। अगर उस हिसाब को मैं लगाऊँ तो Average एक व्यक्ति का 5 हजार रुपया बचता है।

जन औषधि स्टोर आज पूरे देश में आकर्षण का कारण बने हैं, क्योंकि मध्यम वर्ग का परिवार उसको अगर परिवार में सीनियर सिटीजन है, डायबिटीज जैसी बीमारी है, तो हजार, दो हजार, ढाई हजार, तीन हजार की दवाई हर बार महीने लेनी पड़ती है। जन औषधि केंद्र में जो दवाई बाजार में 100 रुपये में मिलती है, जन औषधि में 10 रुपये, 20 रुपये मिलती है। आज 20 हजार करोड़ रुपया मध्यम वर्ग का जन औषधि के कारण बचा है।

हर मध्यम वर्गीय परिवार को अपने बच्चों के भविष्य के लिए उसकी उच्च शिक्षा के लिए उसके मन में एक मंसूबा रहता है। वो चाहता है आज जितनी मात्रा में मेडिकल कॉलेजेस हों, इंजीनियरिंग कॉलेजेस हों, प्रोफेशनल कॉलेजों की संख्या बढ़ाई गई है।

सीटें बढ़ाई गई हैं। उसने मध्यम वर्ग के एस्पीरेशन को बहुत उत्तम तरीके से एड्रेस किया है। उसको विश्वास होने लगा है कि उनके बच्चों का उज्जवल भविष्य निर्धारित है।

हर मध्यम वर्गीय परिवार का एक सपना होता है खुद का एक घर बने और urban इलाके में होम लोन के लिए की बड़ी व्यवस्था करने का काम हमने किया और रेरा का कानून बनाने के कारण जो कभी इस प्रकार का तत्व मध्यम वर्ग की मेहनत की कमाई को सालों तक डूबों कर रखते थे, उसमें से मुक्ति दिलाकर के उसको एक नया विश्वास देने का काम हमने किया और उसके कारण खुद का घर बनाने की उसकी सहूलियत बढ़ गई है।

हर मध्यम वर्गीय परिवार को अपने बच्चों के भविष्य के लिए उसकी उच्च शिक्षा के लिए उसके मन में एक मंसूबा रहता है। वो चाहता है आज जितनी मात्रा में मेडिकल कॉलेजेस हों, इंजीनियरिंग कॉलेजेस हों, प्रोफेशनल कॉलेजों की संख्या बढ़ाई गई है। सीटें बढ़ाई गई हैं। उसने मध्यम वर्ग के एस्पीरेशन को बहुत उत्तम तरीके से एड्रेस किया है। उसको विश्वास होने लगा है कि उनके बच्चों का उज्जवल भविष्य निर्धारित है।

देश को आगे बढ़ाना है, तो भारत को आधुनिकता की तरफ ले जाए बिना कोई चारा नहीं है। और समय की मांग है कि अब समय नहीं गंवा सकते और इसलिए हमने इंफ्रास्ट्रक्चर की तरफ बहुत बड़ा ध्यान दिया है और ये भी मानें, स्वीकारियेगा भारत की एक जमाने में पहचान थी गुलामी के कालखंड के पहले, ये देश architecture के लिए infrastructure के लिए दुनिया में उसकी एक ताकत थी, पहचान थी। गुलामी के कालखंड में सारा नष्ट हो गया। देश आजाद होने के बाद वो दिन दोबारा आएगा, ऐसी आशा थी, लेकिन वो भी समय बीत गया। जो होना चाहिए था, जिस गति से होना चाहिए, जिस स्केल से होना चाहिए था वो हम नहीं कर पाए। आज उसमें बहुत बड़ा बदलाव इस दशक में देखा जा रहा है। सड़क हो, समुद्री मार्ग हो, व्यापार हो, waterways हो, हर क्षेत्र में आज infrastructure का कायाकल्प दिख रहा है। Highways पर, रेकॉर्ड निवेश हो रहा है। दुनिया भर में आज चौड़ी सड़कों की व्यवस्था होती थी, भारत में चौड़ी सड़कें, highway, expressway, आज देश की नई पीढ़ी देख रही है। भारत में वैश्विक स्तर के अच्छे highway, expressway दिखें, इस दिशा में हमारा काम है। पहले रेलवे infrastructure, अंग्रेजों ने जो देकर के गए उसी पर भी हम बैठे रहे, उसी को हमने अच्छा मान लिया। गाड़ी चलती थी।

वो समय था, जिस प्रकार से अंग्रेज जो छोड़ करके गए थे उसी भाव में जीते रहे और रेलवे की पहचान क्या बन गई थी? रेलवे यानी धक्का-मुक्की, रेलवे यानी एक्सीडेंट, रेलवे यानी लेटलतीफी, यही यानी एक स्थिति थी लेट-लतीफी में एक कहावत बनी गई थी रेलवे यानी लेट-लतीफी। एक समय था हर महीने एक्सीडेंट होने वाली घटनाएं बार-बार आती थी। एक समय था एक्सीडेंट एक किस्मत बन गई थी। लेकिन अब ट्रेनों में, ट्रेनों के अंदर वंदे भारत, वंदे भारत की मांग हर एमपी चिट्ठी लिखता है, मेरे यहां वंदे भारत चालू करें। आज रेलवे स्टेशनों का कायाकल्प हो रहा है। आज एयरपोर्टों का कायाकल्प हो रहा है। सत्तर साल में सत्तर एयरपोर्ट, नौ साल में सत्तर एयरपोर्ट। देश में waterways भी बन रहा है। आज waterways पर ट्रान्स्पोर्टशन हो रहा है। देश आधुनिकता की तरफ बढ़े इसके लिए आधुनिक infrastructure को बल देते हुए हम आगे बढ़ रहे हैं।

मेरे जीवन में सार्वजनिक जीवन में, 4-5 दशक मुझे हो गए और मैं हिन्दुस्तान के गांवों से गुजरा हुआ इंसान हूँ। 4-5 दशक तक उसमें से एक लंबा कालखंड परिव्राजक के रूप में बिताया है। हर स्तर के परिवारों से बैठने-उठने का, बात करने का अवसर मिला है और इसलिए भारत के हर भू भाग को समाज की हर भावना से परिचित हूँ। और मैं इसके आधार पर

कह सकता हूँ और बड़े विश्वास से कह सकता हूँ कि भारत का सामान्य मानवी positivity से भरा हुआ है। सकारात्मकता उसके स्वभाव का, उसके संस्कार का हिस्सा है। भारतीय समाज negativity को सहन कर लेता है, स्वीकार नहीं करता है, ये उसकी प्रकृति नहीं है। भारतीय समुदाय का स्वभाव खुशमिजाज है, स्वप्नशील समाज है, सत्कर्म के रास्ते पर चलने वाला समाज है। सृजन कार्य से जुड़ा हुआ समाज है। मैं आज कहना चाहूंगा जो लोग सपने लेकर के बैठे हैं कि कभी यहां बैठते थे फिर कभी मौका मिलेगा, ऐसे लोग जरा 50 बार सोचें, अपने तौर-तरीकों पर जरा पुनर्विचार करें। लोकतंत्र में आपको भी आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है। आधार आज डिजिटल लेनदेन का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण अंग बन गया है। आपने उसको भी निराधार करके रख दिया था।

अब उसके भी पीछे पड़ गए थे। उसको भी रोकने के लिए कोर्ट-कचहरी तक को छोड़ा नहीं था। GST को ना जाने क्या-क्या कह दिया गया। पता नहीं लेकिन आज हिन्दुस्तान की अर्थव्यवस्था को और सामान्य मानवी का जीवन सुगम बनाने में GST ने एक बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। उस जमाने में HAL को कितनी गालियां दी गई, किस प्रकार से और बड़े-बड़े फॉरम का misuse किया गया। आज एशिया का सबसे बड़ा हेलीकॉप्टर बनाने वाला हब बन चुका है वो।

जहां से तेजस हवाई जहाज सैकड़ों की संख्या में बन रहे हैं, भारतीय सेना के हजारों, हजारों-करोड़ों रुपयों के ऑर्डर आज HAL के पास है। भारत के अंदर vibrant डिफेन्स industry आगे आ रही है। आज भारत defence export करने लगा है। हिन्दुस्तान के हर नौजवान को गर्व होता है, निराशा में डूबे हुए लोगों से अपेक्षा नहीं है।

आप जानते हैं भली-भांति समय सिद्ध कर रहा है जो कभी यहां बैठते थे वो वहां जाने के बाद भी फेल हुए हैं और देश पास होता जा रहा है, distinction पर जाके और इसलिए समय की मांग है कि आज निराशा में डूबे हुए लोग थोड़ा स्वस्थ मन रख के आत्मचिंतन करें।

यहां जम्मू-कश्मीर की भी चर्चा हुई और जो अभी अभी जम्मू-कश्मीर घूम करके आए उन्होंने देखा होगा कितने आन-बान-शान के साथ आप जम्मू-कश्मीर में जा सकते हैं, घूम सकते हैं, फिर सकते हैं।

पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, मैं भी जम्मू-कश्मीर में यात्रा लेकर के गया था और लाल चौक पर तिरंगा फहराने का संकल्प लेकर के चला था और तब आतंकवादियों ने पोस्टर लगाए थे, उस समय और कहा था कि देखते हैं किसने अपनी माँ का दूध पिया है जो लाल चौक पर आ करके तिरंगा फहराता है? पोस्टर लगे थे और उस दिन 24 जनवरी थी, मैंने जम्मू के अंदर भरी सभा में कहा था। मैं पिछली शताब्दी की बात कर रहा हूं। और तब मैंने कहा था आतंकवादी कान खोलकर सुन लें, 26 जनवरी को ठीक 11 बजे मैं लाल चौक पहुंचुंगा, बिना सिक्योरिटी आऊंगा, बुलेटप्रूफ जैकेट के बिना आऊंगा और फैसला लाल चौक में होगा, किसने अपनी मां का दूध पिया है। वो समय था।

और जब श्रीनगर के लालचौक में तिरंगा फहराया, उसके बाद मैंने मीडिया के लोग पूछने लगे मैंने कहा था, कि आमतौर पर तो 15 अगस्त और 26 जनवरी को जब भारत का तिरंगा लहराता है तो भारत के आयुध, भारत के बारूद सलामी देते हैं, आवाज करके देते हैं। मैंने कहा, आज जब मैं लाल चौक के अंदर तिरंगा फहराऊं, दुश्मन देश का बारूद भी सलामी कर रहा है, गोलियां चला रहा था, बंदूकें-बम फोड़ रहा था।

आज जो शांति आई है, आज चैन से जा सकते हैं। सैकड़ों की तादाद में जा सकते हैं। ये माहौल और पर्यटन की दुनिया में कई दशकों के बाद सारे रिकॉर्ड जम्मू–कश्मीर ने तोड़े हैं। आज जम्मू-कश्मीर में लोकतंत्र का उत्सव मनाया जा रहा है।

आज जम्मू-कश्मीर में हर घर तिरंगा के सफल कार्यक्रम होते हैं। मुझे खुशी है कुछ लोग हैं, जो कभी कहते थे तिरंगे से शांति बिगड़ने का खतरा लगता था कुछ लोगों को। ऐसा कहते थे कि तिरंगे से जम्मू-कश्मीर में शांति बिगड़ने का खतरा रहता था। वक्त देखिए, वक्त का मजा देखिए- अब वो भी तिरंगा यात्रा में शरीक हो रहे हैं।

अखबारों में एक खबर आई थी जिसकी तरफ ध्यान नहीं गया होगा। उसी समय अखबारों में एक खबर आई थी इसके साथ जब ये लोग टीवी में चमकने की कोशिश में लगे थे। लेकिन उसी समय श्रीनगर के अंदर दशकों बाद थियेटर हाउस फुल चल रहे थे और अलगाववादी दूर-दूर तक नजर नहीं आते थे। अब ये विदेश ने देखा है।

अभी हमारे साथी, हमारे माननीय सदस्य नॉर्थ-ईस्ट के लिए कह रहे थे। मैं कहूंगा जरा एक बार नॉर्थ-ईस्ट हो आइए। आपके जमाने का नॉर्थ-ईस्ट और आज के जमाने का नॉर्थ-ईस्ट देखकर आइये। आधुनिक चौड़े हाइवे हैं, रेल की सुख-सुविधा वाला सफर है। आप आराम से हवाई जहाज से जा सकते हैं। नॉर्थ-ईस्ट के हर कोने में आज बड़ी और मैं गर्व के साथ कहता हूँ आजादी के 75 साल मना रहे हैं, तब मैं गर्व से कहता हूं 9 साल में करीब-करीब 7500 जो हथियार के रास्ते पर चल पड़े थे, ऐसे लोगों ने सरेंडर किया और अलगाववादी प्रवृत्ति छोड़ करके मुख्य धारा में आने का काम किया है।

आज त्रिपुरा में लाखों परिवारों को पक्का घर मिला है, उसकी खुशी में मुझे शरीक होने का अवसर मिला था। जब मैंने त्रिपुरा में हीरा योजना की बात कही थी, तब मैंने कहा था हाईवे-आईवे-रेलवे और एयरवे हीरा, ये हीरा का आज सफलतापूर्वक त्रिपुरा की धरती पर मजबूती नजर आ रही है। त्रिपुरा तेज गति से आज भारत की विकास यात्रा का भागीदार बना है।

मैं जानता हूं सच सुनने के लिए भी बहुत सामर्थ्य लगता है। झूठे, गंदे आरोपों को सुनने के लिए भी बहुत बड़ा धैर्य लगता है और मैं इन सबका अभिनंदन करता हूं जिन्होंने धैर्य के साथ गंदी से गंदी बातें सुनने की ताकत दिखाई है, ये अभिनंदन के अधिकारी हैं। लेकिन सच सुनने का सामर्थ्य नहीं रखते हैं वो कितनी निराशा की गर्त में डूब चुके होंगे इसका देश आज सबूत देख रहा है।

राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं, विचारधाराओं में मतभेद हो सकते हैं, लेकिन ये देश अजर-अमर है। आओ हम चल पड़ें- 2047, आजादी के 100 साल मनाएंगे, एक विकसित भारत बनाकर रहेंगे। एक सपना ले करके चलें, एक संकल्प ले करके चलें, पूरे सामर्थ्य के साथ चलें और जो लोग बार-बार गांधी के नाम पर रोटी सेंकना चाहते हैं- उनको मैं कहना चाहता हूं एक बार गांधी को पढ़ लें। एक बार महात्मा गांधी को पढ़ें, महात्मा गांधी ने कहा था- **अगर आप अपने कर्तव्यों का पालन करोगे तो दूसरे के अधिकारों की रक्षा उसमें निहित है। आज कर्तव्य और अधिकार के बीच में भी लड़ाई देख रहे हैं, ऐसी नासमझी शायद देश ने पहली बार देखी होगी।**

मैं फिर एक बार आदरणीय राष्ट्रपति जी को अभिनंदन करता हूं, राष्ट्रपति जी का धन्यवाद करता हूं और देश यहां से एक नई उमंग-नए विश्वास-नए संकल्प के साथ चल पड़ा है। ▪

वित्त मंत्री निर्मला जी और उनकी टीम को इस ऐतिहासिक बजट के लिए बधाई-नरेन्द्र मोदी

अमृतकाल का ये पहला बजट विकसित भारत के विराट संकल्प को पूरा करने के लिए एक मजबूत नींव का निर्माण करेगा। ये बजट वंचितों को वरीयता देता है।

ये बजट आज की Aspirational Society गांव-गरीब, किसान, मध्यम वर्ग, सभी के सपनों को पूरा करेगा।

अमृतकाल का ये पहला बजट विकसित भारत के विराट संकल्प को पूरा करने के लिए एक मजबूत नींव का निर्माण करेगा। ये बजट वंचितों को वरीयता देता है। ये बजट आज की Aspirational Society गांव-गरीब, किसान, मध्यम वर्ग, सभी के सपनों को पूरा करेगा।

परंपरागत रूप से, अपने हाथ से, औजारों और टूल्स से कड़ी मेहनत कर कुछ न कुछ सृजन करने वाले करोड़ों विश्वकर्मा इस देश के निर्माता हैं। लोहार, सुनार, कुम्हार, सुथार, मूर्तिकार, कारीगर, मिस्त्री अनगिनत लोगों की बहुत बड़ी लिस्ट है। इन सभी विश्वकर्माओं की मेहनत और सृजन के लिए देश इस बजट में पहली बार अनेक प्रोत्साहन योजना लेकर आया है। ऐसे लोगों के लिए ट्रेनिंग, टेक्नॉलॉजी, क्रेडिट और मार्केट सपोर्ट की व्यवस्था की गई है। पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान यानि पीएम विकास, करोड़ों विश्वकर्माओं के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव लायेगा।

शहरी महिलाओं से लेकर गांव में रहने वाली महिलायें हों, कारोबार रोजगार में व्यस्त महिलायें हों, या घर के काम में व्यस्त महिलायें हों, उनके जीवन को आसान बनाने के लिए बीते वर्षों में सरकार ने अनेक कदम उठाएँ हैं। जल जीवन मिशन हो, उज्जवला योजना हो, पीएम-आवास योजना हो, ऐसे अनेक कदम इन सबको बहुत बड़ी ताकत के साथ आगे बढ़ाया जाएगा। उसके साथ-साथ महिला सेल्फ हेल्प ग्रुप, एक बहुत बड़ा सामर्थ्यवान क्षेत्र आज भारत में बहुत बड़ी जगह aquire कर चुका है, उनको अगर थोड़ा सा बल मिल जाए तो वो miracle कर सकते हैं और इसलिए women self help group, उनके सर्वांगीण विकास के लिए नई पहल इस बजट में एक नया आयाम जोड़ेगी। महिलाओं के लिए एक विशेष बचत योजना भी शुरू की जा रही है। जन धन अकाउंट के बाद ये विशेष बचत योजना सामान्य परिवार की गृहिणी माताओं-बहनों को बहुत बड़ी ताकत देने वाली है।

बजट, सहकारिता को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास की धुरी बनाएगा। सरकार ने को-ऑपरेटिव सेक्टर में दुनिया की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना बनाई है-स्टोरेज कपेसिटी। बजट में नए प्राइमरी को-ऑपरेटिव्स बनाने की एक महत्वाकांक्षी योजना का भी ऐलान हुआ है। इससे खेती के साथ-साथ दूध और मछली उत्पादन के क्षेत्र का विस्तार होगा, किसानों, पशुपालकों और मछुआरों को अपने उत्पाद की बेहतर कीमत मिलेगी।

अब हमें डिजिटल पेमेंटस की सफलता को एग्रीकल्चर सेक्टर में दोहराना है। इसलिए इस बजट में हम डिजिटल एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर की एक बहुत बड़ी योजना लेकर आए हैं। आज दुनिया इंटरनेशनल मिलेट ईयर मना रही है। भारत में मिलेट्स के अनेक प्रकार हैं, अनेक नाम हैं। आज जब मिलेट्स, घर-घर में पहुंच रहा है, पूरी दुनिया में पॉपुलर हो रहा है, तो उसका सर्वाधिक लाभ भारत के छोटे किसानों के नसीब में है, और

इसलिए आवश्यकता है कि एक नए तरीके से उसको आगे ले जाया जाए। इसकी एक नई पहचान, विशेष पहचान आवश्यक है। इसलिए अब इस सुपर-फूड को **श्री-अन्न** की नई पहचान दी गई है, इसके प्रोत्साहन के लिए भी अनेक योजनाएँ बनाई गई हैं।

श्री-अन्न को दी गई प्राथमिकता से देश के छोटे किसानों, हमारे आदिवासी भाई-बहन जो किसानी करते हैं, उनको आर्थिक सम्बल मिलेगा और देशवासियों को एक स्वस्थ जीवन मिलेगा।

बजट Sustainable Future के लिए, Green Growth, Green Economy, Green Energy, Green Infrastructure और Green Jobs को एक अभूतपूर्व विस्तार देगा। बजट में टेक्नॉलॉजी और न्यू इकॉनॉमी पर बहुत अधिक बल दिया है। Aspirational भारत, आज रोड, रेल, मेट्रो, पोर्ट, water ways, हर क्षेत्र में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर चाहता है, Next Generation Infrastructure चाहिए। 2014 की तुलना में इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश पर 400 परसेंट से ज्यादा की वृद्धि की गई है। इस बार इंफ्रास्ट्रक्चर पर दस लाख करोड़ का अभूतपूर्व investment, भारत के विकास को नई ऊर्जा और तेज गति देगा। ये निवेश, युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करेगा, एक बहुत बड़ी आबादी को आय के नए अवसर उपलब्ध कराएगा। इस बजट में Ease of Doing Business के साथ-साथ हमारे उद्योगों के लिए क्रेडिट सपोर्ट और रिफॉर्मस के अभियान को आगे बढ़ाया गया है। MSMEs के लिए 2 लाख करोड़ रुपए के अतिरिक्त ऋण की गारंटी की व्यवस्था की गई है। अब presumptive tax की लिमिट बढ़ने से MSMEs को grow करने में मदद मिलेगी। बड़ी कंपनियों द्वारा MSMEs को समय पर पेमेंट मिले, इसके लिए नई व्यवस्था बनाई गई है।

बहुत तेजी से बदलते भारत में मध्यम वर्ग, विकास हो या व्यवस्था हो, साहस हो या संकल्प लेने का सामर्थ्य को जीवन के हर क्षेत्र में आज भारत का मध्यम वर्ग एक प्रमुख धारा बना हुआ है। समृद्ध और विकसित भारत के सपनों को पूरा करने के लिए मध्यम वर्ग एक बहुत बड़ी ताकत है। जैसे भारत की युवा शक्ति, ये भारत का विशेष सामर्थ्य है, वैसे ही बढ़ता हुआ भारत का मध्यम वर्ग भी एक बहुत बड़ी शक्ति है। मध्यम वर्ग को सशक्त बनाने के लिए हमारी सरकार ने बीते वर्षों में अनेकों निर्णय लिए और **Ease of Living को सुनिश्चित किया है। हमने टैक्स रेट को कम किया है, साथ ही प्रॉसेस को simplify, transparent और फास्ट किया है। हमेशा मध्यम वर्ग के साथ खड़ी रहने वाली हमारी सरकार ने मध्यम वर्ग को टैक्स में बड़ी राहत दी है।** ▪

बजट में सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत का संकल्प - विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में केंद्रीय वित्त मंत्री जी ने जो बजट पेश किया है वह मध्यप्रदेश को, देश को, युवाओं को, महिलाओं को, बुजुर्गों को और समाज के हर वर्ग को ताकत देगा। आजादी के अमृतकाल में प्रस्तुत इस बजट के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री मोदी की सरकार ने देश को सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प जताया है।

देश को आत्मनिर्भर, गरीबी मुक्त बनाने की राह पर बढ़ रहे प्रधानमंत्री जी

केंद्र सरकार ने जो बजट पेश किया है, यह देश के आर्थिक चक्र को मजबूत करने वाला बजट है। 2014 से पहले भारत विश्व की दसवीं अर्थव्यवस्था था, लेकिन आज भारत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। यह सब ऐसे ही नहीं हुआ, बल्कि उन उपायों का परिणाम है, जो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने किए हैं। प्रधानमंत्री जी एक विजनरी व्यक्तित्व हैं और आजादी के अमृतकाल के इस पहले बजट से भी यही दिखाई देता है कि उनकी सरकार आत्मनिर्भर और गरीबी मुक्त भारत के संकल्प की पूर्ति की दिशा में आगे कदम बढ़ा रही है। इस बजट में 7 लाख रूपए तक सालाना कमाने वालों पर कोई टैक्स नहीं है, वहीं, 10 लाख करोड़ का जो पूंजीगत व्यय किया गया है, उससे इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलप होगा और रोजगारों का सृजन होगा।

बजट में रखा हर वर्ग का ध्यान

यह सर्वसमावेशी बजट है, जिसमें हर वर्ग का ध्यान रखा गया है। यह देश के गरीबों, मजदूरों, युवाओं, महिलाओं और किसानों को ताकत देने वाला बजट है। आम बजट में पीएम कौशल विकास योजना-4 प्रारंभ करने, स्किल इंडिया मिशन इंटरनेशनल सेंटर स्थापित करने, युवा उद्यमियों के लिए एग्रीकल्चर स्टार्टअप शुरू करने की बात की गई है। यह बजट युवाओं के लिए नये रोजगार का सृजन तो करेगा ही साथ ही महिला सशक्तीकरण की दिशा में भी प्रभावी होगा। महिलाओं को 2 लाख तक की बचत पर 7.5 प्रतिशत ब्याज देने का प्रावधान इसमें किया गया है। जनजातीय क्षेत्रों के लिए पीजीबीटी के अंदर 15000 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है, जो जनजातीय समाज के नौजवानों और आदिवासी भाई-बहनों को ताकत देगा। मोदी सरकार ने कोविड काल में गरीब कल्याण अन्न योजना चलाई थी, ताकि कोई भी गरीब भूखा न सो सके। 80 करोड़ परिवारों के लिए इस योजना को 1 वर्ष के लिए और बढ़ाकर मोदी सरकार ने गरीबों को ताकत दी है। प्रधानमंत्री आवास योजना जो हर गरीब के जीवन स्तर को बदल रही है, उसमें 66 प्रतिशत की वृद्धि एवं 79 हजार करोड़ का प्रावधान कर मध्यम वर्गीय एवं गरीब परिवारों को ताकत देने का काम किया गया है। आम बजट में युवाओं के कृषि स्टार्ट अप्स को बढ़ावा देने के लिए एग्रीकल्चर फंड की स्थापना करने का निर्णय लिया गया है। वहीं, अगले 3 साल तक 1 करोड़ किसानों को नेचुरल फॉर्मिंग में मदद करने और 10 हजार बायो इनपुट रिसोर्स सेंटर्स बनाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है। सरकार के ये कदम किसानों को लाभदायक और जैविक खेती की ओर प्रेरित करेंगे।

देश के विकास को गति देगा

गुड इकॉनोमी इज द गुड पॉलीटिक्स। इस लिहाज से देखें तो प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में प्रस्तुत आम बजट देश को आगे बढ़ाने वाला, अर्थव्यवस्था को मजबूती देने वाला बजट है और यही अच्छी राजनीति है। यह सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय बजट देश के विकास को नई गति प्रदान करेगा। अमृतकाल का यह बजट हर क्षेत्र में सामर्थ्यशाली भारत की नींव बनेगा। ▪

बजट में कृषि और सहकारिता को महत्व

आजादी के बाद लंबे समय तक कृषि क्षेत्र अभाव के दबाव में रहा। खाद्य सुरक्षा के लिए दुनिया पर निर्भर थे। लेकिन किसानों ने ना सिर्फ आत्मनिर्भर बनाया बल्कि उनकी वजह से निर्यात करने में भी सक्षम हो गए हैं।

भारत कई तरह के कृषि उत्पादों को निर्यात कर रहा है। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक किसानों की पहुंच को आसान बनाया है।

पिछले 8-9 वर्षों की तरह, इस बार भी बजट में कृषि को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। पिछले कुछ वर्षों से बजट के अगले दिन के अखबार को देखेंगे तो पाएंगे कि हर बजट को ''गांव, गरीब और किसान वाला बजट'' कहा गया है। 2014 में कृषि बजट 25 हजार करोड़ रुपए से भी कम था, भाजपा सरकार आने से पहले। आज देश का कृषि बजट बढ़कर 1 लाख 25 हजार करोड़ रुपए से भी ज्यादा हो गया है।

आजादी के बाद लंबे समय तक कृषि क्षेत्र अभाव के दबाव में रहा। खाद्य सुरक्षा के लिए दुनिया पर निर्भर थे। लेकिन किसानों ने ना सिर्फ आत्मनिर्भर बनाया बल्कि उनकी वजह से निर्यात करने में भी सक्षम हो गए हैं। भारत कई तरह के कृषि उत्पादों को निर्यात कर रहा है। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक किसानों की पहुंच को आसान बनाया है। लेकिन ये भी ध्यान रखना है कि बात चाहे आत्मनिर्भरता की हो या निर्यात की, लक्ष्य सिर्फ चावल, गेहूं तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, 2021-22 में दलहन के आयात पर 17 हजार करोड़ रुपये खर्च करने पड़े। Value added food products के आयात पर 25 हजार करोड़ रुपये खर्च हुए।

इसी तरह 2021-22 में खाद्य तेलों के आयात पर डेढ़ लाख करोड़ रुपये खर्च हुए। सिर्फ इतनी ही चीजों के आयात पर करीब 2 लाख करोड़ रुपये खर्च हो गए, मतलब इतना पैसा देश के बाहर चला गया। ये पैसा हमारे किसानों के पास पहुंच सकता है, अगर हम इन कृषि उत्पादों के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बन जाएं। पिछले कुछ वर्षों से लगातार बजट में इन सेक्टर्स को आगे बढ़ाने वाले फैसले किए जा रहे हैं। MSP में बढ़ोत्तरी की, दलहन उत्पादन को बढ़ावा दिया, फूड प्रोसेसिंग करने वाले फूड पार्कों की संख्या बढ़ाई गई। साथ ही खाद्य तेल के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर होने के लिए मिशन मोड में काम चल रहा है।

जब तक एग्रीकल्चर सेक्टर से जुड़ी चुनौतियों को दूर नहीं कर लेते, संपूर्ण विकास का लक्ष्य हासिल नहीं हो सकता। भारत के कई सेक्टर्स तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, ऊर्जावान युवा बढ़-चढ़कर उसमें हिस्सा भी ले रहे हैं। लेकिन एग्रीकल्चर में उनकी भागीदारी कम है, जबकि वो भी इसके महत्व और इसमें आगे बढ़ने की संभावनाओं के बारे में जानते हैं। प्राइवेट इनोवेशन और इन्वेस्टमेंट इस सेक्टर से दूरी बनाए हुए हैं। इस खाली जगह को भरने के लिए इस साल के बजट में कई तरह के ऐलान किए गए हैं। उदाहरण के लिए, एग्रीकल्चर सेक्टर में ओपन सोर्स बेस्ड प्लेटफॉर्म को बढ़ावा। digital public infrastructure को ओपन सोर्स प्लेटफॉर्म की तरह सामने रखा है। ये बिल्कुल उसी तरह है जैसे UPI का ओपन प्लेटफॉर्म, जिसके जरिए डिजिटल ट्रांजैक्शन हो रहा है। जैसे डिजिटल ट्रांजैक्शन में क्रांति हो रही है, उसी तरह एग्री-टेक डोमेन में भी इन्वेस्टमेंट और इनोवेशन की अपार संभावनाएं बन रही हैं। इसमें संभावना है लॉजिस्टिक्स को बेहतर बनाने की, इसमें अवसर है बड़े बाजार तक पहुंच को आसान बनाने का, इसमें मौका है टेक्नोलॉजी के जरिए drip irrigation को बढ़ावा देने का, साथ ही सही सलाह, सही व्यक्ति तक समय से पहुंचाने की दिशा में हमारे युवा काम कर सकते हैं।

जिस तरह से मेडिकल सेक्टर में लैब काम करते हैं उसी तरह से निजी soil testing labs स्थापित किये जा सकते हैं। युवा इनोवेशन से सरकार और किसान के बीच सूचना के सेतु बन सकते हैं। वो ये बता सकते हैं कि कौन सी फसल ज्यादा मुनाफा दे सकती है। वो फसल के बारे में अनुमान लगाने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल कर सकते हैं। वो पॉलिसी मेकिंग में मदद कर सकते हैं। किसी जगह पर मौसम में आ रहे बदलावों की real time information भी उपलब्ध करा सकते हैं। यानी युवाओं के लिए इस सेक्टर में करने के लिए बहुत कुछ है। इसमें सक्रिय भागीदारी करके वो किसानों की मदद करेंगे, साथ ही उन्हें भी आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा।

बजट में एक और महत्वपूर्ण घोषणा हुई है। एग्री-टेक स्टार्टअप्स के लिए एक्सेलेरेटर फंड की व्यवस्था की गई है। इसलिए, सिर्फ डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण ही नहीं कर रहे, बल्कि आपके लिए funding avenues

भी तैयार कर रहे हैं। तो अब युवा entrepreneurs की बारी है, वो उत्साह से आगे बढ़ें और लक्ष्य हासिल करके दिखाएं। ये भी ध्यान में रखना होगा कि 9 वर्ष पहले देश में एग्री स्टार्टअप नहीं के बराबर थे, लेकिन आज ये तीन हजार से भी ज्यादा हैं। फिर भी और तेज रफ्तार से आगे बढ़ना होगा। भारत की पहल पर इस साल को International Year of Millets घोषित किया गया है।

मिलेट्स को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिलने का मतलब है कि छोटे किसानों के लिए ग्लोबल मार्केट तैयार हो रहा है। मोटे अनाज को अब देश ने इस बजट में ही **'श्रीअन्न'** की पहचान दी है। जिस तरह श्रीअन्न को प्रमोट किया जा रहा है, उससे छोटे किसानों को बहुत फायदा होगा। इस क्षेत्र में ऐसे स्टार्टअप्स के ग्रोथ की संभावना भी बढ़ी है, जो ग्लोबल मार्केट तक किसानों की पहुंच को आसान बनाए।

भारत के सहकारिता सेक्टर में एक नया revolution हो रहा है। अभी तक ये देश के कुछ एक राज्यों और कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहा है। लेकिन अब इसका विस्तार पूरे देश में किया जा रहा है। इस बार के बजट में cooperative sector को टैक्स सम्बन्धी राहतें दी गयी है जो काफी महत्वपूर्ण हैं।

मैन्युफैक्चरिंग करने वाली नई सहकारी समितियों को कम टैक्स रेट का फायदा मिलेगा। सहकारी समितियों द्वारा 3 करोड़ रुपए तक की नगद निकासी पर टीडीएस नहीं लगेगा। कोऑपरेटिव सेक्टर के मन में हमेशा से एक भाव रहा है कि बाकी कंपनियों की तुलना में उनके साथ भेदभाव किया जाता है। इस बजट में इस अन्याय को भी खत्म किया गया है। एक महत्वपूर्ण फैसले के तहत शुगर कोऑपरेटिव द्वारा 2016-17 के पहले किए गए पेमेंट पर टैक्स छूट दी गई है। इससे शुगर कोऑपरेटिव को 10 हजार करोड़ रूपये का फायदा होगा।

जिन क्षेत्रों में सहकारी संस्थाएं पहले से नहीं हैं, वहां डेयरी और फिशरीज से जुड़ी सहकारी संस्थाओं से छोटे किसानों को बहुत लाभ होगा। विशेषकर, फिशरीज में हमारे किसानों के लिए कई बड़ी संभावनाएं मौजूद हैं।

पिछले 8-9 वर्षों में देश में मत्स्य उत्पादन करीब 70 लाख मीट्रिक टन बढ़ा है। 2014 के पहले, इतना ही उत्पादन बढ़ने में करीब-करीब तीस साल लग गए थे। इस बजट में पीएम मत्स्य संपदा योजना के तहत 6 हजार करोड़ रूपये की लागत से एक नए सब-कंपोनेंट की घोषणा की गई है।

इससे Fisheries Value Chain के साथ-साथ market को बढ़ावा मिलेगा। इससे मछुआरों और छोटे उद्यमियों के लिए नए अवसर बनेंगे। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और केमिकल आधारित खेती को कम करने की दिशा में भी तेजी से काम कर रहे हैं। पीएम प्रणाम योजना और गोबरधन योजना से इस दिशा में बड़ी मदद मिलेगी। ▪

मजबूत आधारशिला रखने वाला बजट-अमित शाह

मोदी सरकार द्वारा लाया गया बजट-2023 अमृतकाल की मजबूत आधारशिला रखने वाला बजट है। यह सर्वसमावेशी और दूरदर्शी बजट हर वर्ग को साथ लेकर चलने वाली मोदी सरकार के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को और गति देगा। मध्यम व वेतनभोगी वर्ग को टैक्स में बड़ी राहत देने के लिए मोदी जी का आभार। टैक्स रिबेट को 5 लाख से बढ़ा कर 7 लाख करना और टैक्स स्लैब में किये गए अभूतपूर्व बदलाव से मध्यम वर्ग को बहुत लाभ होगा। साथ ही सरकारी कर्मचारियों को दी गई राहत का भी स्वागत करता हूँ। Capital expenditure में 33 प्रतिशत की वृद्धि करते हुए उसे 10 लाख करोड़ रुपये करना और Fiscal Deficit को 5.9 प्रतिशत रखने का लक्ष्य सराहनीय है। यह मोदी सरकार की सशक्त बुनियादी ढांचे और मजबूत अर्थव्यवस्था वाले नये भारत बनाने की दूरदर्शिता को दर्शाता है। सहकारी क्षेत्र के लिए एक और महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है, जिसमें चीनी सहकारी समितियों द्वारा 2016-17 से पहले किसानों को किये गए भुगतान को अपने खर्च में दिखा पाने की सुविधा दी गयी है इससे करीब 10 हजार करोड़ की राहत सहकारी चीनी मिलों को मिलेगी। किसी भी देश के उज्जवल भविष्य की नींव उसकी शिक्षित व कौशलवान युवा पीढ़ी होती है। युवाओं को किताबें उपलब्ध कराने के लिए नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित करने के निर्णय का हृदय से स्वागत। कृषि ऋण को बढ़ा कर 20 लाख करोड़ किया गया है। युवा उद्यमियों द्वारा कृषि-स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने के लिए एग्रीकल्चर एक्सीलेटर फंड बनाया जाएगा। साथ ही अगले 3 वर्षों तक 1 करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती करने में मदद की जाएगी व 10 हजार Bio Input Resource Centre बनाए जाएंगे। रेलवे के लिए 2.4 लाख करोड़ के बजट का प्रावधान किया है जो सुदूर क्षेत्रों को रेलवे से जोड़ेगा। साथ ही देश में 50 एयरपोर्ट, हेलीपोर्टों, एडवांस्ड लैंडिंग ग्राउंड्स के पुनरुद्धार का निर्णय रीजनल एयर कनेक्टिविटी को बढ़ाएगा, जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

इस बजट में देश के पारंपरिक कारीगरों व शिल्पकारों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना की शुरुआत का निर्णय लिया गया है। यह निर्णय विश्वकर्माओं को अपने उत्पादों की गुणवत्ता और मार्केट तक पहुंच बढ़ाने में सक्षम बनाने के साथ उनके जीवन में बड़ा बदलाव लाएगा। मोदी सरकार 'सहकार से समृद्धि' के मंत्र पर चल सहकारिता के माध्यम से करोड़ों लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए संकल्पित भाव से कार्य कर रही है। बजट में सहकारिता क्षेत्र को सशक्त करने के लिए किये गए अभूतपूर्व निर्णय इसी संकल्प का प्रतीक हैं। बजट में विश्व की सबसे बड़ी विकेन्द्रीकृत भंडारण क्षमता स्थापित करने की योजना से सहकारी समितियों से जुड़े किसान अपनी उपज का भंडारण कर सकेंगे और उपज को सही समय पर बेच कर उचित मूल्य प्राप्त कर पाएंगे। यह किसानों की आय बढ़ाने के मोदी जी के संकल्प में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। साथ ही अगले 5 वर्षों में सरकार हर पंचायत में नई बहुउद्देशीय सहकारी समितियों, प्राथमिक मत्स्य समितियों और डेयरी सहकारी समितियों की स्थापना की सुविधा प्रदान करेगी। इससे सहकारिता आंदोलन को नई दिशा और गति प्राप्त होगी, जिससे यह क्षेत्र और अधिक सशक्त होगा। 31 मार्च 2024 तक बनने वाली मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र की सहकारी समितियों को सिर्फ 15 प्रतिशत टैक्स के दायरे में रखने पर आदरणीय प्रधानमंत्री जी का आभार। नकद निकासी पर TDS की अधिकतम सीमा 3 करोड़ रुपए करने, PACS व PCARDBs द्वारा नकद जमा व ऋण के लिए प्रति सदस्य 2 लाख की सीमा प्रदान करने का निर्णय सराहनीय है। सहकारी क्षेत्र के लिए एक और महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है, जिसमें चीनी सहकारी समितियों द्वारा 2016-17 से पहले किसानों को किये गए भुगतान को अपने खर्च में दिखा पाने की सुविधा दी गयी है इससे करीब 10 हजार करोड़ की राहत सहकारी चीनी मिलों को मिलेगी। ▪

विकास यात्रा आमजन की जिन्दगी बदलने का अभियान - मुख्यमंत्री श्री चौहान

विकास यात्रा केवल विकास यात्रा नहीं है, यह लोगों की जिन्दगी बदलने का भी अभियान है। मध्यप्रदेश में विकास की दृष्टि से नए रिकार्ड स्थापित किए गये हैं।

प्रदेश में सड़क, बिजली और सिंचाई में हुई प्रगति ने लोगों का जीवन बेहतर बनाया

एक जमाना था जब मध्यप्रदेश में सड़कों का अता-पता नहीं था। गड्ढों में सड़क है कि सड़क में गड्ढा, यह ही पता नहीं चलता था। मध्यप्रदेश की पहचान गड्ढों वाले राज्य के रूप में थी। उन्होंने मध्यप्रदेश को गड्ढों में डाला था जबकि हमने प्रदेश में 4 लाख किलोमीटर शानदार सड़कें बनाई हैं। सड़कों को बनाने का सिलसिला अभी जारी है, अटल एक्सप्रेस-वे, नर्मदा एक्सप्रेस-वे, शानदार हाई-वे पूरे प्रदेश के हर अंचल में बनाए जा रहे हैं। एक जमाना था जब मध्यप्रदेश में बिजली कभी-कभार दर्शन देने आती थी। अब मध्यप्रदेश में बिजली की बेहतर व्यवस्था की है। गाँव, शहर को भरपूर बिजली मिले, खेती के लिए भी बिजली की कमी न आ पाए, इसकी पर्याप्त व्यवस्था की गई है। सिंचाई के लिए मध्यप्रदेश में जो हुआ, वह अभूतपूर्व है। हमारी सरकार से पहले कुल साढ़े सात लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होती थी जिसे बढ़ा कर 45 लाख हेक्टेयर कर दिया है। हम यहीं नहीं रूकेंगे हमारा अभियान निरंतर जारी है, प्रदेश के हर अंचल में सिंचाई की योजनाओं पर काम चल रहा है। जल्दी ही सिंचाई क्षमता को 65 लाख हेक्टेयर तक बढ़ा कर ले जाएंगे। कोशिश है कि प्रदेश के प्रत्येक खेत के लिए पानी लेकर आयें और हर खेत में फसल लहलहाये। इसी का परिणाम है कि मध्यप्रदेश में कई वर्षों तक कृषि की विकास दर 18 प्रतिशत से अधिक रही।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के आशीर्वाद से प्रदेश में अधो-संरचना विकास के अनेक कार्य चल रहे हैं

पीने के पानी के लिए युद्ध स्तर पर अभियान चल रहा है। जल जीवन मिशन में अब तक 54 लाख घरों में नल कनेक्शन दिए जा चुके हैं और यह कार्य लगातार जारी है। प्रदेश में एक करोड़ 4 लाख घरों तक नल कनेक्शन दिए जाएंगे। घरों में पाइप लाइन बिछा कर टोटी वाला नल दिया जाएगा, पीने का स्वच्छ पानी उपलब्ध होगा। अधो-संरचना विकास के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आशीर्वाद से अनेक कार्य चल रहे हैं। लगभग 66 हजार करोड़ की सिंचाई परियोजनाओं, 59 हजार करोड़ की नल-जल परियोजनाओं पर काम चल रहा है और 50 हजार करोड़ रूपए से ज्यादा की सड़कें बन रही हैं।

एक जमाना था जब मध्यप्रदेश में सड़कों का अता-पता नहीं था। गड्ढों में सड़क है कि सड़क में गड्ढा, यह ही पता नहीं चलता था।

मध्यप्रदेश की पहचान गड्ढों वाले राज्य के रूप में थी। उन्होंने मध्यप्रदेश को गड्ढों में डाला था जबकि हमने प्रदेश में 4 लाख किलोमीटर शानदार सड़कें बनाई हैं। सड़कों को बनाने का सिलसिला अभी जारी है, अटल एक्सप्रेस-वे, नर्मदा एक्सप्रेस-वे, शानदार हाई-वे पूरे प्रदेश के हर अंचल में बनाए जा रहे हैं।

दो साल में सवा 2 लाख करोड़ रूपए किसानों के खातों में आए

एक समय था जब किसान को 16-17 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण मिला करता था। अब किसान को जीरो प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि में हर किसान के खाते में 6 हजार रूपए और मुख्यमंत्री किसान-कल्याण योजना में 4 हजार रूपए प्रति वर्ष दिए जा रहे हैं। इस प्रकार किसान को प्रतिवर्ष 10 हजार रूपए प्राप्त हो रहे हैं। अच्छे बीज, अच्छी खाद, भंडारण की व्यवस्था, न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ किसानों को दिया जा रहा है। पिछली सरकार ने बीमा की प्रीमियम की राशि नहीं भरी थी। मार्च 2020 में शपथ लेने के बाद सरकार ने सबसे पहले फसल बीमा योजना का 2200 करोड़ रूपए का प्रीमियम भर कर किसानों के खातों में फसल बीमा योजना के 3 हजार करोड़ रूपए से अधिक डलवाए। पिछले दो साल में फसल बीमा योजना में किसानों के खाते में 17 हजार करोड़ रूपए डाले गए। किसान को सस्ती बिजली मिल सके, इसलिए बिजली और कृषि पम्पों पर सब्सिडी दी जा रही है। परिणाम स्वरूप पाँच हॉर्स पॉवर के पम्प पर 51 हजार रूपए के स्थान पर केवल 3700 रूपए का बिल किसान को देना होगा। इस प्रकार अलग-अलग योजनाओं से 2 साल में लगभग सवा 2

लाख करोड़ रूपए किसानों के खातों में आया है।

गरीब कल्याण संकल्प है

गरीब की जिन्दगी बदलने का अभियान चल रहा है। गरीब कल्याण संकल्प है। धरती के संसाधनों पर सबका हक है। गरीब के पास संसाधन नहीं होते, अतः उन्हें विशेष सुविधाएँ देने का प्रयास जारी है। रोटी, कपड़ा, मकान, पढ़ाई, दवाई और रोजगार के इंतजाम का अभियान चल रहा है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना में फ्री राशन दिया जा रहा है। जिन बहन-भाइयों के पास रहने के लिए जमीन का टुकड़ा नहीं है, एक घर में कई परिवार रह रहे हैं, ऐसे भाई-बहनों के लिए राज्य सरकार ने तय किया है कि एक परिवार को अर्थात पति-पत्नी और उनके बच्चों के लिए निःशुल्क प्लॉट उपलब्ध कराया जाएगा। प्लॉट देने का क्रम आरंभ हो गया है। मध्यप्रदेश की धरती पर कोई गरीब जमीन के टुकड़े के बिना नहीं रहेगा। हरेक के पास रहने की जमीन होगी, यह संकल्प है।

जब तक हर गरीब का घर नहीं बन जाता तब तक चैन की साँस नहीं लेंगे

गरीबों के मकान बनाने का अभियान चल रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना में प्रधानमंत्री श्री मोदी पैसे भेजते हैं और राज्य सरकार भी अपनी राशि मिला रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना में 38 लाख आवास स्वीकृत हुए, जिनमें से 32 लाख बन भी गए हैं। बाकी पर तेजी से काम चल रहा है। आवास प्लस योजना में अनेक आवास स्वीकृत हैं। इस साल भी कई आवास आने वाले हैं। जब तक हर गरीब का घर नहीं बन जाता तब तक चैन की साँस नहीं लेंगे।

धन का अभाव कभी पढ़ाई के रास्ते में बाधा नहीं बनेगा

गरीबों के बेटा-बेटियों में बुद्धि, क्षमता, प्रतिभा होने के बाद भी कई बार पढ़ने का पैसा नहीं होने से वे बिना पढ़े रह जाते हैं। बच्चों की फीस, आठवीं तक यूनिफार्म देने जैसी कई प्रोत्साहन योजनाएँ प्रदेश में संचालित हैं। साथ ही मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी प्रोत्साहन योजना हर वर्ग के बच्चों के लिए है। अगर मेडिकल-इंजीनियरिंग कॉलेज, आई.आई.टी., आई.आई.एम. या किसी विशेष शिक्षण संस्थान में अपनी प्रतिभा के दम पर विद्यार्थी निजी या शासकीय संस्थान में प्रवेश लेगा तो उसकी फीस राज्य सरकार द्वारा भरवाई जाएगी। प्रदेश में अलग-अलग वर्ग के बेटा-बेटियों के लिए अलग-अलग स्कॉलरशिप योजनाएँ हैं। धन का अभाव कभी पढ़ाई के रास्ते में बाधा नहीं बनेगा।

हर परिस्थिति में सरकार गरीब के साथ खड़ी है

कोई गरीब इलाज से वंचित नहीं रहेगा। अगर कोई व्यक्ति बीमार हो जाए तो इलाज की व्यवस्था आयुष्मान भारत योजना और मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान से की जाएगी। राज्य सरकार ने गरीबों के लिए संबल योजना बनाई थी, जो पिछली सरकार ने बंद कर दी। हम पुनः संबल-2 आरंभ कर रहे हैं, जो नाम काट दिए गए थे वे जोड़े जाएंगे। संबल में आने वाली बहन के खाते में पहले 2 बच्चों के जन्म तक, जन्म के पहले 4 हजार रूपए और जन्म के बाद 12 हजार रूपए डाले जाएंगे। निश्चित समयावधि पर स्वास्थ्य जाँचें भी होंगी, जिससे माँ और बच्चा दोनों स्वस्थ रहें। दुर्घटना की स्थिति में परिवार बेसहारा न हो, इसके लिए भी राज्य सरकार ने व्यवस्था की है। दुर्घटना में मृत्यु होने पर प्रभावित परिवार को 4 लाख रूपए देने की व्यवस्था की गई है। सामान्य मृत्यु पर 2 लाख रूपए देने की व्यवस्था है। अंतिम संस्कार के लिए 5 हजार रूपए देने की व्यवस्था की गई है। दुख की घड़ी में सरकार गरीब के साथ खड़ी है।

राज्य सरकार बेटियों की जिंदगी में कोई बाधा नहीं रहने देगी

लाड़ली लक्ष्मी योजना में 43 लाख 50 हजार से अधिक बेटियाँ लाड़ली लक्ष्मी हैं। उनकी पढ़ाई के लिए पैसे की व्यवस्था की गई है। पाँचवीं पास कर छठवीं में, आठवीं पास कर 9वीं में, दसवीं पास कर 11वीं में बेटियाँ जाती हैं तो उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप राशि उपलब्ध कराई जाती है। अब बेटी कॉलेज में जाएगी तो उसे सीधे 12 हजार 500 रूपए उपलब्ध कराए जायेंगे। डिग्री प्राप्त करने पर बेटी को पुनः 12 हजार 500 रूपए और मिलेंगे। बेटी जिस उच्च शिक्षण संस्थान में जाएगी, उसकी फीस भी राज्य सरकार द्वारा भरी जाएगी। राज्य सरकार बेटियों की जिंदगी में कोई बाधा नहीं रहने देगी। बेटियों की शादी के लिए भी मुख्यमंत्री कन्या विवाह/ निकाह योजना संचालित है, जिसमें बिटिया की शादी पर 56 हजार रूपए खर्च किए जा रहे हैं।

बहनों के सशक्तिकरण और कल्याण का महायज्ञ जारी रहेगा

बहनों के कल्याण, विशेषकर गरीब बहनों की आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिए महिला स्व-सहायता समूह तेजी से काम कर रहे हैं। हर बहन लखपति बने, घर का कामकाज करते हुए उसकी आय प्रतिमाह 10 हजार रूपए हो, यह सुनिश्चित करने के लिए स्व-सहायता समूहों के माध्यम से कार्य जारी हैं। प्रदेश में 43 लाख से अधिक बहनें स्व-सहायता समूह से जुड़ी हैं। इन समूहों को मात्र 2 प्रतिशत ब्याज पर पैसा मिलता है, बाकी ब्याज राज्य सरकार द्वारा भरा जाता है। बहनों को स्थानीय निकाय के चुनाव में 50 प्रतिशत आरक्षण है। नेतृत्व क्षमता वाली बहनें, कहीं मेयर, कहीं जिला पंचायत अध्यक्ष, कहीं सरपंच, कहीं नगर पालिका-नगर पंचायत की अध्यक्ष हैं। वे सरकार चलाने का काम कर रही हैं। बहनों के सशक्तिकरण एवं कल्याण का महायज्ञ जारी रहेगा।

अदभुत होगी लाड़ली बहना योजना

राज्य सरकार लाड़ली लक्ष्मी के बाद लाड़ली बहना योजना क्रियान्वित करने जा रही है। केवल अमीर परिवारों, इनकम टैक्स देने वाले परिवारों को छोड़ कर बाकी सभी बहनों के खाते में लाड़ली बहना योजना में हर महीने एक हजार रूपए जारी किए जाएंगे। इस प्रकार साल में 12 हजार रूपए बहनों को प्राप्त होंगे जिससे वे अपना और अपने बच्चों का ध्यान रख सकेंगी, पोषण आहार ले सकेंगी और जिंदगी की जरूरी आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगी। बहनों के सशक्तिकरण के लिए यह योजना अदभुत होगी।

प्रदेश में बढ़ रहे हैं रोजगार और स्व-रोजगार के अवसर

केवल शिक्षा ही नहीं, शिक्षा के साथ रोजगार भी आवश्यक है। प्रदेश में एक लाख से अधिक शासकीय पदों पर भर्ती का क्रम जारी है। शासकीय नौकरियों के साथ युवाओं के लिए स्व-रोजगार के अवसर भी सृजित किए जा रहे हैं। कई बच्चे स्टार्टअप चला रहे हैं, उन्हें विशेष सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना में अपना व्यापार या उद्यम आरंभ करने के लिए 50 लाख रूपए तक के लोन की व्यवस्था है। बैंक लोन देता है जिस की गारंटी सरकार देती है। राज्य सरकार ही गारंटी भरती है और ब्याज पर सब्सिडी की व्यवस्था है। अलग-अलग वर्गों के लिए कई विशेष योजनाएँ हैं। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, मुद्रा योजना में स्व-रोजगार के लिए लोन उपलब्ध कराया जा रहा है। स्ट्रीट वेंडर जैसी योजना, हाथ ठेले, सड़क-फुटपाथ पर गुमटी में छोटा-मोटा काम धंधा करने वालों के लिए संजीवनी बनी है। शहरों और गाँव में भी बिना ब्याज का ऋण दिया जाता है, जिससे व्यक्ति अपना कारोबार आरंभ कर सकें। प्रदेश में

लाखों लोगों को ऋण दिया गया है, यह प्रक्रिया लगातार जारी रहेगी। छोटे उद्योग-धंधे जल्दी लग सकें, इस उद्देश्य से लघु व्यापारी और छोटे उद्योग डालने वालों को एमएसएमई में कई सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। बड़ा निवेश भी आ रहा है। हाल ही में संपन्न ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में 15 लाख 42 हजार 550 करोड़ रूपए के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

भाषा को हम प्रगति के रास्ते में रोड़ा नहीं बनने देंगे

अंग्रेजी के कारण कई बार प्रतिभा और बुद्धि होने के बाद भी गरीब और मध्यमवर्गीय बेटा-बेटी मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई नहीं कर पाते। अंग्रेजी का ज्ञान न होने से पढ़ाई छोड़ देते हैं। मध्यप्रदेश में हमने क्रांतिकारी कदम उठाया है। मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी अब हिंदी में की जाएगी। भाषा को हम प्रगति के रास्ते में रोड़ा नहीं बनने देंगे। राज्य सरकार एक नहीं अनेक जन-कल्याणकारी कार्य करते हुए अपनी जनता की जिंदगी बदलने का प्रयास कर रही है।

समाज और सरकार के साथ प्रयास करने से प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति संभव

प्रदेशवासियों की सेवा और उनकी जिंदगी बदलने के लिए राज्य सरकार कोई कसर नहीं छोड़ रही है। विकास यात्रा इसी उद्देश्य से आरंभ किया गया अभियान है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के द्वारा आत्म-निर्भर भारत के निर्माण के संकल्प के क्रम में हमें आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश बनाना है। समाज और सरकार के साथ प्रयास करने से प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति संभव है।

सरकार और समाज के साथ आने से ही स्वच्छता सहित कई क्षेत्रों में मध्यप्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है। काम और करना है, इसके लिए आपका सहयोग चाहिए। हम साथ मिल कर सामाजिक अभियान चलाएँ। हमारा गाँव स्वच्छ रहे, हम जन्म-दिन पर पेड़ लगाएँ और पर्यावरण बचाने का काम करें, पानी और बिजली व्यर्थ न जाए इसकी चिंता करें। बेटी का सम्मान करें, बहन-बेटी और बच्चे पढ़ें तथा हमारा गाँव, मोहल्ला, नगर नशा मुक्त हो, इसके लिए प्रयास करते रहे। मिल कर अपना गाँव, मोहल्ला और नगर बनाएँ। सरकार की योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुँचे, इसमें सहयोग करें। मध्यप्रदेश में सब सुखी हों, सब निरोगी हो, सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो, इस भाव को साकार करें। ▪

विकास यात्रा, विजय यात्रा के रूप में आगे बढ़ेगी - विष्णुदत्त शर्मा

भारतीय जनता पार्टी की सरकार विकास यात्रा के माध्यम से जनता के बीच जाकर उन्हें सरकार की उपलब्धियों की जानकारी दे रही है। विकास यात्रा नागरिकों से संवाद स्थापित कर पात्र हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं का लाभ भी प्रदान कर रही है। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में विकास की गंगा बह रही है। विकास यात्रा भारतीय जनता पार्टी की विजय यात्रा को और मजबूती देने का काम कर रही है। विकास यात्रा विजय यात्रा के रूप में आगे बढ़ेगी।

मोदी सरकार की योजनाओं से देश के गरीबों के सपने पूरे हो रहे

2014 में श्री नरेन्द्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री बनते ही संकल्प लिया था कि देश में अब गरीबी हटाने का केवल कोरा नारा नहीं चलेगा, बल्कि उनका जीवन सकारात्मक रूप से बदलने का अभियान चलाया जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में संचालित विभिन्न गरीब हितैषी योजनाओं से देश के गरीबों के सपने पूरे हो रहे हैं। देश न सिर्फ विकास पथ पर तेज गति से अग्रसर है बल्कि वैश्विक मंचों पर भी सम्मान प्राप्त कर रहा है। अन्त्योदय का जो विचार दीनदयाल जी ने हमें दिया, उस विचार को योजनाओं के माध्यम से साकार करने का काम केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार कर रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना से 4 करोड़ गरीब परिवारों के घर का सपना पूरा करने का काम प्रधानमंत्री मोदी जी ने पूरा किया है। पैसों के अभाव में कोई गरीब इलाज से वंचित न हो इसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने आयुष्मान भारत योजना प्रारंभ कर हर गरीब को 5 लाख रूपये तक का निःशुल्क इलाज का अधिकार दिया।

मुख्यमंत्री जी के अभिनव निर्णय से प्रदेश में नशाखोरी पर अंकुश लगेगा

भाजपा सरकार प्रदेश में शांति, खुशहाली और सदभावना स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारतीय जनता पार्टी हमेशा नशाखोरी के खिलाफ रही है। शराबखोरी से कई घर तबाह और बर्बाद होते है। भारतीय जनता पार्टी इस सामाजिक बुराई को खत्म करने और नशामुक्त मध्यप्रदेश के लिए संकल्पित है। प्रदेश में शराब के सारे अहाते बंद होंगे। मंदिर, स्कूल और सार्वजनिक स्थलों के 100 मीटर के आसपास कोई भी शराब दुकान नहीं खुलेगी। साथ ही शराब पीकर वाहन चलाने वालों पर कठोर कार्यवाही होगी। इस अभिनव निर्णय से प्रदेश में नशाखोरी और अपराधों पर अंकुश लगेगा।

बेटी अब अभिशाप नहीं वरदान बनी

एक समय था जब बेटियों के पैदा होने पर उन्हें अभिशाप माना जाता था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ अभियान और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने लाड़ली लक्ष्मी अभियान चलाकर बेटियों को लखपति बनाया। आज बेटियां घर की ताकत बनी हैं, बेटियां अब अभिशाप नहीं, वरदान बन चुकी है।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में संवेदनशील मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने लाड़ली बहना योजना शुरू करने का ऐतिहासिक फैसला लिया है। इस योजना में गरीब परिवारों की बहनों को 1 हजार रुपये हर महीने मिलेगें।

कार्यकर्ता आमजन को योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए परिश्रम कर रहे हैं

कायाकल्प अभियान में मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने प्रदेश की 413 नगरीय निकायों में 750 करोड़ रूपए की लागत से विभिन्न सड़कों के कायाकल्प की स्वीकृति और 350 करोड़ रूपए की प्रथम किश्त सिंगल क्लिक से अंतरित की। विकास के लिए मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में भाजपा की सरकार प्रतिबद्ध है। जनता ने मुक्त हस्त से भाजपा को आशीर्वाद दिया है, पूर्ण विश्वास है कि विधानसभा चुनाव में भाजपा ऐतिहासिक मतों से विजयी होगी। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता प्रत्येक बूथ पर जाकर केन्द्र और प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ आमजन को दिलाने के लिए दिन रात परिश्रम कर रहे है। ▪

महाकुंभ कोल समाज की जिंदगी बदलने का अभियान: शिवराज सिंह चौहान

शबरी जयंती पर आयोजित महाकुंभ कोल जनजाति समाज की जिंदगी बदलने का अभियान है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वैभवशाली, गौरवशाली और समृद्ध भारत का निर्माण हो रहा है।

देश में गरीबों को पक्का मकान और नि:शुल्क राशन मिल रहा है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने मुख्यमंत्री जनसेवा अभियान के माध्यम से राशन के लिए 83 लाख नाम जोड़े। गाँव- गाँव में विकास यात्रायें जा रही है। गाँव और शहरों में विकास के काम हो रहे हैं।

18 सितंबर को जबलपुर में राजा शंकरशाह, रघुनाथशाह की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री श्री अमित शाह जी के नेतृत्व में तय किया था कि जनजातीय समाज का संपूर्ण विकास करेंगे। 18 सितंबर को 14 घोषणाएं की थीं। उन घोषणाओं को पूरा कर जनजातीय समाज की जिंदगी बदलने का प्रयास किया है। पेसा नियम से जनजातीय क्षेत्रों की तकदीर और तस्वीर बदल रही है। शबरी जयंती पर आयोजित महाकुंभ कोल जनजाति समाज की जिंदगी बदलने का अभियान है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वैभवशाली, गौरवशाली और समृद्ध भारत का निर्माण हो रहा है। देश में गरीबों को पक्का मकान और निःशुल्क राशन मिल रहा है।

भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने मुख्यमंत्री जनसेवा अभियान के माध्यम से राशन के लिए 83 लाख नाम जोड़े। गाँव- गाँव में विकास यात्रायें जा रही है। गाँव और शहरों में विकास के काम हो रहे हैं।

भाजपा विकास करती है जबकि कांग्रेस जनता से उनका हक छीनती है, जनकल्याण की योजनायें बंद करती है। जो आपका भला करे, उसका साथ दें। भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ चलिए।

कोलगढ़ी का साढ़े 3 करोड़ की लागत से जीर्णोधार होगा, माता शबरी की मूर्ति लगेगी

रीवा के त्योंथर में स्थित कोलगढ़ी गर्व का विषय है। यहां कोल राजाओं ने राज किया था। राजा नागल कोल जी अंतिम शासक थे। अब जनजातीय गौरव कोलगढ़ी का साढ़े तीन करोड़ की लागत से जीर्णोधार किया जाएगा। कोलगढ़ी में बाउंड्रीवॉल और पार्क का निर्माण होगा।

वहां माता शबरी की प्रतिमा स्थापित होगी। विंध्य की जनजातीय संस्कृति को दर्शाने के लिए शिलालेख, रीति-रिवाज, वेशभूषा और इतिहास को दर्शाने की व्यवस्था भी की जाएगी। वहां संग्रहालय बनेगा जिसमें कोल समाज के महापुरुषों और अंतिम कोल राजा का तैल चित्र लगेगा। मैहर में स्थित माता शबरी आश्रम का विकास करेंगे साथ ही कोल समाज के जितने धार्मिक स्थल हैं उनका विकास करेंगे।

कोल समाज के बेटा-बेटियों को व्यवसाय के लिए सब्सिडी पर लोन उपलब्ध कराया जाएगा जिसकी गारंटी सरकार लेगी। कोल समाज के छात्रों के लिए रीवा में पोस्ट ग्रेजुएट हॉस्टल और सतना में बेटियों के लिए हॉस्टल बनाया जाएगा। विशेष पिछड़ी जनजातियों बैगा, भारिया, सहरिया की बहनों को एक हजार रुपया प्रतिमाह आहार अनुदान दिया जाता है। ठीक उसी तरह कोल समाज की बहनों को भी आहार अनुदान योजना के तहत प्रतिमाह एक हजार रुपया देने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार करेगी। कोल समाज के बच्चे बड़ी संख्या में पढ़ने के लिए रीवा और सतना आते हैं। रीवा में पोस्ट ग्रेजुएट हॉस्टल का निर्माण करेंगे और सतना में बेटियों के लिए हॉस्टल बनाया जाएगा, ताकि बेटा-बेटी पढ़ सकें। ▪

सर्वस्पर्शी, सर्वव्यापी, सर्व समावेशी व विकास को समर्पित बजट- शिवराजसिंह चौहान

मोदी सरकार ने अपने बजट में समाज के हर वर्ग का ध्यान रखा है। बच्चों और किशोरों के लिए राष्ट्रीय डिजीटल पुस्तकालय की स्थापना एक स्वागत योग्य कदम है। 740 एकलव्य विद्यालयों के लिए 38 हजार 500 शिक्षक एवं सपोर्ट स्टॉफ की भर्ती की जायेगी। युवाओं के लिए पीएम कौशल योजना-4 प्रारंभ की गई है, जिसमें देश भर में 40 स्किल सेंटर स्थापित किए जाऐंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार का बजट सर्वस्पर्शी है, जिसने समाज के प्रत्येक वर्ग को छुआ है। सर्वव्यापी है, क्योंकि देश के प्रत्येक राज्य के लिए है। यह सर्वसमावेशी और विकास को समर्पित बजट है। प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार ने सामाजिक न्याय, समानता, सम्मान, समान अवसर उपलब्ध कराने का जो संकल्प लिया है, यह उसको पूरा करने वाला और इज ऑफ लिविंग को बढ़ावा देने वाला आम बजट है। यह केवल वर्ष 2023-24 का बजट नहीं है, बल्कि 100 साल बाद भारत कैसा होगा, की संकल्पना पर आधारित बजट है।

बजट में रखा हर वर्ग पर ध्यान

मोदी सरकार ने अपने बजट में समाज के हर वर्ग का ध्यान रखा है। बच्चों और किशोरों के लिए राष्ट्रीय डिजीटल पुस्तकालय की स्थापना एक स्वागत योग्य कदम है। 740 एकलव्य विद्यालयों के लिए 38 हजार 500 शिक्षक एवं सपोर्ट स्टॉफ की भर्ती की जायेगी। युवाओं के लिए पीएम कौशल योजना-4 प्रारंभ की गई है, जिसमें देश भर में 40 स्किल सेंटर स्थापित किए जाऐंगे। मध्यप्रदेश में भी ग्लोबल स्किल पार्क जैसी परियोजनाएं प्रारंभ की जाएंगी, जिनसे स्किल्ड मैनपॉवर तैयार कर उनको रोजगार दिया जायेगा। तीन साल में 47 लाख युवाओं को वजीफा सहायता प्रदान करने के लिए अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षुता प्रोत्साहन योजना के तहत प्रत्यक्ष लाभ का हस्तांतरण शुरू किया गया है। बजट में महिला सम्मान विकास पत्र जारी करने का फैसला लिया गया है और बहनों को 2 लाख रूपए की बचत पर सालाना 7.5 प्रतिशत ब्याज मिलेगा। वरिष्ठ नागरिकों के लिए बचत खाते में रखी जाने वाली राशि साढ़े 4 लाख से बढ़ाकर 9 लाख करने का फैसला लिया गया है। वरिष्ठ नागरिक बचत योजना को भी 15 लाख से बढ़ाकर 30 लाख कर दिया गया है। देश के मध्यम वर्ग को राहत देने के लिए पुरानी टैक्स व्यवस्था को समाप्त किया गया है और नौकरीपेशा लोगों के साथ ही जिनकी आय 7 लाख रूपए तक है, अब उन्हें टैक्स नहीं देना होगा। देश की विशेष पिछड़ी जनजातियों के लिए विकास मिशन शुरू करने का निर्णय लिया गया है, जिसके अंतर्गत 15000 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है।

रसायन मुक्त कृषि को मिलेगा बढ़ावा

बजट में पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन हेतु कृषि ऋण के लक्ष्य को बढ़ाकर 20 लाख करोड़ रूपए किया गया है। अगले तीन सालों तक 1 करोड़ किसानों को प्राकृतिक कृषि के लिए मदद की जायेगी और 10 हजार बायो इनपुट रिसोर्सेस सेंटर बनाए जायेंगे। फर्टीलाइजर्स के दुष्प्रभावों से धरती को बचाने का यह दूरगामी अभियान है। 6 हजार करोड़ रूपए के फंड से मत्स्य संपदा योजना मछुआरों और इससे जुड़े छोटे व्यवसायों को संजीवनी प्रदान करेगी।

देश मोटे अनाज का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। नया बजट देश को श्रीअन्न का ग्लोबल हब बनाने के लिए प्रधानमंत्री जी की कटिबद्धता को दोहराता है। इसमें हैदराबाद में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च की स्थापना का प्रावधान किया गया है। वन डिस्ट्रक्ट-वन प्रोडेक्ट एवं हेंडीक्रॉफ्ट आयटम को बढ़ावा दिये जाने के प्रस्ताव भी स्वागत योग्य हैं।

तेजी से विकसित होगी अधोसंरचना

बजट में 5जी सर्विस पर चलने वाले एप को विकसित करने के लिए इंजीनियरिंग संस्थाओं में 100 लैब बनाने का प्रावधान है। रेल बजट 2 लाख 40 हजार करोड़ रूपए कर दिया गया है, जो 2013-14 के रेल बजट से 9 गुना ज्यादा है। इनवेस्टमेंट खर्च को 33 प्रतिशत बढ़ाया गया है एवं राज्यों को मिलने वाले इंट्रेस्ट फ्री लोन को एक साल के लिए आगे बढ़ाया गया है, जिसका अधोसंरचना के विकास में राज्य लाभ उठा सकते हैं। गरीबों के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना में 66 प्रतिशत की वृद्धि कर 79 हजार करोड़ रूपया कर दिया गया है। एयर कनेक्टविटी बढ़ाने के लिए नये 50 एयरपोर्ट, हेलीपेड, वाटर एयरो ड्रोन विकसित किए जायेंगे। शहरी बुनियादी ढांचे के विकास कोष के लिए 10 हजार करोड़ रूपए हर साल खर्च किए जाएंगे। देश में 2014 के बाद 157 मेडिकल कॉलेज खोले गए हैं, अब बजट में 157 नर्सिंग कॉलेज भी खोले जाने का प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोरोना एवं रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण जो परिस्थितियां बनीं, उसके बावजूद 45 लाख करोड़ रूपए बजट का आकार करना भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को दर्शाता है।

विकास के साथ धरती को बचाने की चिंता

नए बजट में जहां विकास की ललक दिखाई देती है, वहीं इससे धरती को बचाने की चिंता भी झलकती है। यह बजट धरती को बचाने के लिए ग्रीन ग्रोथ के लक्ष्य पर आधारित है। इसमें नेशनल हाइड्रोजन मिशन के लिए

19 हजार 700 करोड़ रूपए का आवंटन किया गया है। 50 लाख टन ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। एनर्जी ट्रांजेक्शन के लिए भी 35 हजार करोड़ रूपए का फंड दिया गया है। यह प्रधानमंत्री जी की जीरो कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य की प्राप्ति की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बजट में 10 हजार करोड़ के निवेश से सरक्यूलर अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए गोवर्धन योजना के तहत 500 नये वेस्ट टू वेल्थ प्लांट स्थापित किए जाने का प्रावधान किया गया है।

सात प्राथमिकताओं वाला बजट

देश के नागरिकों को बड़े अवसर उपलब्ध कराना, रोजगार सृजन को मजबूत प्रोत्साहन, व्यापक आर्थिक स्थिरता को मजबूत करना इस बजट का मुख्य एजेंडा है। बजट की सात सप्तऋषि प्राथमिकताएं हैं, जिनमें समावेशी विकास, लास्ट मील डिलेवरी, बुनियादी ढांचा और निवेश, क्षमता को उजागर करना, हरित विकास, युवा एवं वित्तीय क्षेत्र को मजबूती शामिल हैं।

मध्यप्रदेश के लिये 13 हजार 607 करोड़ का रेल बजट आवंटन

वर्ष 2009 से 2014 के औसत आवंटन 632 करोड़ रूपये से वर्ष 2023-24 का आवंटन 13607 करोड़ रूपये है जो 21.5 गुना अधिक है। इस बजट आवंटन से मध्यप्रदेश में विभिन्न रेल परियोजनाओं एवं अधो-संरचनात्मक कार्यों के साथ-साथ रेलवे के आधुनिकीकरण को गति मिलेगी। मध्यप्रदेश में वर्तमान में 86 हजार 336 करोड़ रूपये की लागत के 40 रेल प्रोजेक्ट में 6,759 किलोमीटर के कार्य चल रहे हैं।

प्रदेश के 80 रेलवे स्टेशन बनेंगे विश्व-स्तरीय

अमृत भारत स्टेशन स्कीम में मध्यप्रदेश के 80 रेलवे स्टेशन विश्व-स्तरीय स्तर के बनेंगे। इनमें अकोदिया, आमला, अनूपपुर, अशोकनगर, बालाघाट, बानापुरा, बरगवाँ, ब्यौहारी, बेरछा, बैतूल, भिण्ड, भोपाल, बिजुरी, बीना, ब्यावरा-राजगढ़, छिंदवाड़ा, डबरा, दमोह, दतिया, देवास, गाडरवाड़ा, गंजबासौदा, घोड़ाडोंगरी, गुना, ग्वालियर, हरदा, हरपालपुर, नर्मदापुरम, इंदौर, इटारसी जंक्शन, जबलपुर, जुन्नारदेव, करेली, कटनी जंक्शन, कटनी मुड़वारा, कटनी साउथ, खाचरौद, खजुराहो, खण्डवा, खिरकिया, लक्ष्मीबाई नगर, मैहर, मक्सी, मण्डला फोर्ट, मंदसौर, एमसीएस छतरपुर, मेघनगर, मुरैना, मुलताई, नागदा, नैनपुर, नरसिंहपुर, नीमच, नेपानगर, ओरछा, पाण्डुर्णा, पिपरिया, रतलाम, रीवा, रुठियाई, साँची, संत हिरदाराम नगर, सतना, सागर, सीहोर, सिवनी, शहडोल, शाजापुर, शामगढ़, श्योपुरकलां, शिवपुरी, श्रीधाम, शुजालपुर, सीहोरा रोड, सिंगरौली, टीकमगढ़, उज्जैन, उमरिया, विदिशा और विक्रमगढ़ आलोट शामिल हैं। ▪

रीचिंग द लास्ट माइल

देश में एक पुरानी अवधारणा रही है कि लोगों का कल्याण और देश का विकास सिर्फ धन से ही होता है। ऐसा नहीं है। देश और देशवासियों के विकास के लिए धन तो जरूरी है ही लेकिन धन के साथ ही मन भी चाहिए।

सरकारी कार्यों और सरकारी योजनाओं की सफलता की सबसे अनिवार्य शर्त है- Good Governance, सुशासन, संवेदनशील शासन, जन सामान्य को समर्पित शासन।

आमतौर पर ये परंपरा रही है कि बजट के बाद, बजट के संदर्भ में संसद में चर्चा होती है। और ये जरूरी भी है, उपयोगी भी है। लेकिन सरकार बजट पर चर्चा को एक कदम आगे लेकर गई है। बीते कुछ वर्षों से सरकार ने बजट बनाने से पहले भी और बजट के बाद भी सभी स्टेकहोल्डर्स से गहन मंथन की नई परंपरा शुरू की है। ये Implementation के लिहाज से, Time Bound Delivery के लिहाज से बहुत ही महत्वपूर्ण है। इससे Tax payers Money की पाई-पाई का सही इस्तेमाल भी सुनिश्चित होता है। Reaching The Last Mile, जो महात्मा गाँधी कहते थे की

आपकी नीतियां, आपकी योजनाएं आखिरी छोर पर बैठे हुए व्यक्ति तक कितनी जल्दी पहुँचती है, कैसे पहुँचती है, यह बहुत महत्वपूर्ण है।

देश में एक पुरानी अवधारणा रही है कि लोगों का कल्याण और देश का विकास सिर्फ धन से ही होता है। ऐसा नहीं है। देश और देशवासियों के विकास के लिए धन तो जरूरी है ही लेकिन धन के साथ ही मन भी चाहिए। सरकारी कार्यों और सरकारी योजनाओं की सफलता की सबसे अनिवार्य शर्त है- Good Governance, सुशासन, संवेदनशील शासन, जन सामान्य को समर्पित शासन। जब सरकार के काम Measurable होते हैं, उसकी निरंतर मॉनीटरिंग होती है तो स्वाभाविक है की आप समय सीमा में निर्धारित किये हुए लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं Desired Result मिल सकते हैं। इसलिए Good Governance पर हम जितना जोर देंगे, उतना ही Reaching The Last Mile का लक्ष्य आसानी से पूरा होगा। देश में पहले दूर-दराज के क्षेत्रों तक वैक्सीन पहुंचने में कई-कई दशक लग जाते थे। देश वैक्सीनेशन कवरेज के मामले में बहुत पीछे था। देश के करोड़ों बच्चों को, खासकर गांवों और ट्राइबल बेल्ट में रहने वाले बच्चों को वैक्सीन के लिए बरसों का इंतजार करना पड़ता था। अगर पुरानी अप्रोच के साथ काम करते तो भारत में वैक्सीनेशन कवरेज को शत-प्रतिशत करने में कई दशक और बीत जाते। नई अप्रोच के साथ काम शुरू किया, मिशन इंद्रधनुष शुरू किया और पूरे देश में वैक्सीनेशन की व्यवस्था को सुधारा। जब कोरोना वैश्विक महामारी आई, तो इस नई व्यवस्था, नए सिस्टम का लाभ दूर-सुदूर वैक्सीन पहुंचाने में मिला। Good Governance का इसमें बहुत बड़ा रोल है, ताकत है जिसने Last Mile delivery को संभव बनाया।

Reaching The Last Mile की अप्रोच और सैचुरेशन की नीति, एक दूसरे की पूरक है। एक समय था जब गरीब मूल सुविधाओं के लिए सरकार के पास चक्कर लगाता था, किसी बिचौलिये की तलाश में रहता था जिसके कारण corruption भी बढ़ता था और लोगों के अधिकारों का हनन भी होता था। अब सरकार गरीब के दरवाजे पर जाकर उसे सुविधाएं दे रही है। जिस दिन हम ठान लेंगे कि हर मूलभूत सुविधा, हर क्षेत्र में, हर नागरिक तक बिना भेद भाव के पहुंचाकर ही रहेंगे, तो देखिएगा कितना बड़ा परिवर्तन स्थानीय स्तर पर कार्य संस्कृति में आता है।

सैचुरेशन की नीति के पीछे यही भावना है। जब लक्ष्य, हर एक के पास पहुंचने का होगा, हर हितधारक के पास पहुंचने का होगा, तो फिर किसी के साथ भेदभाव की, भ्रष्टाचार की, भाई-भतीजावाद की गुंजाइश ही नहीं रह जाएगी। और तभी Reaching The Last Mile का लक्ष्य भी आप पूरा कर पाएंगे। पहली बार देश में पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से स्ट्रीट वेंडर्स को फॉर्मल बैंकिंग से जोड़ा गया है। पहली बार देश में बंजारा, घुमंतु-अर्ध घुमंतु वर्ग के लिए वेलफेयर बोर्ड बना है। गांवों में बने 5 लाख से ज्यादा कॉमन सर्विस सेंटर्स, सरकार की सेवाओं को गांवों तक ले गए हैं। देश में टेलीमेडिसीन के 10 करोड़ केसेस पूरे हुए हैं। ये भी स्वास्थ्य को लेकर Reaching The Last Mile की भावना का ही प्रतिबिंब है।

भारत में जो आदिवासी क्षेत्र हैं, ग्रामीण क्षेत्र हैं, वहां आखिरी छोर तक Reaching The Last Mile के मंत्र को ले जाने की जरूरत है। बजट में भी इस पर विशेष ध्यान दिया गया है। Reaching The Last Mile के लक्ष्य को पूरा करने के लिए ही जल-जीवन मिशन के लिए हजारों करोड़ रुपए का प्रावधान बजट में किया गया है। साल 2019 तक देश के ग्रामीण इलाकों में सिर्फ तीन करोड़ घरों में ही नल से जल आता था। अब इनकी संख्या बढ़कर 11 करोड़ से ज्यादा हो चुकी है, और इतने कम समय में भी। सिर्फ एक साल के भीतर ही देश में लगभग 60 हजार अमृत सरोवरों का काम शुरू हुआ है और अब तक 30 हजार से अधिक अमृत सरोवर बन भी चुके हैं। ये अभियान, दूर-सुदूर में रहने वाले उस भारतीय का जीवन स्तर सुधार रहे हैं, जो दशकों से ऐसी व्यवस्थाओं का इंतजार करता था। यहाँ रुकना मंजूर नहीं है।

हमें एक मैकेनिज्म क्रिएट करना होगा ताकि पानी के नए कनेक्शन्स में हम water consumption का pattern देख सकें। इस बात की भी समीक्षा करनी है कि पानी समिति को और सशक्त करने के लिए क्या किया जा सकता है। गर्मी का मौसम आ ही गया है। जल संरक्षण के लिए अभी से हम पानी समितियों का क्या इस्तेमाल कर सकते हैं, ये भी सोचना होगा। बारिश के पहले ही catch the rain movement के लिए लोक शिक्षण हो जाए, लोगों की सक्रियता हो जाए, जैसे ही पानी आये, काम शुरू हो जाए। बजट में गरीबों के घर के लिए करीब 80 हजार करोड़ रुपए रखे हैं। Housing for All की मुहिम को तेजी से आगे बढ़ाना होगा। हाउसिंग को technology से कैसे जोड़ें, कम खर्च में ज्यादा टिकाऊ और मजबूत घर कैसे बने? ग्रीन एनर्जी, जैसे सोलर पावर का फायदा कैसे हो? ग्रुप हाउसिंग के नए मॉडल, गांव और शहरों में भी स्वीकार्य हों, ये क्या हो सकते हैं? इस पर ठोस चर्चा की जरूरत है। देश के ट्राइबल समाज के विशाल पोटेंशियल को टैप करने के लिए पहली बार देश में बड़े स्तर पर काम हो रहा है।

बजट में भी ट्राइबल डेवलपमेंट को प्रमुखता दी गयी है। एकलव्य मॉडल रेजीडेंशियल स्कूलों में शिक्षकों और स्टाफ की भर्ती का बहुत बड़ा प्रावधान किया गया है। एकलव्य मॉडल स्कूलों में ये भी देखना होगा कि विद्यार्थियों का फीडबैक क्या है, शिक्षकों का फीडबैक क्या है?

इन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को देश के बड़े शहरों में एक्सपोजर कैसे मिले, इनमें अटल टिंकरिंग लैब्स ज्यादा से ज्यादा कैसे बनें, इस दिशा में भी सोचना होगा। अगर इन स्कूलों में अभी से स्टार्ट-अप्स के लिए, डिजिटल मार्केटिंग के लिए वर्कशॉप्स शुरू करवाएं तो इसका कितना बढ़ा लाभ आदिवासी समाज को होगा। जब ये बच्चे एकलव्य मॉडल स्कूलों से पढ़कर निकलेंगे तो उन्हें पहले से पता होगा कि अपने क्षेत्र के ट्राइबल प्रॉडक्ट को उन्हें कैसे प्रमोट करना है, कैसे ऑनलाइन उनकी ब्राडिंग करनी है।

पहली बार आदिवासियों में भी जो सबसे वंचित हैं, उनके लिए एक विशेष Mission शुरु कर रहे हैं। देश के 200 से अधिक जिलों में 22 हजार से अधिक गांवों में ट्राइबल साथियों तक तेजी से सुविधाएं पहुंचानी है। वैसे ही लघुमति समाज में, खास करके मुसलमान समाज में पशमंदा समाज है, वहाँ तक लाभ कैसे पहुँचे, जो आज भी आजादी की इतने साल बाद भी बहुत पीछे रह गए हैं। इस बजट में सिकल सेल से पूरी तरह से मुक्ति का लक्ष्य भी रखा गया है। इसके लिए whole of the nation approach की जरूरत है। इसलिए हेल्थ से जुड़े हर स्टेकहोल्डर्स को तेजी से काम करना होगा।

Aspirational District Program, Reaching The Last Mile के लिहाज से एक सक्सेस मॉडल बन कर उभरा है। इसी अप्रोच पर अब देश के 500 ब्लाक्स में aspirational block कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। Aspirational Block programme के लिए हमें comparative parameters को ध्यान में रखते हुए वैसे ही काम करना है जैसे Aspirational Districts के लिए काम किया है। हर ब्लॉक में भी एक दूसरे के लिए प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाना है। ▪

बजट सभी के विकास की रूपरेखा - जगत प्रकाश नड्डा

अमृत काल का पहला आम बजट 2023-24 एक लोक-कल्याणकारी और देश के विकास के प्रति समर्पित दूरदर्शी बजट है। यह गाँव, गरीबों, किसानों, आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों, शोषितों, वंचितों, दिव्यांगजनों, आर्थिक रूप से पिछड़े तथा मध्यम वर्ग के लोगों को सशक्त और सक्षम बनाने वाला बजट है। यह ग्राम विकास, कृषि विकास, श्रमिक कल्याण, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट और डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर सहित पूरे देश के समग्र विकास को समर्पित बजट है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश के नागरिकों को सामाजिक न्याय, समानता, सम्मान और समान अवसर उपलब्ध कराने वाला बजट है। यह बच्चों की पढ़ाई, मध्यम वर्ग की कमाई और बुजुर्गों की भलाई पर बल देने वाला बजट है। ऐसे सर्व-स्पर्शी, सर्व-समावेशी एवं देश के जन-जन और हर क्षेत्र के सर्वांगीण कल्याण के प्रति समर्पित आम बजट के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण जी एवं उनकी पूरी टीम को बधाई।

आम बजट 2023-24 का एजेंडा है - नागरिकों के लिए बड़े अवसर उपलब्ध कराना, विकास और रोजगार सृजन को मजबूत प्रोत्साहन प्रदान करना और व्यापक आर्थिक स्थिरता को मजबूत करना। इस बजट की 7 अर्थात् सप्तर्षि प्राथमिकताएं है- •समावेशी विकास •लास्ट माइल डिलीवरी •बुनियादी ढांचा •निवेश •क्षमता को उजागर करना •हरित विकास •युवा और वित्तीय क्षेत्र की मजबूती। यह महज वर्ष 2023-24 के डेवलपमेंट का एजेंडा नहीं है, बल्कि देश के लिए विकसित अर्थव्यवस्था की बुनियाद रखने वाला ब्लू प्रिंट है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस बजट के माध्यम से मध्यम वर्ग के नौकरीपेशा लोगों को ऐतिहासिक तोहफा दिया है। अब नौकरी पेशा लोगों को 7 लाख रुपये सालाना की आय पर कोई टैक्स नहीं देना होगा। साथ ही, टैक्स स्लैब को भी घटा कर 5 तक सीमित कर दिया गया है। पिछड़े आदिवासी समूहों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए PMPBTG विकास मिशन शुरू किये जाने का निर्णय श्री नरेन्द्र मोदी सरकार की आदिवासी विकास के प्रति गंभीरता को दिखाता है। इस योजना के लिए लगभग 15 हजार करोड़ रुपये का कोष बनाया गया है जिससे PBTG बस्तियों में बुनियादी सुविधाएं दी जाएंगी।

बच्चों और किशोरों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय स्थापित किया जाना और अगले 3 साल में 740 एकलव्य स्कूलों के लिए 38 हजार 800 टीचर्स और सपोर्ट स्टाफ नियुक्त किए जाने का निर्णय एक स्वागत योग्य कदम है। पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन पर ध्यान देने के साथ कृषि ऋण लक्ष्य को बढ़ाकर 20 लाख करोड़ रुपये किये जाने के निर्णय का हृदय से स्वागत करता हूँ। अगले 3 साल तक 1 करोड़ किसानों को नेचुरल फॉर्मिंग में मदद की जाएगी। इसके लिए 10 हजार बायो इनपुट रिसोर्स सेंटर्स बनाए जाएंगे। युवाओं के सपनों को उड़ान देने के लिए पीएम कौशल विकास योजना 4.0 की घोषणा सर्वथा स्वागत योग्य कदम है। इसके तहत देश भर में 40 स्किल इंडिया सेंटर्स स्थापित किये जायेंगे जो युवाओं के कौशल में और निखार लाएगा और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करेगा। महिला सम्मान विकास पत्र जारी करने के निर्णय का भी स्वागत करता हूँ।

इसमें महिलाओं को अब 2 लाख रुपए की बचत पर सालाना 7.5 प्रतिशत ब्याज मिलेगा। वरिष्ठ नागरिकों के लिए सेविंग्स एकाउंट में रखी जाने वाली रकम की लिमिट को भी 4.5 लाख रुपए से बढ़ाकर 9 लाख रुपए करने का निर्णय भी एक अच्छी पहल है। साथ ही, वरिष्ठ नागरिक बचत योजना की लिमिट को भी 15 लाख से बढ़ा कर 30 लाख रुपये कर दिया गया है। ये योजनायें महिला सशक्तिकरण और वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। वर्ष 2023-24 का आम बजट 'Green Growth' के लक्ष्य का आधार है। नेशनल हाइड्रोजन मिशन के लिए 19,700 करोड़ रुपये आवंटित किया गया है। सरकार का 2030 तक 50 लाख टन हरित हाइड्रोजन उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। एनर्जी ट्रांजिशन के लिए 35,000 करोड़ रुपये का फंड दिया गया है।

रेलवे के लिए 2 लाख 40 हजार करोड़ रुपए का बजट दिया गया है जो कांग्रेस की यूपीए सरकार के समय के 2013-14 के बजट से 9 गुना अधिक है। इन्वेस्टमेंट खर्च को 33 प्रतिशत बढ़ाकर 10 लाख करोड़ रुपए किया जा रहा है जो 2019-20 की तुलना में लगभग 33 प्रतिशत अधिक है। राज्यों को मिलने वाले इंटरेस्ट-फ्री लोन को भी एक साल के लिए आगे बढ़ा दिया गया है।

पीएम आवास योजना का बजट बढ़ कर

69 हजार करोड़ रुपए कर दिया गया है। पीएम आवास योजना में 66 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दिखाती है कि श्री नरेन्द्र मोदी सरकार गरीबों के लिए कितनी संवेदनशील है। कोरोना संकट और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण उपजे वैश्विक संकट के बावजूद देश के बजट का आकार बढ़ाकर 45 लाख करोड़ रुपये करना भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को दर्शाता है। 2014 से मौजूद 157 मेडिकल कॉलेजों के साथ 157 नए नर्सिंग कॉलेज खोले जाएंगे। 2047 तक अनीमिया के उन्मूलन का लक्ष्य रखा गया है। रीजनल कनेक्टिविटी को बढ़ाने के लिए 50 नए एयरपोर्ट, हेलिपैड, वाटर एरो ड्रोन, एडवांस्ड लैंडिंग ग्राउंड्स का विकास किया जाएगा। सरकार शहरी बुनियादी ढांचा विकास कोष के लिए हर साल 10,000 करोड़ रुपये खर्च करेगी। यह शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर को और मजबूती देगी।

MSME को 9 हजार करोड़ रुपए की क्रेडिट गारंटी दी जाएगी। इससे उन्हें दो लाख करोड़ रुपए का एक्स्ट्रा कोलेटरल फ्री क्रेडिट भी मिल सकेगा। यह घरेलू अर्थव्यवस्था को एक नई मजबूती देगी और इससे रोजगार को भी बढ़ावा मिलेगा।

देश में 50 पर्यटन स्थलों को विकसित किया जाएगा। 10,000 करोड़ रुपये के कुल निवेश पर सर्कुलर अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए GOBARDAN योजना के तहत 500 नए वेस्ट-टू-वेल्थ प्लांट स्थापित किए जाएंगे। यह बजट आजादी के 100 साल बाद भारत की परिकल्पना का बजट है। इस बजट में किसान, मध्यम वर्ग, महिला से लेकर समाज के सभी वर्ग के विकास की रूपरेखा है। भारतीय अर्थव्यवस्था उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रही है। ▪

गरीब का जीवन सुखी बनाने हेतु भाजपा की सरकार: अमित शाह

यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, जिसने जनजातीय क्रांतिवीरों के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को रेखांकित करने के लिए स्मारक बनाने का निर्णय लिया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी की सरकार 200 करोड़ रुपये खर्च करके देश भर में 10 ऐसे स्मारक बना रही है। इन स्मारकों में वर्ष 1831 के कोल विद्रोह को भी समाहित किया जाएगा।

मध्यप्रदेश में बीच में थोड़े समय के लिए जब कांग्रेस की सरकार आई थी तो उस सरकार ने विकास को अवरूद्ध कर दिया था। उस सरकार ने वो सारे काम रोक दिये, जो शिवराज सरकार ने गरीबों के लिए, जनजातीय भाई-बहनों के कल्याण के लिए शुरू किए थे। लेकिन वो सरकार गिर गई और भाजपा सरकार ने फिर उन सारी योजनाओं को चालू कर दिया है। मोदी जी और शिवराज जी की भाजपा की डबल इंजन वाली सरकार प्रदेश के हर गरीब के जीवन को सुखी बनाने के लिए संकल्पित है।

अंत्योदय यानी समाज के गरीब से गरीब व्यक्ति का सम्मान के साथ कल्याण करना भाजपा सरकारों का संकल्प है।

मोदी सरकार पिछड़ों और गरीबों के लिए समर्पित

पहली बार जब 2014 में केंद्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार बनी तो उन्होंने कहा था मेरी सरकार आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों और गरीबों की सरकार है। बीते 9 वर्षों में मोदी जी ने इस बात को सच साबित किया है। कांग्रेस की सरकारों के समय गरीबों के घर में शौचालय नहीं होते थे।

मोदी सरकार ने 10 करोड़ गरीबों के घर में शौचालय बनवाएं। इनमें से सबसे ज्यादा शौचालय आदिवासी भाई बहनों के घरों में बनाए गए हैं। मोदी सरकार ने करोड़ों लोगों को घर, बिजली, गैस सिलेंडर, 5 लाख रूपए तक स्वास्थ्य का खर्चा दिया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कोरोना से सुरक्षा के लिए मुफ्त टीके भी लगवाए। मोदी सरकार बीते ढाई साल से देश के 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त अनाज दे रही है। कांग्रेस की सरकार के समय आदिवासियों के लिए, अनुसूचित जनजाति के लिए बजट में प्रावधान 24 हजार करोड़ था, जिसे मोदी सरकार ने बढ़ाकर 89 हजार करोड़ कर दिया है। पहले आदिवासी बच्चों के लिए 167 स्कूल स्वीकृत किए थे, मोदी सरकार ने 690 एकलव्य मॉडल स्कूल स्वीकृत किए हैं।

जनजातीय क्रांतिवीरों को सम्मान मिले, यही भाजपा का प्रयास

यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, जिसने जनजातीय क्रांतिवीरों के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को रेखांकित करने के लिए स्मारक बनाने का निर्णय लिया। प्रधानमंत्री श्री मोदी की सरकार 200 करोड़ रुपये खर्च करके देश भर में 10 ऐसे स्मारक बना रही है। इन स्मारकों में वर्ष 1831 के कोल विद्रोह को भी समाहित किया जाएगा। गोंड रानी दुर्गावती की बहादुरी हो, रानी कमलापति का बलिदान हो, अमर सेनानी बुद्धु भगत, जोवा भगत, मादाराम महतो की बात हो, इन सभी की स्मृतियों को हमारी मध्यप्रदेश सरकार ने संजोने का काम किया है।

पांच करोड़ के खर्चे से राजा शंकरशाह, रघुनाथ शाह का स्मारक भी हमारी शिवराज सरकार बना रही है और जनजातीय बंधुओं के लिए ढेर सारी योजनाएं शुरू की हैं। क्या कांग्रेस ने 70 सालों में जनजातीय समाज के एक भी बेटे या बेटी को राष्ट्रपति बनाया? लेकिन हमारी मोदी सरकार ने एक गरीब आदिवासी परिवार की बेटी श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति बनाकर समग्र जनजातीय समाज का सम्मान किया है। ▪

बदलाव लाई है लाड़ली लक्ष्मी योजना

मुख्यमंत्री श्री शिवराज जी

प्रदेश में महिला सशक्तिकरण का नया युग शुरू हुआ, नेतृत्व करेंगी बेटियाँ...

- **प्रदेश की लाड़ली बेटियों के खातों में पहुँची 107 करोड़ से अधिक की राशि**
- **बेटियों की उच्च शिक्षा की फीस सरकार भरेगी**
- **बेटियों के जीवन को बेहतर बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे**
- **16 वर्ष में वर्ष-दर-वर्ष बढ़ता गया लाड़ली लक्ष्मी योजना का महत्व**

लाड़ली लक्ष्मी योजना प्रदेश की बेटियों के जीवन में बदलाव लाने वाली योजना सिद्ध हुई है। योजना के क्रियान्वयन से सिर्फ बेटियों को छात्रवृत्ति राशि ही नहीं मिली बल्कि उनके सशक्तिकरण का नया युग प्रारंभ हुआ है। योजना के विस्तार से अब लाड़ली लक्ष्मी 2.0 में उच्च शिक्षा के लिए फीस भरने का कार्य भी सरकार करेगी। लाड़ली लक्ष्मी योजना के बाद अब लाड़ली बहना योजना में गरीब और मध्यम वर्गीय परिवार की महिलाएँ एक-एक हजार रूपए प्रतिमाह की राशि प्राप्त करेंगी। बालिकाओं और बहनों को सशक्त बना कर पर्यावरण-संरक्षण, नशा मुक्ति और अन्य सामाजिक अभियानों में उनकी भागीदारी से उन्हें नेतृत्व करने की भूमिका में लाने का प्रयास किया जा रहा है।

समाज का नजरिया भी बदला

वर्ष 2007 में प्रारंभ की गई लाड़ली लक्ष्मी योजना ने बालिकाओं के जीवन में परिवर्तन लाने का कार्य किया है। योजना के लागू होने से समाज की मनोवृत्ति में भी सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। बेटियों के जन्म को भी प्रोत्साहन मिला है। बाल विवाह जैसी कुरीतियों पर नियंत्रण हुआ है। शिक्षा में बालिकाओं की भागीदारी बढ़ी है। परिवार में जन्म लेने वाली बेटियों का विद्यालयों में शत-प्रतिशत नामांकन भी होने लगा है।

पहले परिवार में बेटे और बेटी के जन्म के समय ही भेदभाव देखने को मिलता था, तो कष्ट होता था। बेटियों को बोझ न रहने देने के संकल्प की पूर्ति में प्रारंभ में दिक्कतें भी आयी। राज्य सरकार द्वारा बजट की व्यवस्था और लाड़ली लक्ष्मी योजना को पढ़ाई से जोड़ कर क्रियान्वित किए जाने से बालिकाओं का आत्म-विश्वास बढ़ा है। यही वजह है कि आज शिक्षा के साथ बालिकाओं ने खेल और संस्कृति के क्षेत्र के अलावा अन्य गतिविधियों में भागीदारी के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। इनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी।

उच्च शिक्षा के लिए भी मदद करेगी सरकार

लाड़ली लक्ष्मी योजना 2.0 से महाविद्यालय में प्रवेश लेने पर फीस की व्यवस्था राज्य सरकार कर रही है। मेडिकल, इंजीनियरिंग, लॉ के पाठ्यक्रमों के साथ उच्च शिक्षा से जुड़े अन्य पाठ्यक्रमों के लिए भी राज्य सरकार फीस की व्यवस्था करेगी।

बेटियों की शिक्षा से परिवार सशक्त होगा। परिवारों के सशक्त होने से समाज और राष्ट्र सशक्त होता है। महिला सशक्तिकरण का नया युग प्रारंभ हुआ है। प्रारंभ में बालिकाओं को छात्रवृत्ति और साईकिल देने की ही व्यवस्था थी। शिक्षा में आर्थिक सहयोग से बालिकाओं को प्रत्यक्ष सहायता मिली है। अब बालिकाएँ नेतृत्व करने के लिए तैयार हो रही हैं।

बेटी और बहनों को सुविधाएँ और सम्मान

लाखों परिवारों की महिलाओं को प्रसव के पहले और बाद दो किश्तों में 16 हजार रूपए की राशि प्रदान करने, स्थानीय निकायों में 50 प्रतिशत पदों पर आरक्षण और पुलिस भर्ती में बेटियों के लिए 30 प्रतिशत पदों पर आरक्षण से परिवर्तन देखने को मिल रहा है। परिवारों में स्वागतम लक्ष्मी और बेटी के जन्म पर उत्सव का वातावरण और प्रसन्नता देखने को मिल रही है।

लाड़ली लक्ष्मी योजना प्रारंभ होने के बाद 16 वर्ष में ऐसी अनेक बच्चियाँ, जिन्हें गोद में खिलाया था, अब कॉलेज जाने लगी हैं। बच्चियाँ खूब आगे बढ़ें और यह सिद्ध करें कि वे किसी से कम नहीं हैं।

बेटियों से संवाद और मुलाकात के भावुक क्षण

यह कार्यक्रम सिर्फ एक कार्यक्रम न होकर परिवार में आकर भेंट और संवाद करने का विशेष अवसर है। विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वाली 5 लाड़ली लक्ष्मी बेटियों का सम्मान किया गया। ▪

बजट में युवाओं को अहमियत

विकसित भारत के विजन को लेकर देश की अमृतयात्रा का नेतृत्व हमारे युवा ही कर रहे हैं। इसलिए, अमृतकाल के प्रथम बजट में युवाओं को, और उनके भविष्य को सबसे ज्यादा अहमियत दी गई है।

हमारा एजुकेशन सिस्टम practical हो, industry oriented हो, ये बजट इसकी नींव मजबूत कर रहा है।

Skill और Education, ये अमृतकाल में देश के दो सबसे महत्वपूर्ण Tools हैं। विकसित भारत के विजन को लेकर देश की अमृतयात्रा का नेतृत्व हमारे युवा ही कर रहे हैं। इसलिए, अमृतकाल के प्रथम बजट में युवाओं को, और उनके भविष्य को सबसे ज्यादा अहमियत दी गई है। हमारा एजुकेशन सिस्टम practical हो, industry oriented हो, ये बजट इसकी नींव मजबूत कर रहा है। वर्षों से हमारा education sector, rigidity का शिकार रहा। हमने इसको बदलने का प्रयास किया है। हमने education और skilling को युवाओं के aptitude और आने वाले समय की डिमांड के हिसाब से reorient किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी लर्निंग और स्किलिंग, दोनों पर समान जोर दिया गया है। इस प्रयास में हमें टीचर्स का बहुत सपोर्ट मिला। इससे हमें अपने बच्चों को अतीत के बोझ से मुक्त करने का बहुत हौसला मिला है। इसने सरकार को एजुकेशन और स्किलिंग सेक्टर में और रिफॉर्म करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

नई टेक्नॉलॉजी, नई तरह के classroom के निर्माण में भी मदद कर रही है। कोविड के दौरान ये हमने अनुभव भी किया है। इसलिए आज सरकार ऐसे tools पर फोकस कर रही है, जिससे 'anywhere access of knowledge' सुनिश्चित हो सके। हमारे e-learning platform SWAYAM में 3 करोड़ मेंबर हैं। Virtual Labs और नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी में भी knowledge का बहुत बड़ा माध्यम बनने की संभावना है। DTH channels के माध्यम से स्टूडेंट्स को भी स्थानीय भाषाओं में पढ़ाई का अवसर मिल रहा है। देश में ऐसे अनेक डिजिटल और टेक्नॉलॉजी आधारित Initiative चल रहे हैं। इन सारे Initiative को National Digital University से और बल मिलेगा। ऐसे Futuristic कदम हमारी शिक्षा, हमारी स्किल और हमारे ज्ञान-विज्ञान के पूरे स्पेस को बदलने वाले हैं।

अब टीचर्स की भूमिका सिर्फ क्लासरूम तक सीमित नहीं रहेगी। अब टीचर्स के लिए पूरा देश, पूरी दुनिया ही एक क्लासरूम की भांति होगा। ये टीचर्स के लिए अवसरों के नए द्वार खोलने वाला है। Educational institutions के लिए भी अब देशभर से टीचिंग मटीरियल की अनेक प्रकार की विविधताएँ, अनेक प्रकार की विशेषताएं, स्थानीय टच ऐसी अनेक बातें उपलब्ध होने वाली हैं। और सबसे बड़ी बात, इससे गांव और शहर के स्कूलों के बीच जो खाई होती थी, वो दूर होगी, सबको बराबरी के अवसर मिलेंगे।

कई देश 'on the job' learning पर विशेष बल देते हैं। बीते वर्षों में केंद्र सरकार ने अपने युवाओं को 'outside the classroom exposure' देने के लिए internships और apprenticeships पर फोकस किया है। National Internship Portal पर लगभग 75 हजार Employers हैं। ये Internships की लगभग 25 लाख requirements post कर चुके हैं। इससे युवाओं और इंडस्ट्री दोनों को बहुत लाभ हो रहा है। इंडस्ट्री और शिक्षा से जुड़े संस्थान इस पोर्टल का अधिक से अधिक उपयोग करें। देश में इंटर्नशिप के कल्चर का और विस्तार करना है।

Apprenticeships युवाओं को future ready बनाने में मदद करती है। भारत में apprenticeships को भी बढ़ावा दे रहे हैं। इससे इंडस्ट्री को भी उचित स्किल से जुड़ी वर्क फोर्स की पहचान करने में भी आसानी होगी। इसलिए इस बजट में करीब 50 लाख युवाओं के लिए National Apprenticeship Promotion Scheme के तहत stipend का प्रावधान किया गया है। यानि apprenticeships के लिए वातावरण भी बना रहे हैं और पेमेंट्स में भी इंडस्ट्री को मदद दे रहे हैं।

भारत को दुनिया मैन्युफेक्चरिंग हब के रूप में देख रही है। इसलिए भारत में निवेश को लेकर दुनिया में उत्साह है। ऐसे में स्किल्ड वर्क फोर्स बहुत काम आती है। इसलिए इस बजट में स्किलिंग पर बीते वर्षों के फोकस को आगे बढ़ाया है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 आने वाले वर्षों में लाखों युवाओं को

skill, reskill और upskill करेगी। इस योजना से आदिवासियों, दिव्यांगों और महिलाओं की जरूरतों के अनुसार tailor-made programs बनाए जा रहे हैं। साथ ही इसमें AI, Robotics, IoT, Drones, जैसे अनेक सेक्टर्स के लिए भी मैनपावर का निर्माण किया जा रहा है। इससे इंटरनेशनल इंवेस्टर्स के लिए भारत में काम करना और आसान होगा। भारत में इन्वेस्टर्स को re-skilling पर ज्यादा ऊर्जा और संसाधन नहीं खर्च करने पड़ेंगे। इस बजट में पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना का भी ऐलान किया गया है। इससे हमारे पारंपरिक कारीगरों, हस्तशिल्पियों, कलाकारों के स्किल डेवलपमेंट पर जोर दिया जाएगा। पीएम विश्वकर्मा योजना, इन कारीगरों को नया मार्केट भी दिलाने में मदद करेगी और इससे उनके उत्पादों के बेहतर दाम भी मिलेंगे।

भारत में एजुकेशन सेक्टर में तेजी से बदलाव लाने के लिए academia और industry की भूमिका और पार्टनरशिप बहुत बड़ी है। इससे मार्केट की जरूरत के हिसाब से रिसर्च संभव हो पाएगी और रिसर्च के लिए इंडस्ट्री से पर्याप्त फंडिंग भी मिल पाएगी। इस बजट में AI के लिए जिन 3 Centres of Excellence की बात की गई है, उनमें industry academia partnership मजबूत होगी। ये भी तय किया गया है कि ICMR Labs को मेडिकल कॉलेज और private sector R&D teams के लिए उपलब्ध किया जाए। पूरा भरोसा है कि देश में R&D इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए उठाए गए ऐसे हर कदम का प्राइवेट सेक्टर ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाएगा।

बजट में जो निर्णय लिए गए हैं, उनसे whole of government approach भी स्पष्ट होती है। हमारे लिए education और skilling सिर्फ इनसे जुड़े मंत्रालय या विभाग तक सीमित नहीं है। हर सेक्टर में इनके लिए संभावनाएं हैं। ये सेक्टर हमारी इकॉनॉमी के बढ़ते साइज के साथ बढ़ते जा रहे हैं। skilling और education से जुड़े stakeholders से आग्रह है कि अलग-अलग सेक्टर्स में आ रही इन opportunities को स्टडी करें। इससे हमें इन नए सेक्टर्स के लिए जरूरी वर्क फोर्स तैयार करने में आसानी होगी। अब जैसे भारत के तेजी से बढ़ते सिविल एविएशन सेक्टर से जुड़ी खबरों को देख सुन रहे हैं। ये दिखाता है कि भारत की ट्रैवल और टूरिज्म इंडस्ट्री का कितना विस्तार हो रहा है। ये रोजगार के बहुत बड़े माध्यम हैं। इसलिए skilling centres और educational institutions को इसके लिए भी capacities तैयार करनी होगी। जो युवा 'स्किल इंडिया मिशन' के तहत प्रशिक्षित हुये हैं, उनका भी अपडेटेड डेटाबेस तैयार करें। क्योंकि, कई ऐसे युवा होंगे, जिनके स्किल्स को अपग्रेड करने की जरूरत होगी। डिजिटल टेक्नोलॉजी और AI के आने के बाद ये प्रशिक्षित वर्क फोर्स पीछे न छूट जाए, इसके लिए अभी से काम करना होगा। ▪

विश्व रिकार्ड- जनभागीदारी का अनुपम उदाहरण

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

18 लाख 82 हजार 229 दीप प्रज्ज्वलन के साथ उज्जैन गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में हुआ दर्ज

उज्जैन वासियों ने जन-भागीदारी का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। जन-भागीदारी से यह विश्व रिकार्ड बना है। भगवान श्री महाकाल की उज्जैन नगरी पर कृपा बरस रही है। चारों ओर उत्सव और आनंद का वातावरण है। सभी सुखी हों, सभी निरोग हों और सबका कल्याण हो। उज्जैन शहर के लिये गौरव का दिन रहा। उज्जैन की जनता ने रामघाट, दत्त अखाड़ा, नृसिंह घाट, गुरूनानक घाट, सुनहरी घाट, भूखीमाता घाट पर एक साथ 18 लाख 82 हजार 229 दीप प्रज्वलित कर नया विश्व रिकार्ड स्थापित किया है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने भोपाल से अपने साथ लाये दीयों को रामघाट पर प्रज्वलित कर शिव ज्योति अर्पणम कार्यक्रम की शुरूआत की।

अवंतिका नगरी को श्री महाकाल महाराज की कृपा और आम जनता की भक्ति, श्रद्धा एवं तपस्या से महाशिवरात्रि पर एक अनोखा विश्व रिकार्ड स्थापित करने का सौभाग्य मिला। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वैभवशाली, सम्पन्न व शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण हो रहा है। मध्यप्रदेश भी किसी से कम नहीं है। हम भी निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। हमारा प्रदेश भी शक्तिशाली प्रदेश बनेगा।

उज्जयिनी की छटा अनुपम, अद्भुत और अविस्मरणीय है। उज्जयिनी को स्वच्छता में नम्बर-वन बनायेंगे। शिव और शक्ति के एक साथ रहने पर ही सब कुछ संभव होता है। माँ-बहन और बेटी में शक्ति स्वरूपा देवी को देखता हूँ। लाड़ली लक्ष्मी योजना के बाद अब गरीब बहनों के सशक्तिकरण के लिये लाड़ली बहना योजना शुरू की जा रही है। लाड़ली बहना योजना में गरीब बहनों को एक हजार रुपये महीना दिया जायेगा। साल में उन्हें 12 हजार रूपये दिये जायेंगे, जिससे उन गरीब बहनों का सशक्तिकरण होगा। ▪

भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का शिलान्यास

2014 के बाद से ही भारत major economies में renewable energy capacity addition में सबसे तेज रहा है। ट्रैक रिकॉर्ड बताता है कि renewable energy resources को लेकर भारत जो लक्ष्य तय करता है, उसे समय से पहले पूरा करके दिखाता है।

installed electricity Capacity में 40 परसेंट non-fossil fuel के योगदान के लक्ष्य को भारत ने 9 साल पहले ही प्राप्त कर लिया।

2014 के बाद से भारत में जितने भी बजट आए हैं, उनमें एक पैटर्न रहा है। पैटर्न ये है कि सरकार का हर बजट वर्तमान चुनौतियों के समाधान के साथ ही New Age Reforms को आगे बढ़ाता रहा है। Green Growth और Energy Transition के लिए भारत की रणनीति के तीन मुख्य स्तंभ रहे हैं।

- **पहला**–Renewable Energy का प्रोडक्शन बढ़ाना।
- **दूसरा**– अपनी अर्थव्यवस्था में fossil fuels का इस्तेमाल कम करना।
- **तीसरा**– देश के अंदर gas based economy की तरफ तेज गति से आगे बढ़ना।

इसी रणनीति के तहत, चाहे इथेनॉल ब्लेंडिंग हो, पीएम-कुसुम योजना हो, सोलर मैन्यूफैक्चरिंग के लिए incentive देना हो, Roof-top Solar Scheme हो, Coal Gasification हो, Battery Storage हो, बीते वर्षों के बजट में अनेक महत्वपूर्ण घोषणाएं हुई हैं। इस साल के बजट में भी इंडस्ट्री के लिए green credits हैं, तो किसानों के लिए PM PRANAM योजना है। इसमें गांवों के लिए गोबरधन योजना है तो, शहरी क्षेत्रों के लिए vehicle scrapping policy है। इसमें ग्रीन हाईड्रोजन पर बल है, तो wetland conservation पर भी उतना ही फोकस है। Green Growth को लेकर इस साल के बजट में जो प्रावधान किए गए हैं, वो एक तरह से भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का शिलान्यास हैं।

भारत Renewable Energy resources में जितना कमांडिंग पोजीशन में होगा उतना ही बड़ा बदलाव वो पूरे विश्व में ला सकता है। ये बजट भारत को Global Green Energy market में एक लीड प्लेयर के रूप में स्थापित करने में भी अहम भूमिका निभाएगा। इसलिए मैं energy world से जुड़े हर स्टेकहोल्डर को भारत में निवेश के लिए आमंत्रित करता हूं। विश्व अपनी Renewable Energy supply chains को diversify कर रहा है। ऐसे में इस बजट के माध्यम से भारत ने हर Green Investor को अपने यहां निवेश का बेहतरीन अवसर दिया है। ये इस सेक्टर में आ रहे स्टार्ट-अप्स के लिए भी बहुत ही उपयोगी साबित होने जा रहा है।

2014 के बाद से ही भारत major economies में renewable energy capacity addition में सबसे तेज रहा है। ट्रैक रिकॉर्ड बताता है कि renewable energy resources को लेकर भारत जो लक्ष्य तय करता है, उसे समय से पहले पूरा करके दिखाता है।

installed electricity Capacity में 40 परसेंट non-fossil fuel के योगदान के लक्ष्य को भारत ने 9 साल पहले ही प्राप्त कर लिया। पेट्रोल में 10 परसेंट इथेनॉल ब्लेंडिंग के लक्ष्य को भी भारत ने 5 महीना पहले ही हासिल कर लिया। 20 परसेंट इथेनॉल ब्लेंडिंग के लक्ष्य को भी भारत ने 2030 से कम करके 2025-26 तक पूरा करने का निर्धारित किया। वर्ष 2030 तक 500 गीगावॉट non-fossil-based electricity capacity हासिल करके रहेगा। सरकार जिस तरह Bio-Fuels पर जोर दे रही है, वो सभी investors के लिए बहुत बड़ी opportunity लेकर आया है। हाल ही में E20 Fuel को भी लॉन्च किया है। देश में Agri-Waste की कमी नहीं है। ऐसे में देश के कोने-कोने में Ethanol Plants की स्थापना के मौके को investors को छोड़ना नहीं चाहिए। भारत में solar, wind, bio-gas का जो potential है, वो private sector के लिए किसी Gold Mine या Oil Field से कम नहीं है।

National Green Hydrogen Mission के माध्यम से भारत हर साल 5MMT Green Hydrogen के प्रॉडक्शन का लक्ष्य लेकर चल रहा है। प्राइवेट सेक्टर को encourage करने के लिए इस मिशन में 19 हजार करोड़ रुपए से अधिक का प्रावधान

भारत Green Energy से जुड़ी टेक्नॉलॉजी में दुनिया में लीड ले सकता है। ये भारत में Green Jobs को बढ़ाने के साथ ही Global Good में भी बहुत मदद करेगा। ये बजट एक अवसर तो है ही, इसमें भविष्य की सुरक्षा गारंटी भी समाहित है।

किया गया है। Green Hydrogen के production के साथ ही आपके लिए और भी बहुत सारे Options हैं। जैसे electrolyser manufacturing, green steel की manufacturing, long haul transportation के लिए fuel cells के निर्माण में भी investment की अनेक opportunities आ रही हैं।

भारत में गोबर से 10 हजार मिलियन क्यूबिक मीटर बायोगैस और agri residue से डेढ़ लाख मिलियन क्यूबिक मीटर गैस के उत्पादन का potential है। इससे हमारे देश में City Gas Distribution में 8 परसेंट तक का योगदान हो सकता है। इन्हीं संभावनाओं की वजह से गोबरधन योजना, भारत की biofuel strategy का एक अहम component है।

इस बजट में सरकार ने गोबरधन योजना के तहत 500 नए प्लांट लगाने की घोषणा की है। ये पुराने जमाने के गोबरगैस प्लांट की तरह नहीं होते। इन आधुनिक प्लांट्स पर सरकार 10 हजार करोड़ रुपए खर्च करेगी। सरकार का Waste to Energy प्रोग्राम, देश के प्राइवेट सेक्टर के लिए, हमारे MSME's के लिए एक नया मार्केट बना रहा है। गांवों से निकलने वाले Agri-Waste के साथ ही शहरों के Municipal Solid Waste से भी CBG का प्रॉडक्शन उनके लिए बेहतरीन मौका है। प्राइवेट सेक्टर को उत्साहित करने के लिए सरकार टैक्स में छूट के साथ ही आर्थिक मदद भी दे रही है।

भारत की Vehicle Scrapping Policy, green growth strategy का एक अहम हिस्सा है। Vehicle Scrapping को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने इस बजट में 3 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। आने वाले कुछ महीनों में केंद्र और राज्य सरकार की करीब-करीब 3 लाख गाड़ियों को scrap किया जाना है। ये गाड़ियां 15 साल से ज्यादा पुरानी हो चुकी हैं। इनमें पुलिस जिन vehicles का उपयोग करती है वो गाड़ियां हैं, खासकर के हमारे हॉस्पिटल्स में जो एंबुलेंस हैं, हमारे public transport की जो buses हैं। Vehicle Scrapping बहुत बड़ा मार्केट बनने जा रहा है। ये Reuse, Recycle और Recovery के सिद्धांत पर चलते हुए circular economy को भी नई ताकत देगा। मैं भारत के नौजवानों को, हमारे स्टार्ट-अप्स को circular economy के विभिन्न माध्यमों से जुड़ने का भी आग्रह करूंगा।

भारत को अगले 6-7 साल में अपनी battery storage capacity को बढ़ाकर 125 Gigawatt hours करना है। ये लक्ष्य जितना बड़ा है, उतना ही आपके लिए इसमें नई संभावनाएं बन रही हैं। इसे हासिल करने के लिए लाखों करोड़ रुपए के निवेश की आवश्यकता है। Battery developers को सपोर्ट करने के लिए सरकार ने इस बजट में Viability Gap Funding स्कीम की घोषणा की है।

भारत में water-based transport एक बहुत बड़ा सेक्टर है जिसमें आने वाले दिनों में बहुत तेजी आने वाली है। भारत अपने coastal route के जरिए सिर्फ 5 परसेंट कार्गो का ट्रांसपोर्ट करता है। इसी तरह inland waterways के जरिए सिर्फ 2 परसेंट कार्गो भारत में ट्रांसपोर्ट होता है। जिस तरह भारत में वॉटरवेज का निर्माण हो रहा है, उसमें इस क्षेत्र में सभी के लिए बहुत सारी opportunities बन रही हैं।

भारत Green Energy से जुड़ी टेक्नॉलॉजी में दुनिया में लीड ले सकता है। ये भारत में Green Jobs को बढ़ाने के साथ ही Global Good में भी बहुत मदद करेगा। ये बजट एक अवसर तो है ही, इसमें भविष्य की सुरक्षा गारंटी भी समाहित है। बजट के हर प्रावधान को अमल में लाने के लिए तेजी से काम करना है, मिलकर के काम करना है। बजट आ चुका है, संसद में already पेश हो चुका है। सरकार और देशवासियों को मिलकर के बजट की एक-एक चीज को बहुत ही अच्छे तरीके से लागू करना है। ▪

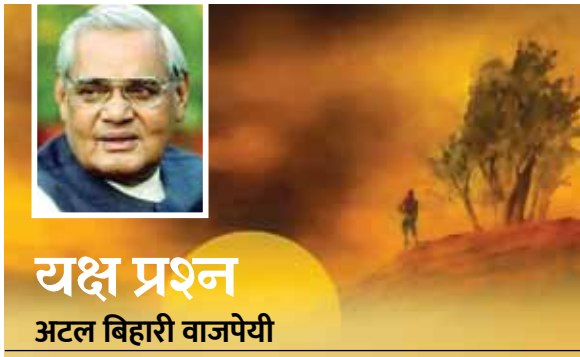

यक्ष प्रश्न

अटल बिहारी वाजपेयी

जो कल थे, वे आज नहीं हैं।
जो आज हैं, वे कल नहीं होंगे।

होने, न होने का क्रम,
इसी तरह चलता रहेगा,
हम हैं, हम रहेंगे,
यह भ्रम भी सदा पलता रहेगा।

सत्य क्या है?
होना या न होना?
या दोनों ही सत्य हैं?
जो है, उसका होना सत्य है,
जो नहीं है, उसका न होना सत्य है।

मुझे लगता है कि
होना-न-होना एक ही सत्य के
दो आयाम हैं,
शेष सब समझ का फेर,
बुद्धि के व्यायाम हैं।

किन्तु न होने के बाद क्या होता है,
यह प्रश्न अनुत्तरित है।

प्रत्येक नया नचिकेता,
इस प्रश्न की खोज में लगा है।
सभी साधकों को इस प्रश्न ने ठगा है।
शायद यह प्रश्न, प्रश्न ही रहेगा।
यदि कुछ प्रश्न अनुत्तरित रहें
तो इसमें बुराई क्या है?

हाँ, खोज का सिलसिला न रुके,
धर्म की अनुभूति,
विज्ञान का अनुसंधान,
एक दिन, अवश्य ही
रुद्ध द्वार खोलेगा।
प्रश्न पूछने के बजाय
यक्ष स्वयं उत्तर बोलेगा।

स्वच्छ भारत अभियान ने हमारे देश में जन भागीदारी के मायने ही बदल दिए

तेजी से आगे बढ़ते हमारे देश में Digital India की ताकत कोने-कोने में दिख रही है। Digital India की शक्ति को घर-घर पहुँचाने में अलग-अलग Apps की बड़ी भूमिका होती है।

ऐसा ही एक App है, E-Sanjeevani, इस App से Tele-consultation, यानी, दूर बैठे, video conference के माध्यम से, डॉक्टर से, अपनी बीमारी के बारे में सलाह कर सकते हैं। इस App का उपयोग करके अब तक Tele-consultation करने वालों की संख्या 10 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई है।

'मन की बात' के 98 वें एपिसोड में सभी के साथ जुड़कर बहुत खुशी हो रही है। century की तरफ बढ़ते इस सफर में, 'मन की बात' को, सभी ने, जनभागीदारी की अभिव्यक्ति का, अदभुत platform बना दिया है। हर महीने, लाखों संदेशों में, कितने ही लोगों के 'मन की बात' मुझ तक पहुँचती है। आप, अपने मन की शक्ति तो जानते ही हैं, वैसे ही, समाज की शक्ति से कैसे देश की शक्ति बढ़ती है, ये हमने 'मन की बात' के अलग-अलग Episodes में देखा है, समझा है, और अनुभव किया है - स्वीकार भी किया है। वो दिन याद है, जब 'मन की बात' में भारत के पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहन की बात की थी। तुरंत उस समय देश में एक लहर सी उठ गई भारतीय खेलों के जुड़ने की, इनमें रमने की, इन्हें सीखने की। 'मन की बात' में, जब, भारतीय खिलौनों की बात हुई, तो देश के लोगों ने, इसे भी, हाथों-हाथ बढ़ावा दे दिया। अब तो भारतीय खिलौनों का इतना craze हो गया है, कि, विदेशों में भी इनकी demand बहुत बढ़ रही है। जब 'मन की बात' में story-telling की भारतीय विधाओं पर बात की, तो इनकी प्रसिद्धि भी, दूर-दूर तक पहुँच गई। लोग, ज्यादा से ज्यादा भारतीय story-telling की विधाओं की तरफ आकर्षित होने लगे।

सरदार पटेल की जयन्ती यानी 'एकता दिवस' के अवसर पर 'मन की बात' में तीन competitions की बात की थी। ये प्रतियोगिताएं, देशभक्ति पर 'गीत', 'लोरी' और 'रंगोली' इससे जुड़ी थीं। देशभर के 700 से अधिक जिलों के 5 लाख से अधिक लोगों ने बढ़-चढ़ कर इसमें हिस्सा लिया है। बच्चे, बड़े, बुजुर्ग, सभी ने, इसमें, बढ़-चढ़कर भागीदारी की और 20 से अधिक भाषाओं में अपनी entries भेजी हैं। आपमें से हर कोई, अपने आप में, एक champion है, कला साधक है। आप सभी ने यह दिखाया है, कि, अपने देश की विविधता और संस्कृति के लिए आपके हृदय में कितना प्रेम है।

इस मौके पर लता मंगेशकर जी, लता दीदी की याद आना बहुत स्वाभाविक है। क्योंकि जब ये प्रतियोगिता प्रारंभ हुई थी, उस दिन लता दीदी ने tweet करके देशवासियों से आग्रह किया था कि वे इस प्रथा में जरुर जुड़ें।

लोरी writing competition में, पहला पुरस्कार, कर्नाटक के चामराजनगर जिले के बी.एम. मंजूनाथ जी ने जीता है। इन्हें ये पुरस्कार कन्नड़ में लिखी उनकी लोरी 'मलगू कन्दा' (Malagu Kanda) के लिए मिला है। इसे लिखने की प्रेरणा इन्हें अपनी माँ और दादी के गाए लोरी-गीतों से मिली। आप इसे सुनेंगे तो आपको भी आनंद आएगा।

''सो जाओ, सो जाओ, बेबी,
मेरे समझदार लाड़ले, सो जाओ,
दिन चला गया है और अन्धेरा है,
निद्रा देवी आ जायेगी,
सितारों के बाग से,
सपने काट लायेगी,
सो जाओ, सो जाओ,
जोजो...जो..जो..
जोजो...जो..जो..''

असम में कामरूप जिले के रहने वाले दिनेश गोवाला जी ने इस प्रतियोगिता में second prize जीता है। इन्होंने जो लोरी लिखी है, उसमें स्थानीय मिट्टी और metal के बर्तन बनाने वाले कारीगरों के popular craft की छाप है।

कुम्हार दादा झोला लेकर आये हैं,
झोले में भला क्या है?
खोलकर देखा कुम्हार के झोले को तो,
झोले में थी प्यारी सी कटोरी!

हमारी गुड़िया ने कुम्हार से पूछा,
कैसी है ये छोटी सी कटोरी!

गीतों और लोरी की तरह ही Rangoli Competition भी काफी लोकप्रिय रहा। इसमें हिस्सा लेने वालों ने एक से बढ़कर एक सुन्दर रंगोली बनाकर भेजी। इसमें winning entry, पंजाब के, कमल कुमार जी की रही। इन्होंने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और अमर शहीद वीर भगत सिंह की बहुत ही सुन्दर रंगोली बनाई। महाराष्ट्र के सांगली के सचिन नरेंद्र अवसारी जी ने अपनी रंगोली में जलियांवाला बाग, उसका नरसंहार और शहीद उधम सिंह की बहादुरी को प्रदर्शित किया। गोवा के रहने वाले गुरुदत्त वान्टेकर जी ने गांधी जी की रंगोली बनाई, जबकि पुदुचेरी के मालातिसेल्वम जी ने भी आजादी के कई महान सेनानियों पर अपना focus रखा। देशभक्ति गीत प्रतियोगिता की विजेता, टी. विजय दुर्गा जी आन्ध्र प्रदेश की हैं। उन्होंने, तेलुगु में अपनी entry भेजी थी। वे अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी नरसिम्हा रेड्डी गारू जी से काफी प्रेरित रही हैं। आप भी सुनिये विजय दुर्गा जी की entry का यह हिस्सा

रेनाडू प्रांत के सूरज,
हे वीर नरसिंह!
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अंकुर हो, अंकुश हो!
अंग्रेजों के न्याय रहित निरंकुश दमन कांड को देख
खून तेरा सुलगा और आग उगला!
रेनाडू प्रांत के सूरज,
हे वीर नरसिंह!

तेलुगु के बाद, अब मैं, आपको, मैथिली में एक clip सुनाता हूँ। इसे दीपक वत्स जी ने भेजा है। उन्होंने भी इस प्रतियोगिता में पुरस्कार जीता है।

भारत दुनियाँ की शान है भैया,
अपना देश महान है,
तीन दिशा समुन्द्र से घिरा,
उत्तर में कैलाश बलवान है,
गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी,
कोशी, कमला बलान है,
अपना देश महान है भैया,
तिरंगे में बसा प्राण है

प्रतियोगिता में आयी इस तरह की entries की list बहुत लम्बी है। आप, संस्कृति मंत्रालय की वेबसाईट पर जाकर, इन्हें, अपने परिवार के साथ देखें और सुनें - आपको बहुत प्रेरणा मिलेगी।

बात बनारस की हो, शहनाई की हो, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान जी की हो, तो, स्वाभाविक है कि मेरा ध्यान उस तरफ जाएगा ही। कुछ दिन पहले 'उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार' दिए गए। ये पुरस्कार music और performing arts के क्षेत्र में उभर रहे, प्रतिभाशाली कलाकारों को दिए जाते हैं। ये कला और संगीत जगत की लोकप्रियता बढ़ाने के साथ ही इसकी समृद्धि में अपना योगदान दे रहे हैं। इनमें, वे कलाकार भी शामिल हैं, जिन्होंने, उन instruments में नई जान फूंकी है, जिनकी popularity समय के साथ कम होती जा रही थी। अब, आप सभी इस tune को ध्यान से सुनिए...

क्या आप जानते हैं ये कौन सा instrument है? संभव है आपको पता न भी हो! इस वाद्ययंत्र का नाम 'सुरसिंगार' है और इस धुन को तैयार किया है जॉयदीप मुखर्जी ने। जॉयदीप जी, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान पुरस्कार से सम्मानित युवाओं में शामिल हैं। इस instrument की धुनों को सुनना पिछले 50 और 60 के दशक से ही दुर्लभ हो चुका था, लेकिन, जॉयदीप, सुरसिंगार को फिर से Popular बनाने में जी-जान से जुटे हैं। उसी प्रकार बहन उप्पलपू नागमणि जी का प्रयास भी बहुत ही प्रेरक है, जिन्हें Mandolin में Carnatic Instrumenta के लिए यह पुरस्कार दिया गया है। वहीं संग्राम सिंह सुहास भंडारे जी को वारकरी कीर्तन के लिए यह पुरस्कार मिला है। इस list में सिर्फ संगीत से जुड़े कलाकार ही नहीं है - वी दुर्गा देवी जी ने, नृत्य की एक प्राचीन शैली,'करकट्टम' के लिए यह पुरस्कार जीता है। इस पुरस्कार के एक और विजेता, राज कुमार नायक जी ने, तेलंगाना के 31 जिलों में, 101 दिन तक चलने वाली पेरिनी ओडिसी का आयोजन किया था। आज, लोग, इन्हें, पेरिनी राजकुमार के नाम से जानने लगे हैं। पेरिनी नाट्यम, भगवान शिव को समर्पित एक नृत्य है, जो काकतीय Dynasty के दौर में काफी लोकप्रिय था। इस Dynasty की जड़ें आज के तेलंगाना से जुड़ी हैं। एक अन्य पुरस्कार विजेता साइखौम सुरचंद्रा सिंह जी हैं। ये मैतेई पुंग Instrument बनाने में अपनी महारत के लिए जाने जाते हैं। इस Instrument का मणिपुर से नाता है। पूरन सिंह एक दिव्यांग कलाकार हैं, जो, राजूला-मलुशाही, न्यौली, हुड़का बोल, जागर जैसी विभिन्न Music Forms को लोकप्रिय बना रहे हैं। इन्होंने इनसे जुड़ी कई Audio Recordings भी तैयार की हैं। उत्तराखंड के Folk Music में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर पूरन सिंह जी ने कई पुरस्कार भी जीते हैं। समय की सीमा के चलते, मैं, यहाँ, सभी Awardees की बातें भले न कर पाऊं , लेकिन मुझे विश्वास है कि, आप, उनके बारे में जरुर पढ़ेंगे। मुझे उम्मीद है, कि, ये सभी कलाकार, Performing Arts को और Popular बनाने के लिए Grassroots पर सभी को प्रेरित करते रहेंगे।

तेजी से आगे बढ़ते हमारे देश में Digital India की ताकत कोने-कोने में दिख रही है। Digital India की शक्ति को घर-घर पहुँचाने में अलग-अलग Apps की बड़ी भूमिका होती है। ऐसा ही एक App है, E-Sanjeevani, इस App से Tele-consultation, यानी, दूर बैठे, video conference के माध्यम से, डॉक्टर से, अपनी बीमारी के बारे में सलाह कर सकते हैं। इस App का उपयोग करके अब तक Tele-consultation करने वालों की संख्या 10 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई है। आप कल्पना कर सकते हैं। video conference के माध्यम से 10 करोड़ Consultations! मरीज और डॉक्टर के साथ अदभुत नाता - ये बहुत बड़ी achievement है। इस उपलब्धि के लिए, मैं, सभी डॉक्टरों और इस सुविधा का लाभ उठाने वाले मरीजों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। भारत के लोगों ने, तकनीक को, कैसे, अपने जीवन का हिस्सा बनाया है, ये इसका जीता-जागता उदाहरण है। हमने देखा है कि कोरोना के काल में E-Sanjeevani App इसके जरिए Tele-consultation लोगों के लिए एक बड़ा वरदान साबित हुआ है। मेरा भी मन हुआ, कि क्यों ना इसके बारे में 'मन की बात' में हम एक डॉक्टर और एक मरीज से बात करें, संवाद करें और आप तक बात को पहुंचाएं। हम ये जानने की कोशिश करें कि, Tele-consultation, लोगों के लिए, आखिर, कितना प्रभावी रहा है। हमारे साथ सिक्किम से डॉक्टर मदन मणि जी हैं। डॉक्टर मदन मणि जी रहने वाले सिक्किम के ही हैं, लेकिन उन्होंने MBBS धनबाद से किया और फिर Banaras Hindu University से MD किया। वो ग्रामीण इलाकों के सैकड़ों लोगों को Tele-consultation दे चुके हैं।

प्रधानमंत्री जीः नमस्कार... नमस्कार मदन मणि जी।

डॉ. मदन मणिः जी नमस्कार सर।

प्रधानमंत्री जीः मैं नरेन्द्र मोदी बोल रहा हूँ।

डॉ. मदन मणिः जी... जी सर।

प्रधानमंत्री जीः आप तो बनारस में पढ़े हैं।

डॉ. मदन मणिः जी मैं बनारस में पढ़ा हूँ

सर।

प्रधानमंत्री जीः आपका medical education वहीं हुआ।

डॉ. मदन मणिः जी... जी।

प्रधानमंत्री जीः तो जब आप बनारस में थे तब का बनारस और आज बदला हुआ बनारस कभी देखने गए कि नहीं गए।

डॉ. मदन मणिः जी प्रधानमंत्री जी मैं जा नहीं पाया हूँ, जबसे मैं वापस सिक्किम आया हूँ, लेकिन मैंने सुना है कि काफी बदल गया है।

प्रधानमंत्री जीः तो कितने साल हो गए आपको बनारस छोड़े?

डॉ. मदन मणिः बनारस 2006 से छोड़ा हुआ हूँ सर।

प्रधानमंत्री जीः ओह... फिर तो आपको जरुर जाना चाहिए।

डॉ. मदन मणिः जी... जी।

प्रधानमंत्री जीः अच्छा, मैंने फोन तो इसलिए किया कि आप सिक्किम के अंदर दूर-सुदूर पहाड़ों में रहकर के वहाँ के लोगों को Tele Consultation का बहुत बड़ी सेवाएँ दे रहे हैं।

डॉ. मदन मणिः जी।

प्रधानमंत्री जीः मैं 'मन की बात' के श्रोताओं को आपका अनुभव सुनाना चाहता हूँ।

डॉ. मदन मणिः जी।

प्रधानमंत्री जीः जरा मुझे बताइए, कैसा अनुभव रहा?

डॉ. मदन मणिः अनुभव, बहुत बढ़िया रहा प्रधानमंत्री जी। क्या है कि सिक्किम में बहुत नजदीक का जो PHC है, वहाँ जाने के लिए भी लोगों को गाड़ी में चढ़ के कम-से-कम एक-दो सौ रूपया ले के जाना पड़ता है। और डॉक्टर मिले, नहीं मिले ये भी एक problem है। तो Tele Consultation के माध्यम से लोग हम लोग से सीधे जुड़ जाते हैं, दूर-दराज के लोग। Health & Wellness Centre के जो CHOs होते हैं, वो लोग, हम लोग से, connect करवा देते हैं। और हम लोग का जो पुरानी उनकी बीमारी है उनकी reports, उनका अभी का present condition सारी चीजें वो हम लोग को बता देते हैं।

प्रधानमंत्री जीः यानि document transfer करते हैं।

डॉ. मदन मणिः जी.. जी। Document transfer भी करते हैं और अगर transfer नहीं कर सके तो वो पढ़ के हम लोगों को बताते हैं।

प्रधानमंत्री जीः वहाँ का Wellness Centre का doctor बताता है।

डॉ. मदन मणिः जी, Wellness Centre में जो CHO रहता है, Community Health Officer।

प्रधानमंत्री जीः और जो patient है वो अपनी कठिनाईयाँ आपको सीधी बताता है।

डॉ. मदन मणिः जी, patient भी कठिनाइयाँ हम को बताता है। फिर पुराने records देख के फिर अगर कोई नई चीजें हम लोगों को जानना है। जैसे किसी का Chest Auscultate करना है, अगर उनको पैर सूजा है कि नहीं ? अगर CHO ने नहीं देखा है तो हम लोग उसको बोलते है कि जाके देखो सूजन है, नहीं है, आँख देखो, anaemia है कि नहीं है, उसका अगर खाँसी है तो Chest को Auscultate करो और पता करो कि वहाँ पे sounds है कि नहीं।

प्रधानमंत्री जीः आप Voice Call से बात करते हैं या Video Call का भी उपयोग करते हैं?

डॉ. मदन मणिः जी, Video Call का उपयोग करते हैं।

प्रधानमंत्री जीः तो आप Patient को भी, आप भी देखते हैं।

डॉ. मदन मणिः Patient को भी देख पाते हैं, जी।

प्रधानमंत्री जीः Patient को क्या feeling आता है?

डॉ. मदन मणिः Patient को अच्छा लगता है क्योंकि डॉक्टर को नजदीक से वो देख पाता है। उसको confusion रहता है कि उसका दवा घटाना है, बढ़ाना है, क्योंकि, सिक्किम में ज्यादातर जो patient होते हैं, वो, diabetes, Hypertension के आते हैं और एक diabetes और hypertension के दवा को change करने के लिये उसको डॉक्टर मिलने के लिए कितना दूर जाना पड़ता है। लेकिन Tele Consultation के through वहीं मिल जाता है और दवा भी health & Wellness Centre में Free Drugs initiative के through मिल जाता है। तो वहीं से दवा भी ले के जाता है वो।

प्रधानमंत्री जीः अच्छा मदन मणि जी, आप तो जानते ही हैं कि patient का एक स्वभाव रहता है कि जब तक वो डॉक्टर आता नहीं है, डॉक्टर देखता नहीं है, उसको संतोष नहीं होता है और डॉक्टर को भी लगता है जरा मरीज को देखना पड़ेगा, अब वहाँ सारा ही Telecom में Consultation होता है तो डॉक्टर को क्या feel होता है, patient को क्या feel होता है?

डॉ. मदन मणिः जी, वो हम लोग को भी

लगता है कि अगर patient को लगता है कि डॉक्टर को देखना चाहिए, तो हम लोग को, जो-जो चीजें देखना है, वो, हम लोग, CHO को बोल के, video में ही हम लोग देखने के लिए बोलते हैं। और कभी-कभी तो patient को video में ही नजदीक में आ के उसकी जो परेशानियाँ है अगर किसी को चर्म का problem है, skin का problem है तो वो हम लोग को video से ही दिखा देते हैं। तो संतुष्टि रहता है उन लोगों को।

प्रधानमंत्री जीः और बाद में उसका उपचार करने के बाद उसको संतोष मिलता है, क्या अनुभव आता है? Patient ठीक हो रहे हैं?

डॉ. मदन मणिः जी, बहुत संतोष मिलता है। हमको भी संतोष मिलता है सर। क्योंकि मैं अभी स्वास्थ्य विभाग में हूँ और साथ-साथ में Tele Consultation भी करता हूँ तो file के साथ-साथ patient को भी देखना मेरे लिए बहुत अच्छा, सुखद अनुभव रहता है।

प्रधानमंत्री जीः Average, कितने patient आपको Tele Consultation case आते होंगे?

डॉ. मदन मणिः अभी तक मैंने 536 patient देखे हैं।

प्रधानमंत्री जीः ओह... यानि आपको काफी इसमें महारथ आ गई है।

डॉ. मदन मणिः जी, अच्छा लगता है देखने में।

प्रधानमंत्री जीः चलिए, मैं आपको शुभकामनाएँ देता हूँ। इस Technology का उपयोग करते हुए आप सिक्किम के दूर-सुदूर जंगलों में, पहाड़ों में रहने वाले लोगों की

इतनी बड़ी सेवा कर रहे हैं। और खुशी की बात है कि हमारे देश के दूर-दराज क्षेत्र में भी technology का इतना बढ़िया उपयोग हो रहा है। चलिए, मेरी तरफ से आपको बहुत-बहुत बधाई।

डॉ. मदन मणिः Thank You !

डॉक्टर मदन मणि जी की बातों से साफ है कि E-Sanjeevani App, किस तरह उनकी मदद कर रहा है। डॉक्टर मदन जी के बाद अब हम एक और मदन जी से जुड़ते हैं। ये उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले के रहने वाले मदन मोहन लाल जी हैं। अब ये भी संयोग है कि चंदौली भी बनारस से सटा हुआ है। आइये मदन मोहन जी से जानते हैं कि E-Sanjeevani को लेकर एक मरीज के रूप में उनका अनुभव क्या रहा है?

प्रधानमंत्री जीः मदन मोहन जी, प्रणाम !

मदन मोहन जीः नमस्कार, नमस्कार साहब।

प्रधानमंत्री जीः नमस्कार! अच्छा, मुझे बताया गया है कि आप diabetes के मरीज हैं।

मदन मोहन जीः जी।

प्रधानमंत्री जीः और आप technology का उपयोग करके Tele-Consultation कर-कर के अपनी बीमारी के संबंध में मदद लेते हैं।

मदन मोहन जीः जी।

प्रधानमंत्री जीः एक patient के नाते, एक दर्दी के रूप में, मैं, आपके अनुभव सुनना चाहता हूँ, ताकि, मैं, देशवासियों तक इस बात को पहुँचाना चाहूँ कि आज की technology से हमारे गाँव में रहने वाले लोग भी किस प्रकार से इसका उपयोग भी कर सकते हैं। जरा बताइये कैसे करते हैं?

मदन मोहन जीः ऐसा है सर जी, हॉस्पिटलें दूर हैं और जब diabetes हमको हुआ तो हम को जो है 5-6 किलोमीटर दूर जा कर के इलाज करवाना पड़ता था, दिखाना पड़ता था। और जब से व्यवस्था आप द्वारा बनाई गई है। इसे है कि हम अब जाता हूँ, हमारा जांच होता है, हमको बाहर के डॉक्टरों से बात भी करा देती हैं और दवा भी दे देती हैं। इससे हमको बड़ा लाभ है और, और लोगों को भी लाभ है इससे।

प्रधानमंत्री जीः तो एक ही डॉक्टर हर बार आपको देखते हैं कि डॉक्टर बदलते जाते है?

मदन मोहन जीः जैसे उनको नहीं समझ, डॉक्टर को दिखा देती हैं। वो ही बात करके दूसरे डॉक्टर से हमसे बात कराती हैं।

प्रधानमंत्री जीः और डॉक्टर आपको जो guidance देते हैं वो आपको पूरा फायदा होता है उससे।

मदन मोहन जीः हमको फायदा होता है। हमको उससे बहुत बड़ा फायदा है। और गाँव के लोगों को भी फायदा उससे है। सभी लोग वहाँ पूछते हैं कि भईया हमारा BP है, हमारा sugar है, test करो, जांच करो, दवा बताओ। और पहले तो 5-6 किलोमीटर दूर जाते थे, लम्बी लाईन लगी रहती थी, Pathology में लाइन लगी रहती थी। एक-एक दिन का समय नुकसान होता था।

प्रधानमंत्री जीः मतलब, आपका समय भी बच जाता है।

मदन मोहन जीःऔर पैसा भी व्यय होता था और यहाँ पर निःशुल्क सेवाएँ सब हो रही हैं।

प्रधानमंत्री जीः अच्छा, जब आप अपने सामने डॉक्टर को मिलते हैं तो एक विश्वास बनता है। चलो भई, डॉक्टर है, उन्होंने मेरी नाड़ी देख ली है, मेरी आँखें देख ली है, मेरा जीभ को भी check कर लिया है। तो एक अलग feeling आता है। अब ये Tele Consultation करते हैं तो वैसा ही संतोष होता है आपको ?

मदन मोहन जीः हाँ, संतोष होता है। के वो हमारी नाड़ी पकड़ रहे हैं, आला लगा रहे हैं, ऐसा मुझे महसूस होता है और हमको बड़ा तबीयत खुश होती है कि भई इतनी अच्छी व्यवस्था आप द्वारा बनाई गई है कि जिससे कि हमको यहाँ परेशानी से जाना पड़ता था, गाड़ी का भाड़ा देना पड़ता था, वहाँ लाईन लगाना पड़ता था। और सारी सुविधाएँ हमको घर बैठे-बैठे मिल रही हैं।

प्रधानमंत्री जीः चलिए, मदन मोहन जी मेरी तरफ से आपको बहुत शुभकामनाएं हैं। उम्र के इस पड़ाव पर भी आप technology को सीखे हैं, technology का उपयोग करते है। औरों को भी बताइए ताकि लोगों का समय भी बच जाए, धन भी बच जाए और उनको जो भी मार्गदर्शन मिलता है उससे दवाईयाँ भी अच्छे ढंग से हो सकती हैं।

मदन मोहन जीः हाँ, और क्या।

प्रधानमंत्री जीः चलिए, मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं आपको मदन मोहन जी।

मदन मोहन जीः बनारस को साहब आपने काशी विश्वनाथ स्टेशन बना दिया, development कर दिया। ये आपको बधाई है हमारी तरफ से।

प्रधानमंत्री जीः मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। हमने क्या बनाया जी, बनारस के लोगों ने बनारस को बनाया है। नहीं तो, हम तो माँ गंगा की सेवा के लिए, माँ गंगा ने बुलाया है, बस, और कुछ नहीं। ठीक है जी, बहुत-बहुत शुभकामनाएँ आपको। प्रणाम जी।

मदन मोहन जीः नमस्कार सर !

प्रधानमंत्री जीः नमस्कार जी !

देश के सामान्य मानवी के लिए, मध्यम वर्ग के लिए, पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वालों के लिए, E-Sanjeevani, जीवन रक्षा करने वाला App बन रहा है। ये है भारत की digital क्रान्ति की शक्ति। और इसका प्रभाव आज हम हर क्षेत्र में देख रहे हैं। भारत के UPI की ताकत भी आप जानते ही हैं। दुनिया के कितने ही देश, इसकी तरफ आकर्षित हैं। कुछ दिन पहले ही भारत और सिंगापुर के बीच UPI-Pay Now Link launch किया गया। अब, सिंगापुर और भारत के लोग, अपने मोबाईल फोन से उसी तरह पैसे transfer कर रहे हैं जैसे वे अपने-अपने देश के अन्दर करते हैं। मुझे खुशी है कि लोगों ने इसका लाभ उठाना शुरू कर दिया है। भारत का E-Sanjeevani App हो या फिर UPI, ये Ease of Living को बढ़ाने में बहुत मददगार साबित हुए हैं।

जब किसी देश में विलुप्त हो रहे किसी पक्षी की प्रजाति को, किसी जीव-जंतु को बचा लिया जाता है, तो उसकी पूरी दुनिया में चर्चा होती है। हमारे देश में ऐसी अनेकों महान परम्पराएँ भी हैं जो लुप्त हो चुकी थी, लोगों के मन-मस्तिष्क से हट चुकी थी, लेकिन अब इन्हें जनभागीदारी की शक्ति से पुनर्जीवित करने का प्रयास हो रहा है तो इसकी चर्चा के लिए 'मन की बात' से बेहतर मंच और क्या होगा?

अब जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ, वो जानकर वाकई आपको बहुत प्रसन्नता होगी,

विरासत पर गर्व होगा। अमेरिका में रहने वाले श्रीमान कंचन बैनर्जी ने विरासत के संरक्षण से जुड़े ऐसे ही एक अभियान की तरफ मेरा ध्यान आकर्षित किया है। मैं उनका अभिनंदन करता हूँ।

पश्चिम बंगाल में हुगली जिले के बांसबेरिया में, इस महीने, 'त्रिबेनी कुम्भो मोहोत्शौव' का आयोजन किया गया। इसमें आठ लाख से ज्यादा श्रद्धालु शामिल हुए लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह इतना विशेष क्यों है? विशेष इसलिए, क्योंकि, इस प्रथा को 700 साल के बाद पुनर्जीवित किया गया है। यूं तो ये परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है लेकिन दुर्भाग्य से 700 साल पहले बंगाल के त्रिबेनी में होने वाला ये महोत्सव बंद हो गया था।

इसे आजादी के बाद शुरू किया जाना चाहिए था, लेकिन, वो भी नहीं हो पाया। दो वर्ष पहले, स्थानीय लोग और 'त्रिबेनी कुंभो पॉरिचालोना शॉमिति' के माध्यम से, ये महोत्सव, फिर शुरू हुआ है। मैं इसके आयोजन से जुड़े सभी लोगों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आप, सिर्फ एक परंपरा को ही जीवित नहीं कर रहे हैं, बल्कि आप, भारत की सांस्कृतिक विरासत की भी रक्षा भी कर रहे हैं।

पश्चिम बंगाल में त्रिबेनी को सदियों से एक पवित्र स्थल के रूप में जाना जाता है। इसका उल्लेख, विभिन्न मंगलकाव्य, वैष्णव साहित्य, शाक्त साहित्य और अन्य बंगाली साहित्यिक कृतियों में भी मिलता है। विभिन्न ऐतिहासिक दस्तावेजों से यह पता चलता है, कि, कभी ये क्षेत्र, संस्कृत, शिक्षा और भारतीय संस्कृति का केंद्र था। कई संत इसे माघ संक्रांति में कुंभ स्नान के लिए पवित्र स्थान मानते हैं। त्रिबेनी में आपको कई गंगा घाट, शिव मंदिर और टेराकोटा वास्तुकला से सजी प्राचीन इमारतें देखने को मिल जाएंगी। त्रिबेनी की विरासत को पुर्नस्थापित करने और कुंभ परंपरा के गौरव को पुनर्जीवित करने के लिए यहां पिछले साल कुंभ मेले का आयोजन किया गया था। सात सदियों बाद, तीन दिन के कुंभ महास्नान और मेले ने, इस क्षेत्र में, एक नई ऊर्जा का संचार किया है। तीन दिनों तक हर रोज होने वाली गंगा आरती, रुद्राभिषेक और यज्ञ में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। इस बार हुए महोत्सव में विभिन्न आश्रम, मठ और अखाड़े भी शामिल थे। बंगाली परंपराओं से जुड़ी विभिन्न विधाएं जैसे कीर्तन, बाउल, गोड़ियों नृत्तों, स्त्री-खोल, पोटेर गान, छोऊ-नाच, शाम के कार्यक्रमों में, आकर्षण का केंद्र बने थे। हमारे युवाओं को देश के सुनहरे अतीत से जोड़ने का यह एक बहुत ही सराहनीय प्रयास है। भारत में ऐसी कई और practices हैं, जिन्हें revive करने की जरुरत है। मुझे आशा है, कि, इनके बारे में होने वाली चर्चा, लोगों को इस दिशा में जरुर प्रेरित करेगी।

स्वच्छ भारत अभियान में हमारे देश में जन भागीदारी के मायने ही बदल दिए हैं। देश में कहीं पर भी कुछ स्वच्छता से जुड़ा हुआ होता है, तो लोग इसकी जानकारी मुझ तक जरुर पहुंचाते हैं। ऐसे ही मेरा ध्यान गया है, हरियाणा के युवाओं के एक स्वच्छता अभियान पर। हरियाणा में एक गाँव है - दुल्हेड़ी। यहाँ के युवाओं ने तय किया हमें भिवानी शहर को स्वच्छता के मामले में एक मिसाल बनाना है। उन्होंने युवा स्वच्छता एवं जन सेवा समिति नाम से एक संगठन बनाया। इस समिति से जुड़े युवा सुबह 4 बजे भिवानी पहुँच जाते हैं। शहर के अलग-अलग स्थलों पर ये मिलकर सफाई अभियान चलाते हैं। ये लोग अब तक शहर के अलग-अलग इलाकों से कई टन कूड़ा साफ कर चुके हैं।

स्वच्छ भारत अभियान का एक महत्वपूर्ण आयाम वेस्ट टू वेल्थ (Waste to Wealth) भी है। ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले की एक बहन कमला मोहराना एक स्वयं सहायता समूह चलाती हैं।

इस समूह की महिलाएं दूध की थैली और दूसरी प्लास्टिक पैकिंग से टोकरी और मोबाइल स्टैंड जैसी कई चीजें बनाती हैं। ये इनके लिए स्वच्छता के साथ ही आमदनी का भी एक अच्छा जरिया बन रहा है। हम अगर ठान लें तो स्वच्छ भारत में अपना बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। कम-से-कम प्लास्टिक के बैग की जगह कपड़े के बैग का संकल्प तो हम सबको ही लेना चाहिए। आप देखेंगे, आपका ये संकल्प आपको कितना सन्तोष देगा, और दूसरे लोगों को जरूर प्रेरित करेगा। ▪

म. प्र. शीर्ष स्थान पर - डा. राघवेन्द्र शर्मा

भारतीय जनता पार्टी म. प्र. के कार्यालय मंत्री डा. राघवेन्द्र शर्मा जी ने बताया कि पिछले तीन माह से मन की बात सुनने व संगठन एप पर मन की बात अपलोड करने में म. प्र. देश भर में शीर्ष स्थान पर रहा है। यह म. प्र. भाजपा संगठन के लिए गौरव का विषय है। आगामी सौ वीं प्रसारित होने वाली मन की बात कार्यक्रम को ऐतिहासिक बनाने व जन-जन तक आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के संदेश को पहुँचाने के लिए म. प्र. के सभी 64100 मतदान केन्द्रों पर विशेष व्यवस्था की गई है। प्रयास होगा की प्रत्येक बूथ पर सौ कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति हो। बूथ पर पन्ना प्रमुखों, त्रिदेवों के द्वारा मन की बात कार्यक्रम के उपरान्त मतदान केन्द्रों पर बैठक की जाएगी, सभी हितग्राहियों से संवाद व सम्पर्क स्थापित किया जावेगा तथा संगठन एप पर अपलोड किया जावेगा। ▪

समरसता का संदेश देता होली पर्व

भारत की संस्कृति में समरसता का संदेश है। होली के पर्व को रंग-गुलाल का पर्व भी माना जाता है। इस दिन होलिका दहन के बाद रंग-गुलाल की होली में सब समरस हो जाते है। इसमे न कोई छोटा बड़ा है न कोई भेदभाव रहता है। सब रंग-गुलाल की मस्ती में शामिल हो जाते है। धर्म संस्कृति के मूल में प्राणीमात्र के प्रति समभाव और सबको अपना मानने का संदेश है, होली पर्व श्रीकृष्ण भूमि मथुरा में धूम-धाम से मनाया जाता है।

प्रकृति में उल्लास मय वातावरण का प्रारम्भ वसंत के आगमन से शुरू हो जाता है। अब दिन धीर-धीरे बड़े होने लगते है, और पतझड़ भी आने लगता है। जब माघ माह की पूर्णिमा आती है, तभी होली का डंडा लगा देते है। आम पर बौर आने लगते है, वृक्षों में नई पत्तियों का आना शुरू हो जाती है। प्रकृति में नई आभा नजर आने लगती है। होली के आते ही नई रौनक, उत्साह, उमंग, तरंग और ऊर्जा दिखाई देने लगती है। होली सामाजिक, धार्मिक लोगों को जोड़ने का सामाजिक सद्भाव का और रंगों का त्यौहार हैं। इसे बच्चों से बुर्जुग तक बिना भेदभाव के उत्साह से मनाया जाता है। होलिका दहन में कंडे व लकड़ी का ढेर लगाकर होलिका पूजन किया जाता है, फिर उसमें आग लगाई जाती है। पूजा करते समय इसं मंत्र का उच्चारण करते हैं।

असृक्पामयसंत्रस्तैः कृता त्वं होलि बालिशैः।
अतस्त्वां पूजियिश्यामि भूते भूतिप्रदा भव॥

होली यज्ञपर्व है, खेत के उगे अन्न को यज्ञ में हवन करके लिया जाता है। जिसे 'होला' कहा जाता है। इसीलिये इसे होलिकोत्सव कहते है। इस त्यौहार को मनाने के सबंध में कई मत है। कुछ प्रमुख मत निम्न है।

1. मान्यता है कि होलिकोत्सव का संबंध 'कामदहन' से है। भगवान शिव ने अपनी क्रोधाग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया था। तभी से ये त्यौहार मनाया जाता हैं।
2. यह त्यौहार हिरण्यकश्यप की बहन की याद में भी मनाते है। मान्यता है कि हिरण्यकश्यप की बहन होलिका वरदान के प्रभाव से प्रतिदिन अग्नि स्नान करके भी सुरक्षित बिना जले रहती थी। हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन से प्रहलाद को गोदी में लेकर अग्नि स्नान हेतु कहा, ताकि प्रहलाद मर जाये। होलिका ने ऐसा ही किया, परन्तु प्रहलाद बच गये जबकि होलिका जल गई। तभी से होली मनाने की परम्परा हैं।
3. फाल्गुन शुक्ल की अष्टमी से पूर्णिमा तक आठ दिन होलाष्टक मनाया जाता है। हमारे देश के कई प्रदेशों में होलाष्टक शुरू होने पर एक पेड़ की शाखा काटकर उसमें रंग-बिरंगे कपड़ो के टुकड़े बाँधते है। इस शाखा को जमीन में गाड़ दिया जाता हैं। सभी लोग इसके आस-पास होलिकोत्सव मनाते हैं।
4. होली के समय आम की बौर और चन्दन को मिलाकर खाने का महात्म्य है। मान्यता है कि फाल्गुन पूर्णिमा के दिन हिंडोले में झूलते हुए श्री गोविन्द पुरूषोत्तम के दर्शन करने से बैकुण्ठ लोक में वास होता है।
5. भविष्यपुराण में है कि नारद जी ने महाराज युधिष्ठिर से कहा कि फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन सबको अभयदान देना चाहिये, जिससे सम्पूर्ण प्रजा उल्लासपूर्वक हँसे। बालक गाँव के बाहर लकड़ी कंडे लाकर ढेर लगाये। होलिका का पूर्ण सामग्री सहित विधिवत पूजन करें। होलिका दहन करें। ऐसा करने से अनिष्ट दूर होते है।

होली सामाजिक, धार्मिक लोगों को जोड़ने का सामाजिक सद्भाव का और रंगों का त्यौहार हैं। इसे बच्चों से बुर्जुग तक बिना भेदभाव के उत्साह से मनाया जाता है।

होली आनन्द मनाने का उत्सव है। इसमें उत्साह-उमंग है, पर कुछ बुराईयाँ भी आ गई है। लोग अबीर-गुलाल के स्थान पर कीचड़-गोबर-मिट्टी इत्यादि फेंकते हैं। नशा करते है, जिससे मित्रता की जगह शत्रुता पनपती है। इसका त्याग करना ही होली है।

ये एकता, मित्रता, मिलन, भाईचारे का पर्व है। यही इसका उद्देश्य और संदेश हैं। ▪

पं. सलिल मालवीय

ऊँच-नीच, जात-पात के आधार पर सोचना पाप

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार

हिन्दुओं के धार्मिक सिद्धान्त तथा उनके सामाजिक व्यवहार के कारण जो खाई निर्मित हुई है उसकी व्यथा जितनी बाबा साहेब अंबेडकर के विचार में प्रकट हुई है उतनी ही डॉ. हेडगेवार के विचारों में भी अभिव्यक्त हुई है।

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने 1925 कि विजयादशमी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पहली शाखा की शुरूआत नागपुर में की। आज संघ दुनिया का सबसे बड़ा सामाजिक सांस्कृतिक संगठन है। संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के विचार के प्रमुख अंश संकेत रेखा पुस्तक से हम प्रस्तुत कर रहे हैं ।

इस सम्बन्ध में डॉक्टर जी कहा करते थे, 'अपना कार्य सम्पूर्ण हिन्दू समाज का संगठन करना है। हिन्दू समाज के किसी भी अंग की उपेक्षा करने से यह कार्य सिद्ध नहीं होगा। हिन्दू मात्र से हमारा व्यवहार स्नेहपूर्ण होना चाहिए। जातिगत ऊंच-नीच का भाव हमारे मन को कभी भी स्पर्श न करें। ऊंच-नीच जाति-पांत के आधार पर सोचना भी पाप है। संघ के स्वयंसेवकों के मन में ऐसे घृणित और समाज विघातक विचारों को कभी स्थान नहीं मिलना चाहिए। हिन्दुस्तान के प्रति भक्ति रखने वाला प्रत्येक हिन्दू मेरा भाई है- यही दृढ़ भावना प्रत्येक स्वयंसेवक की होनी चाहिए।'

डॉ. हेडगेवार कहा करते थे 'तत्वज्ञान आचरण में लाने से हुआ करता है, केवल शास्त्रार्थ और वाग्विलास के लिए नहीं। प्रथम तत्व का अविष्कार होता है और फिर उसके अनुसार व्यवहार होता है। जो तत्वज्ञान आचरण में नहीं आता, वह केवल 'तोता रटन्त' अर्थात् निरर्थक है। शब्दाडम्बर मात्र है। ऐसे तत्वज्ञान को बांझ कहा जाना चाहिए। सामाजिक जीवन को आकार देने का सामर्थ्य यदि किसी तत्वज्ञान में न हो तो वह व्यर्थ है। व्यक्ति के जीवन को तत्व ज्ञान के सांचे में ही ढाला जाता है। तत्वाधिष्ठित जीवन-क्रम ही ध्येय पथ की कठिन चढ़ाई चढ़ने का सामर्थ्य प्रदान कर ध्येय प्राप्ति में सहायक बनता है। तत्वनिष्ठ जीवन में चढ़ाव-उतार आना स्वाभाविक है, लेकिन तत्व चिरन्तन रहता है।'

इस सन्दर्भ में डॉ. हेडगेवार अंग्रेजी की एक कहावत कहा करते थे- 'गॉड हेल्प्स दोज हू हेल्प देमसेल्व्स'। (जो स्वयं की सहायता करते है ईश्वर उसी की सहायता करता है।) किन्तु मैं यह नहीं समझता कि भगवान को हमारी सहायता क्यों करनी चाहिए? उसे हमारे ऊपर दया क्यों आनी चाहिए? क्या हम स्वयं अपना पुरुषार्थ प्रकट कर रहे हैं? यदि नहीं, तो भगवान को हमारी सहायता के लिए दौड़कर क्यों आना चाहिए? गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है, 'परित्राणाय साधुना' अर्थात् सज्जनों की रक्षा करने के लिए वे अवतार लिया करते है। लेकिन वे साधु, वे सज्जन कौन हैं? उनकी पहचान क्या है? जिन्हें समाज, राष्ट्र और धर्म-संस्कृति की दुर्दशा की चिंता नहीं, जो अपने स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता। समाज के प्रति इस प्रकार के कृतघ्न लोगों के संहार के लिए ही तो भगवान अवतार धारण करते हैं। हिन्दू समाज में ये सभी दुर्गुण आज चरम सीमा पर पहुंच गए हैं। क्या ऐसे लोगों को दुष्ट नहीं कहा जायेगा? साधु अर्थात सज्जन तो वे ही लोग हैं जो धर्म, राष्ट्र और समाज के कल्याण के लिए अखण्ड कार्यरत रहते हैं। क्या इस प्रकार के लोग आज हिन्दू समाज में पर्याप्त मात्रा में है? यदि इस हिन्दू समाज के आधे लोग साधुता के गुणों से युक्त होते तो इस महान समाज पर आक्रमण करने का दुस्साहस ही किसी को न होता और ऐसी स्थिति में भगवान भी धर्म की रक्षा करने के लिए हमारे मध्य अवश्य ही आए होते। आज समाज की जो अवस्था है उसमें हम भगवान की सहायता की अपेक्षा नहीं कर सकते, और यदि कहीं भगवान का आविर्भाव हुआ भी तो वह हमारी रक्षा के लिए न होकर हमारा संहार करने के लिए ही होगा। क्योंकि भगवान ने दुष्टों का संहार करने की घोषणा की हुई है। जब तक व्यक्तिगत स्वार्थ, सामाजिक भावना का अभाव एवं समाज हित की उपेक्षा का भाव हम में रहेगा, और जब तक हम यथार्थ में सज्जन नहीं होंगे, तब तक भगवान हमें दुष्ट समझकर हमारे विनाश में ही सहायता करेगा।

डॉ. हेडगेवार के उपर्युक्त उद्गार से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे यथास्थितिवादी नहीं थे। हिन्दू समाज की प्रचलित दुष्ट रूढ़ियों और उनमें से निर्मित सामाजिक दोषों पर वे करारी चोट करते रहे। लेकिन यह कार्य उन्होंने समाज को अपना समझकर ही किया। समाज कल्याण के लिए उनकी यह बैचेनी हिन्दू एकात्मता के साक्षात्कार में ही निर्मित हुई थी। हिन्दुओं के धार्मिक सिद्धान्त तथा उनके सामाजिक व्यवहार के कारण जो खाई निर्मित हुई है उसकी व्यथा जितनी बाबा साहेब अम्बेडकर के विचार में प्रकट हुई है उतनी ही डॉ. हेडगेवार के विचारों में भी अभिव्यक्त हुई है। इस पार्श्वभूमि का ज्ञान न होने से अपने सिवाय अन्य सभी लोग प्रतिगामी हैं इस स्वकेन्द्रित अहंकार के कारण तथाकथित प्रगतिवादी लोगों ने संघ की प्रतिमा मलिन करने का प्रयास किया। लेकिन संघ के स्थापना काल से ही उसकी भूमिका यथार्थ में ऐसी ही रही है। ▪

जब दंगाई मुस्लिमों के हमले में शहीद हुए विद्यार्थी

विद्यार्थीजी को पता चला कि कानपुर के रामनारायण बाजार में दंगा भड़क उठा है। वे वहां गए और दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर शांत किया, तब तक फिर उन्हें एक खबर मिली कि बंगाली मोहल्ले में कई लोगों की हत्या कर दी गई है। विद्यार्थी जी वहां भी पहुंचे। हिंदुओं ने जब उनको देखा तब वे सहम गए, लेकिन उन्होंने हिंदुओं को प्यार का पाठ पढ़ाया। वे उन्हें वहां ले गए, जहां मुस्लिम संप्रदाय के लोग भयभीत होकर छुपे थे। उनमें कुछ बच्चे भी थे। विद्यार्थी जी ने हिंदुओं की सहायता से मुसलमानों को उनके ठिकानो तक पहुंचाया। उन लोगों ने विद्यार्थीजी को तहे दिल से दुआ दी और अपनी गुजर-बसर करने लगे।

थोड़ी देर में दो मुस्लिम स्वयंसेवक भागते हुए विद्यार्थी जी के पास आए। दोनों ने बताया कि 100 मुस्लिम परिवार मस्जिद में है। वहां उनकी जान को खतरा है। उन पर किसी भी समय हमला हो सकता है। विद्यार्थीजी अपने कुछ साथियों के साथ वहां भी गए। उन्होंने अपने मीठे वचनों से वहां का माहौल शांत किया और मुस्लिम परिवारों को सुरक्षित उनके घर तक पहुंचाया।

भाग-दौड़ में उनके और रामरतन गुप्तजी के कपड़ों पर खून के छीटें पड़ गए थे। हाथ खून से लथपथ था, क्योंकि उन्होंने अपने हाथों से कई लाशों को उठाया था। किसी तरह से वे गुप्तजी के घर पहुंचे। स्नान करने के बाद थोड़ा खाना खाया। उसके बाद फिर वहां से निकलने का फैसला किया। विद्यार्थी जी ने अपने कपड़े बदल लिए थे। उनके आग्रह पर गुप्तजी पहले स्नान करने गए थे। तब तक विद्यार्थी जी ने वहां आराम फरमाया, जब तक वे आ नहीं गए। थोड़ा समय बीता। उसके बाद वे दोनों मुस्लिम कार्यकर्त्ता फिर आ गए। दोनों ने बताया-'चावल मंडी में कुछ मुसलमानों की जान को खतरा है, आप जल्दी चलिए।'

उनकी बात सुनकर विद्यार्थी जी फटाफट तैयार हो गए। उन्होंने बाहर से गुप्तजी को आवाज लगाई-'दोनों स्वयंसेवक यहां फिर पधारे हैं, मैं उनके साथ जा रहा हूँ। अभी दस मिनट में लौटकर आया।' भीतर से गुप्तजी ने आवाज लगाई-'आप रूकिए जरा। मैं अभी आया।'

'बस, मैं अभी आ रहा हूँ।'

इतना कहकर विद्यार्थी जी दोनों स्वयंसेवकों के साथ दरवाजे से बाहर चले गए।

कुछ दूर जाने के बाद उन्हें खबर लगी कि दो सौ से ज्यादा लोग चौबे गोला मोहल्ले में मृत्यु का दरवाजा खटखटा रहे हैं। विद्यार्थीजी बंगाली मोहल्ले से सीधे वहीं चले गए। वहां के आसपास के इलाके मुस्लिम लोगों से भरे थे। ऐसी जगह पर किसी हिंदू के जाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। हिंदुओं को देखते ही मुसलमान अपने चाकू चमचमाने लगते थे और उन्हें मारकर गिरा देते थे। ऐसी खतरनाक जगह पर विद्यार्थीजी निर्भीक होकर गए।

रास्ता बजाजे चौक से होकर निकलता था। यह हिंदू इलाका था। वे इस इलाके से होकर मुसलमानों के इलाके में पहुंचना चाहते थे। जब वे चौक बजाजे पहुंचे, तब हिंदुओं ने उन्हें घेर लिया।

'आप वहां मत जाइए विद्यार्थीजी, आपकी जान को खतरा है।' हिंदुओं ने उनसे निवेदन करते हुए कहा।

'भाइयो!' विद्यार्थी जी ने जवाब दिया-'वहां दो सौ हिंदू भाई-बहन और बच्चों की जान का संकट है। रात होते ही उन पर छुरिया चल जाएंगी, मैं उन्हें बचाने जा रहा हूं।'

'लड़ाई के मैदान से भागना बुजदिलों का काम है और बुजदिल लोग मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। मैंने जीवन में हर मुश्किल का सीना तानकर सामना किया हैं। कभी पीठ नहीं दिखाई। अपनी जान बचाने के लिए मैं यहां से भागूंगा नहीं, अगर मेरी जान लेने से उन लोगों के खून की प्यास बुझती है, तो यह मुझे गर्व से मंजूर है।' विद्यार्थीजी ने शांत स्वर में कहा।

तब तक वे मुसलमान उनके करीब आ गए। उनमें से एक ने जोर से चिल्लाते हुए कहा-'यही है गणेश शंकर विद्यार्थी! यही है।'

इतने में एक दूसरा भी चिल्लाया-'जान से मार दो इसे, बचने न पाए।' उसके कहने पर दो पठानों ने विद्यार्थीजी के साथी स्वयंसेवक पर हमला किया। उसने पांच मिनट के अंदर उसी जगह पर दम तोड़ दिया। दूसरे स्वयंसेवक को एक मुसलमान ने छुरा घोंप दिया। वह लहूलुहान

एक व्यक्ति ने बिना उनकी बात सुने उनकी पीठ में छुरा घोंप दिया, दूसरे ने उन पर कांता दे मारा। वे जमीन पर गिर पड़े। फिर भी कुछ अन्य मुस्लिम उन्हें लाठियों से पीटते रहे, बर्छी से प्रहार करते रहे। विद्यार्थीजी ने लहूलुहान होकर जमीन पर इधर-उधर करवट बदली। इस तरह एक वीर सपूत भारत मां की गोद में हमेशा के लिए सो गया।

अवस्था में जमीन पर गिर पड़ा। कुछ देर में वह फिर उठा, तभी एक मुस्लिम गणेशजी पर वार करने के लिए दौड़ा। गणेशजी ने उसके सामने अपना सिर झुकाते हुए कहा-'अगर मेरे खून से आप को शांति मिलती है तो.....।' एक व्यक्ति ने बिना उनकी बात सुने उनकी पीठ में छुरा घोंप दिया, दूसरे ने उन पर कांता दे मारा। वे जमीन पर गिर पड़े। फिर भी कुछ अन्य मुस्लिम उन्हें लाठियों से पीटते रहे, बर्छों से प्रहार करते रहे। विद्यार्थीजी ने लहूलुहान होकर जमीन पर इधर-उधर करवट बदली। इस तरह एक वीर सपूत भारत मां की गोद में हमेशा के लिए सो गया। ▪

भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव का बलिदान

अपने जीवन की अपेक्षा अपनी मातृभूमि को अधिक स्नेह करने वाले सरदार भगत सिंह अपनी भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए जनमानस को जाग्रत करने के लिए जानबूझकर मौत के मुंह में कूद गए और सदा-सदा के लिए अमर हो गए। उनके इस बलिदान की कीमत नहीं आंकी जा सकती।

भगत सिंह प्राणनाथ जी द्वारा दी गई लेनिन की जीवनी पढ़ने में व्यस्त हो गए। अभी वे कुछ ही पृष्ठ पढ़ पाए थे उनकी काल-कोठरी का दरवाजा खुला-जेल के अधिकारी अपनी चमकदार यूनीफार्म पहने खड़े थे।'सरदारजी, तैयार हो जाइए। फांसी लगाने का हुक्म आ गया है।' भगत सिंह के दाहिने हाथ में पुस्तक थी। उन्होंने पुस्तक पर से आंख उठाए बिना जवाब दिया- 'ठहरो, एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है।' आवाज में इतनी कड़क कि जेल अधिकारी वहीं के वहीं खड़े हो गए। भगत सिंह पढ़ने में खो गए। कुछ पैराग्राफ पढ़ने के बाद उन्होंने अचानक पुस्तक को छत की ओर उछाला और सीधे खड़े हो गए-'चलिए।'

भगत सिंह अपनी कोठरी से निकले। बाहर निकलते ही उन्होंने पीछे मुड़कर देखा- जिस कोठरी में वे लम्बे समय तक रहे थे, उसे जी भरकर देखा । उसी समय राजगुरू और सुखदेव भी अपनी-अपनी कोठरियों से बाहर आ गए। चेहरों पर कण्टोप पहनने और हाथों में हथकड़ियां लगवाने से वे साफ इंकार कर चुके थे। बाएं सुखदेव, बीच में भगत सिंह और दाएं राजगुरू। भगत सिंह ने अपनी दाहिनी बांह राजगुरू की बाई भुजा में डाल ली और बाईं भुजा सुखदेव की दाहिनी भुजा में।

अचानक भगत सिंह गाने लगे-
दिल से निकलेगी न मरकर भी
वतन की उलफत,
मेरी मिट्टी से भी खूशबू-ए-वतन आएगी।

अगले ही क्षण राजगुरू और सुखदेव भी उनके साथ स्वर में स्वर मिलाकर गाने लगे। आगे-आगे वॉर्डन चल रहे थे, दाएं-बांए जेल अधिकारी, पीछे भी कुछ वार्डन चल रहे थे और बीच में शान से गाते अपनी मस्ती में डूबे तीनों क्रांतिकारी जेल के गेट के बाहर लोगों का हुजूम था। फोटोग्राफर, रिपोर्टर, आम जनता और भगत सिंह के माता-पिता तथा अन्य परिवार जन। भगत सिंह के माता-पिता के अलावा जब किसी को अंदर जाने की अनुमति नहीं दी गई तो उन दोनों ने भी पुत्र से न मिलने का फैसला कर लिया। देखते-देखते भीड़ बेकाबू होने लगी। लोग नारे लगाने लगे। जेल के भीतर से कैदी भी नारे लगा रहे थे। भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह का माथा ठनका। भगत सिंह की फांसी का विरोध करने के लिए यह जो सैलाब उमड़ रहा है, पुलिस उसे और अधिक बर्दाश्त नहीं करेगी। कुछ ही देर में गोली चल जाएगी और एक भगत सिंह को बचाने आए पता नहीं कितने भगत सिंह पुलिस की गोलियों से शहीद हो जाएंगे।उन्होंने भगत सिंह की मां से कहा- 'अब यहां से चलो, नहीं तो अनर्थ हो जाएगा।' भगत सिंह की मां चलने को तैयार नहीं हुई। उनका बेटा फांसी की ओर जा रहा है और वे जेल से दूर चली जाएं, भला यह कैसे हो सकता था। 'उठो, जल्दी करो.... एक-एक पल कीमती है।' भगत सिंह के पिता ने फिर कहा। वे उठ खड़ी हुई। भगत सिंह के पिता सब परिवारजनों को लेकर अपने बेटे से दूर, जेल से दूर चल पड़े। उन्होंने दिल पर पत्थर रख लिया था। भीड़ को जेल के फाटक से दूर ले जाने का और कोई उपाय न था। सारी भीड़ इन लोगों के पीछे चल रही। लोग नारे लगा रहे थे। सरदार किशन सिंह दरवाजे पर पहुंचकर रूक

गए। जुलूस के रूप में आया जन-समुदाय रूक गया। सरदार किशन सिंह भीड़ को बांधे रखने के उद्देश्य से भाषण देने लगे। उधर वार्डनों व जेल अधिकारियों के बीच भगत सिंह अपने दोनों साथियों के साथ क्रांति गीत गाते फांसी स्थल की ओर बढ़ रहे थे। वार्डन ने आगे बढ़कर फांसी घर का काला दरवाजा खोल दिया। अंदर लाहौर का अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर खड़ा था। तीनों अभियुक्तों को खुले देखकर वह घबरा गया।

भगत सिंह ने उसकी ओर देखा- उनकी आंखों में प्रसन्नता और होठों पर मित्रतापूर्ण मुस्कान देखकर डिप्टी कमिश्नर की जान में जान आई। तभी गंभीर वाणी में भगत सिंह बोले-'वैल, मिस्टर मजिस्ट्रेट, यू आर फार्चूनेट टू बी एबल टुडे टू सी हाऊ इण्डियन रिवोल्यूशनरीज कैन एम्ब्रैस डैथ विद प्लेजर फॉर द सेक ऑफ देयर सुप्रिम आइडियल।' (मजिस्ट्रेट महोदय, आप भाग्यशाली हैं कि आज आप अपनी आंखों से यह देखने जा रहे हैं कि भारत के क्रांतिकारी किस प्रकार प्रसन्नता पूर्वक अपने सर्वोच्च आदर्शों के लिए मृत्यु का आलिंगन करते हैं।) डिप्टी कमिश्नर शर्म से पानी-पानी हो गया। भगत सिंह अपने साथियों के साथ फांसी मंच की सीढ़ियां चढ़ने लगे। तीनों मंच पर पहुंच गए और तनकर खड़े हो गए। आंखों के ठीक सामने फांसी के फंदे झूल रहे थे। बीच में भगत सिंह, बांए सुखदेव और दाएं राजगुरू। तीनों ने एक साथ अपने सामने वाले फांसी के फंदे को पकड़ा, चूमा और फिर अपने हाथों से अपने गले में डाल लिया। पास खड़े जल्लाद से भगत सिंह बोले- 'कृपा कर इन फंदों को अब आप ठीक कर लें।' भगत सिंह के मुंह से निकले शब्द सुनकर क्रूर हृदय जल्लाद कांप गया। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो पा रहा था।

जल्लाद जब आगे बढ़कर उनके फंदे ठीक करने लगा तो उसके हाथ कांप रहे थे, उसकी आंखों में आंसू थे। फंदे ठीक करने के बाद चरखी के पास पहुंचा और उसने झट चरखी घुमा दी। तख्त गिरा और तीनों महान क्रांतिकारी भारत माँ को समर्पित हो गए। इस समय शाम के 7 बजकर 33 मिनट हुए थे। उधर जोश में होश खो बैठने को उतारू भीड़ को जेल से दूरी बनाए रखने के उद्देश्य से सरदार किशन सिंह पता नहीं किस प्रकार धैर्य धारण कर बोलते जा रहे थे।

जेल में दूध पहुंचाने वाला ग्वाला भागता हुआ आया और उसने खबर दी- 'फांसी दे दी गई।' सरदार किशन सिंह कड़कती आवाज में बोले- 'खबर मिली है कि भगत सिंह को फांसी दे दी गई हैं। मैं अब लाश लेने जा रहा हूँ। आप में से कोई यहां से हिलेगा नहीं। ऐसा न हो कि हम एक भगत सिंह को लेने जाएं और सैकड़ों भगत सिंह देकर आएं। फिर भी कुछ लोग किशन सिंह के साथ चल पड़े। जेल के फाटक के पास सन्नाटा था। अंदर से अफसरों के कहकहों की आवाजें आ रही थी। किशन सिंह ने फाटक खटखटाया, बार-बार उसे खूब पीटा, परंतु फाटक नहीं खुला। तभी किसी ने खबर दी है कि भगत सिंह व उनके साथियों की लाशों को जेल से बाहर ले जाया गया हैं। ब्रिटिश हुकूमत अपनी घिनौनी हरकत पर उतर आई थी। फांसी के बाद भगत सिंह व उनके साथियों की लाशों को काटकर टुकड़े-टुकड़े किया गया और उन्हें बोरियों में भरकर जेल के पिछले दरवाजे से ट्रक द्वारा फिरोजपुर के पास सतलुज नदी के किनारे पहुंचाया गया। वहां एक सिख ग्रंथी और एक पंडित की मौजूदगी में अंतिम क्रिया करने की योजना बनाई गई थी। ट्रक से लाशों के बोरे और मिट्टी के तेल के डिब्बे उतारे गए। मिट्टी के तेल को बोरों पर उड़ेला गया और उनमें बड़े वहशी ढंग से आग लगा दी गई। आस-पास के गांव वालों तक उड़ती-उड़ती जब यह खबर पहुंची तो वे मिलकर दाह-स्थल की ओर बढ़े।

जब फौजियों ने हाथों में मशाल लिए गांव वालो को अपनी ओर आते देखा तो उन्होंने जल्दी-जल्दी अधजली लाशों के टुकड़ो को सतलुज के पानी में फेंक दिया और ट्रक में बैठकर भाग गए। गांव वालों की भीड़ ने सतलुज के पानी में से ढूंढ-ढूंढ लाशों के अधजले टुकड़े निकाले और उन्हें विधिवत दाह-संस्कार के लिए एकत्रित कर लिया। अपने जीवन की अपेक्षा अपनी मातृभूमि को अधिक स्नेह करने वाले सरदार भगत सिंह अपनी भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए जनमानस को जाग्रत करने के लिए जानबूझकर मौत के मुंह में कूद गए और सदा-सदा के लिए अमर हो गए। उनके इस बलिदान की कीमत नहीं आंकी जा सकती।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।▪

घोषणा

फार्म 4 (नियम 8 देखिए)

1.	**प्रकाशन का स्थान**	:	**चरैवेति** पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल 462016
2.	**प्रकाशन अवधि**	:	मासिक
3.	**मुद्रक का नाम**	:	एम.पी. प्रिन्टर्स, नोएडा
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	भारतीय
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	नोएडा (उ.प्र.)
4.	**प्रकाशक का नाम**	:	संजय गोविन्द खोचे
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	भारतीय
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	पं. दीनदयाल परिसर,
	पता	:	ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल 462016
5.	**संपादक का नाम**	:	संजय गोविन्द खोचे (संपादक)
	(क्या भारतीय नागरिक है)		भारतीय
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	पं. दीनदयाल परिसर,
	पता	:	ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल 462016
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचारपत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन, म. प्र. पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल 462016

मैं संजय गोविन्द खोचे एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01 मार्च 2023

हस्ताक्षर
संजय गोविन्द खोचे
प्रकाशक

भारत रत्न नानाजी देशमुख

नानाजी ने जीवन के 34 साल रचनात्मक कार्य में लगाया। उन्होंने चित्रकूट के पिछड़े इलाकों के समग्र विकास में अपना जीवन खपाया। नानाजी ने वहां दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की।

भारत रत्न नानाजी देशमुख का पूरा जीवन राष्ट्रोत्थान के लिए समर्पित रहा। बाल्यकाल से ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आ गये थे। इनका जन्म तो महाराष्ट्र के हिंगोली जिले के कड़ोली में 11 अक्तूबर 1916 को हुआ था, लेकिन इनकी कर्म भूमि राजस्थान और उत्तर प्रदेश रही। जब वे राजस्थान के पिलानी स्थित बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजी एंड सांइस में स्नातक करने गए, तो वहीं पढ़ाई के साथ-साथ राजस्थान में संघ कार्य में लग गए। लेकिन नानाजी अपना जीवन संघ के माध्यम से राष्ट्र को समर्पित करना चाहते थे। 24 वर्ष की आयु में अपनी कॉलेज की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर आगरा चले गए। आगरा में कुछ दिन रहने के बाद उन्हें भाऊराव देवरस के पास कानपुर भेज दिया गया। भाऊराव ने उन्हें संघ कार्य शुरू करने के लिए गोरखपुर भेज दिया।

15 अगस्त 1940 को मात्र 14 रुपए के साथ गोरखपुर के लिए रवाना हो गए। गोरखपुर उनके लिए नई जगह थी। कोई परिचित नहीं था, लेकिन अपनी लगन और निष्ठा से तीन वर्ष में ही गोरखपुर शहर और शहर से बाहर लगभग 250 संघ शाखा खड़ी कर दी। शिक्षा से उनका लगाव था। इसलिए उन्होंने 1950 में गोरखपुर में देश के पहले सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना की। बाद में संघ के सह प्रांत प्रचारक का भी दायित्व मिला। 1948 से 1952 तक राष्ट्रधर्म प्रकाशन के प्रबंध संपादक की भूमिका भी बहुत सफलतापूर्वक निभाई।

देवेन्द्र स्वरूप जी ने 'राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख' नामक पुस्तक में लिखा है कि नानाजी देशमुख 'राजनीति के बहिष्कार में नहीं परिष्कार' में विश्वास रखते थे। उन्होंने अपने जीवन का तीन दशक सक्रिय राजनीति में बिताया। जब डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ बन रहा था तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने उन्हें दीनदयालजी और अन्य कार्यकर्ताओं के साथ भारतीय जनसंघ का संगठन मजबूत करने के लिए उत्तर प्रदेश भेज दिया। अटलजी की भाषण कला और नानाजी देशमुख की संगठन क्षमता उत्तर प्रदेश में जनसंघ का विस्तार करने में काफी सहायक सिद्ध हुए। फिर इनको पूर्वी भारत का संगठन प्रभारी बना दिया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश के अलावा बिहार, बंगाल, असम आदि आते थे। नानाजी आपातकाल के खिलाफ जयप्रकाश आंदोलन के मुख्य रणनीतिकारों में एक थे। नानाजी के ही निवेदन पर चार विपक्षी दलों भारतीय लोकदल, कांग्रेस (संगठन), समाजवादी पार्टी और भारतीय जनसंघ ने संयुक्त रूप से अपनी कार्य समिति दिल्ली में की और आंदोलन के समन्वय के लिए 'लोक संघर्ष समिति' बनायी। इस समिति के महामंत्री का दायित्व नानाजी देशमुख को दिया गया। नानाजी ने 17 महीने आपातकाल में जेल में व्यतीत किए। जब आपातकाल हटाया गया, तब 'जनता सरकार' बनाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। जनसंघ का जनता पार्टी के विलय में नानाजी की प्रमुख भूमिका रही।

बलरामपुर से नानाजी लोकसभा का चुनाव जीते थे, मोरारजी सरकार में इन्हें मंत्री पद दिया जा रहा था, लेकिन इन्होंने स्वीकार नहीं किया। वे संगठन कार्य में ही लगे रहे। राजनीति के अलावा उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबी ग्राम निर्माण के क्षेत्र में भी कार्य किया। उन्होंने विनोबा भावे के भूदान आंदोलन में भी भाग लिया। 60 साल की उम्र में वे संन्यास लेकर रचनात्मक कार्य में लग गए।

नानाजी ने जीवन के 34 साल रचनात्मक कार्य में लगाया। उन्होंने चित्रकूट के पिछड़े इलाकों के समग्र विकास में अपना जीवन खपाया। नानाजी ने वहां दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की। देश में प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय की स्थापना चित्रकूट में ही नानाजी देशमुख द्वारा किया गया और इसमे पहले कुलपति की भूमिका स्वयं निभायी। उन्होंने चित्रकूट में बहुत सारे प्रकल्पों जैसे आरोग्यधाम उद्यमिता विद्यापीठ, गौशाला, वनवासी छात्रवास, गुरुकुल, सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय इत्यादि की स्थापना की।

इस प्रकार राजनीति से संन्यास के बाद उन्होंने अपना शेष जीवन ग्रामीण क्षेत्र के विकास में बिताया। इन्होंने 500 गांवों को विकसित और सशक्त बनाया। समाज और देश के स्वार्थ रहित सेवा के चलते इन्हें राष्ट्रऋषि कहा गया। 1999 में नानाजी को पद्मविभूषण और मरणोपरान्त 2019 में भारत सरकार ने भारत रत्न से सम्मानित किया। 94 वर्ष की आयु में 27 फरवरी 2010 को चित्रकूट में इनका स्वर्गवास हो गया। ▪

आत्मिक सुख की आवश्यकता

जब हम आगे देखते हैं, मानसिक सुख का विचार करते हैं तो पता चलता है कि मानसिक सुख भी केवल हमें दूसरों से ही प्राप्त होता है। दूसरों को सुखी देखकर हमें कुछ सुख का अनुभव होता है। यदि हम दूसरों को दु:खी देखते हैं तो हमें दु:ख का अनुभव होता है। हंसते हुए देखकर हमें भी हंसी आ जाती है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

व्यक्ति को केवल शारीरिक सुख ही नहीं, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक सुख की भी लालसा रहती है और इस प्रकार सभी सुखों के साथ-साथ समन्वयात्मक ढंग से वह यदि प्राप्त कर सका, तभी वह अपने जीवन में वास्तविक सुख का अनुभव कर सकता है, अन्यथा एक प्रकार का सुख उसे यदि मिला और बाकी के सुखों से वह वंचित रहा तो पहले प्रकार का सुख भी उसको दुखकारक प्रतीत होता है। उस सुख का भी मूल्य समाप्त हो जाता है। अतएव हमारे सुख, हमारे जीवन के विविध पहलुओं को समान रूप से बढ़ाने वाले, समान रूप से आनंद देने वाले होने चाहिए।

कुछ व्यक्तियों की अपनी भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियां हैं, उनके भिन्न-भिन्न अंग हैं, वैसे यदि देखें तो वह किसी भी प्रकार का सुख प्राप्त नहीं कर सकता। सुख को प्राप्त करने के लिए दूसरों पर भी निर्भर रहना पड़ता है। हम बिल्कुल भौतिक दृष्टि से ही देखें- भोजन का प्रश्न आता है। अन्य भौतिक आवश्यकताएं हैं। तो पता चलता है कि अकेला व्यक्ति सभी भौतिक आवश्यकताएं पूरी नहीं कर सकता। स्वयं अन्न पैदा कर ले। स्वयं उसका आटा बनाए, स्वयं उसमें से खाना तैयार कर ले, ईंधन भी स्वयं ही इकट्ठा कर ले, उसके लिए जो बरतन आदि चाहिए, वह भी जुटा ले, तो यह वास्तविक स्थिति नहीं है। रॉबिन्सन क्रूसो का जो कुछ भी स्थान हम सबने पढ़ा होगा, उसने अपने ही प्रयत्न करके सब चीजें तैयार की। वह एक काल्पनिक जगत की बात है और वास्तव में उस व्यक्ति के प्रयत्न हैं कि जिस व्यक्ति ने समाज में अनेक वर्षों तक जीवन व्यतीत करके बहुत सी चीजें सीख ली थीं। अन्न कैसे उगाया जाता है, यह उसे मालूम था। मैदान कैसे बनाया जाता है, यह भी उसने देखा था। नाव कैसे बनाई जाती है, नाव कैसे तैरती है, यह वह अच्छी तरह से जानता था। सबका सब स्वयं उसने अपनी बुद्धि लगाकर अविष्कार किया। ऐसी तो कोई बात नहीं कि वह समाज से दूर हट गया होगा। उसने सब कुछ विचार स्वयं ही कर लिया होगा, ऐसा नहीं है।

वास्तविक जीवन में तो हम यही देखते हैं कि व्यक्ति दूसरों के ऊपर बराबर निर्भर रहता है। हम दूसरों पर निर्भर रहते हैं और जो कुछ दिखाई देता है वह इतना ही है कि एक व्यक्ति दूसरे के ऊपर निर्भर है। किसान जुलाहे के ऊपर निर्भर रहता है। वह उसे खाने के लिए अन्न देता है। डॉक्टर और शिक्षक एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। डॉक्टर के बच्चे को शिक्षक पढ़ाता है। शिक्षक के बच्चे को डॉक्टर बीमार पड़ने पर दवाई देता है। हम चारों ओर देखेंगे तो पता चलेगा कि हम सभी एक-दूसरे के ऊपर निर्भर हैं। एक-दूसरे के द्वारा हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। बिना एक-दूसरे के कोई एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता। कोई ऐसा सोचे कि मैं समाज से बिल्कुल अलग हटकर अपना ही विचार करके चलूंगा तो संभवतः वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकेगा। उसे संपूर्ण का विचार करना ही पड़ेगा। जब विचार करेगा तो प्रत्येक चीज में ढंग से अच्छी तरह से विचार करना ही पड़ेगा और यह विचार करना आना चाहिए।

जब हम आगे देखते हैं, मानसिक सुख का विचार करते हैं तो पता चलता है कि मानसिक सुख भी केवल हमें दूसरों से ही प्राप्त होता है। दूसरों को सुखी देखकर हमें कुछ सुख का अनुभव होता है। यदि हम दूसरों को दुःखी देखते हैं तो हमें दुःख का अनुभव होता है। हंसते हुए देखकर हमें भी हंसी आ जाती है। ऐसा कोई व्यक्ति होगा, जो बहुत बेरहम होगा। उसे किसी को रोते देखकर रोना नहीं आता और दूसरे को हंसता हुआ देखकर उसे हंसी नहीं आती। जबकि बहुत बार तो लोग दूसरे को देखकर रोना शुरू कर देते हैं। दूसरे के अंदर भय का भाव देखकर अपने अंदर भी भय भाव पैदा हो जाता है। दूसरों

को पराक्रम करते हुए देखा तो लगता है, अपने को भी पराक्रम करना चाहिए। अर्थात् ये भावनाएं सभी के अंदर रहती हैं।

कई बार ऐसा होता है कि हम किसी का विचार नहीं कर सकते। यहां तक कि हमारे पास सब प्रकार के सुख रहें। हमारे पास बहुत अच्छा भोजन है। हम भोजन करने के लिए बैठे हैं। बड़ी शांति और आनंद के साथ भोजन कर रहे हैं। कोई मांगने के लिए खड़ा हो जाए तो आपको इस भोजन में फिर आनंद ही नहीं आएगा। गाड़ी में आप भोजन करने के लिए बैठे, कोई भिखारी सामने से आ जाता है। ऐसा चेहरा बनाता है। एक तो गंदे कपड़े, आप उससे दूर हटने को भी कहोगे तो वह नहीं हटता। उस समय आप बिना दिए उससे छुटकारा नहीं पा सकते और जब तक आप दया करके उसे नहीं देंगे तो आपका आनंद ही चला जाएगा। इस प्रकार दूसरे के ऊपर हमारा यह मन का सुख सब प्रकार से अवलंबित रहता है।

कोई कहे कि नहीं हम तो मनमौजी हैं, अपने मन के अंदर हम सुखी रहेंगे, लेकिन इतने से काम नहीं चलेगा। किसी-न-किसी प्रकार सुख प्राप्त करने को दूसरे का सहारा हमें लेना ही पड़ेगा। बहुधा लोग उसी प्रकार का व्यवहार अपने आप करने लगते हैं। जैसे कि एक किस्सा है। एक जुलाहा था। उस जुलाहे की एक लड़की थी। एक बार लड़की झाड़ू लगाते-लगाते कुछ सोचने लगी। जैसे कुछ लोगों को कल्पना-लोक में विचरने की आदत होती है। वह भी कल्पना में खो गई। उसकी शादी पक्की हो चुकी थी, इसलिए वह इसी के बारे में सोचने लगी कि कुछ दिन बाद मेरी शादी हो जाएगी। मैं ससुराल चली जाऊंगी। कुछ दिन बाद मेरा बच्चा होगा। उसे खिलाएंगे, पिलाएंगे, घर में आनंद छा जाएगा। उसे कहीं लेकर जाएंगे तो वहां से रुपया मिलेगा, प्रेम मिलेगा। लेकिन फिर उसके मन में विचार आया कि अचानक कोई बीमारी गांव में फैलेगी। उस बीमारी में उसका बच्चा भी बीमार हो जाएगा। उसका इलाज कराया जाएगा। उसके बाद भी वह बच्चा नहीं बचेगा। बच्चा मर जाएगा। यही सोचकर उसके मन के अंदर से रोना छूटने लगा। वह रोने लगी। जब वह रोने लगी तो उसकी मां जो बाहर पानी भरने के लिए गई थी। उस समय वह लौटकर आई। उसे रोता हुआ देखकर वह भी रोने लगी। उस लड़की का भाई आया। उसे रोता देखकर वह भी रोने लगा। पिता आया सबको रोते देखकर उसे भी रोना आ गया। पड़ोसियों ने जब रोने की आवाज़ सुनी तो वे भी वहां आ पहुंचे। उन सबको रोते देखकर पड़ोसिन औरतें भी रोने लगीं। वहां भीड़ इकट्ठी हो गई। एक व्यक्ति ऐसा आया, जिसे जिज्ञासा हुई रोने का कारण जानने की। उसने पूछा कि ये सब क्यों रो रहे हैं? क्या कोई मर गया है? लेकिन किसी को भी कारण पता नहीं था। अंत में जुलाहे से पूछा कि क्या बात हो गई है? जुलाहे ने कहा कि मेरी पत्नी और बच्चे रो रहे थे तो मैं भी रोने लगा। उसकी पत्नी ने कहा कि यह लड़की रो रही थी। मैंने सोचा कि कहीं से मृत्यु का समाचार आया होगा, इसलिए मैं भी रोने लगी। उसके लड़के ने भी यही बताया। बाद में लड़की से पूछा गया कि तू क्यों रो रही थी? तब उसने कहा कि मेरा लड़का मर गया, मैं इसलिए रो रही थी। सभी ने उससे यही पूछा कि तेरा लड़का कहां है? उसने बताया कि मैं इस तरह सब सोच रही थी। तो यह तो एक किस्सा है। लेकिन वास्तव में भी मनुष्य दूसरे को देखकर स्वयं भी रो पड़ता है। इसीलिए किसी साहित्यकार ने कहा है कि समाज दर्पण के समान है। इस दर्पण के सामने जैसा चेहरा लेकर खड़े हो जाएंगे, वैसा ही उसमें दिखाई देगा। हंसता हुआ चेहरा लेकर खड़े हो जाएंगे तो हंसता हुआ चेहरा दिखेगा। समाज भी उसी प्रकार से उसकी प्रतिक्रिया करता है। आप हंसते हुए खड़े होंगे तो समाज भी आपको हंसता हुआ दिखेगा। रोते हुए खड़े होंगे तो समाज भी आपको रोता हुआ दिखाई देगा। इस प्रकार से मन का सारा सुख समाज के ऊपर निर्भर करता है।

अकेला कोई सोचे कि मैं अकेले ही सुख प्राप्त कर लूंगा तो अकेला मनुष्य कभी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। चार लोगों के साथ मिलकर ही सुख प्राप्त करेगा। कल्पना करें कि किसी के घर में विवाह है। उस विवाह में जितने ज्यादा लोग सम्मिलित होंगे, जितने ज्यादा मित्र आएंगे, उतना ही सुख बढ़ता चला जाएगा। लेकिन किसी का ऐसा विवाह हो कि विवाह में अकेले ही ब्याह करने चले गए, कोई दूसरा आया ही नहीं। न चार स्त्रियां वहां पर गीत गाने के लिए इकट्ठा हुईं और इस तरह यदि किसी का विवाह हुआ तो कोई क्या कहेगा कि यह विवाह काहे का रहा। आनंद तो है वहां, जहां चार लोग इकट्ठा होते हैं।

इसी तरह चार सुखी लोग इकट्ठा होंगे तो समाज का सुख बढ़ जाता है। इसी तरह दुःख के विषय में भी है। किसी के यहां मृत्यु हो जाए। वह अकेला ही बैठकर रोता रहे। कोई उसके यहां दुःख बांटने न आए। तब दुःख बढ़ जाता है। यदि कोई उसके पास आकर उसके दुःख का कारण पूछे या उसके रोने के साथ थोड़ा रो दे तो उसका दुःख कम हो जाता है। मृत्यु होने पर उसकी शमशान-यात्रा में लोग हजारों की संख्या में सम्मिलित हो जाएं तो उसके घर वालों का दुःख उतना ही कम हो जाता है और यदि कहीं पर सुख का मौका है तो वहां भी हजारों लोग इकट्ठा होते हैं। थोड़ी सी परेशानी उनका इंतजाम करने में हो सकती है, लेकिन सुख तो बढ़ जाता है।

इस प्रकार दुःख बांटने से दुःख कम हो जाता है और सुख बांटने से सुख में बढ़ोत्तरी होती है। जो व्यक्ति अकेला रहता है, उसको भय लगता है। अकेलेपन का भय। इस बारे में अपने यहां एक कहावत है कि दो तो मिट्टी के भी भले। वे मिट्टी के होंगे, लेकिन कम-से-कम दो तो होंगे। इसी तरह आप किसी जंगल में जाइए तो आप अकेले जाएंगे तो आपको डर लगेगा। लेकिन आपको कोई दूसरा साथी मिल जाए तो आपको बिल्कुल भी डर नहीं लगेगा। एक तरह का धैर्य मन में बैठ जाता है कि मैं अकेला नहीं हूं। ▪

18 लाख 82 हजार 229 दीप प्रज्ज्वलन के साथ उज्जैन गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज हुआ।

पौधारोपण अभियान के दो वर्ष पूर्ण होने पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी के साथ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने पौधारोपण किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने खजुराहो में जी-20 सम्मेलन में विदेशी मेहमानों का बुन्देली परंपरा से स्वागत किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की पुण्य-तिथि पर पुष्पांजली अर्पित की।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने वीर सावरकर जी की पुण्य-तिथि पर पुष्पांजली अर्पित की।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने पं. दीनदयालजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने बागेश्वर धाम में बालाजी सरकार के दर्शन किए।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने जी-20 बैठक में प्रतिनिधियों को श्रीमद्भागवत गीता भेंट की।